RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107

प्रबंध संपादक
मुकेश कुमार सिंह, 9534207188

समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053

राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

सहायक संपादक
प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम

संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
रंजीत कुमार 8800689555

कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433

विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह

मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार

जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
सहरसा : आशीष कुमार झा, 9430633262
सारण प्रमंडल : सचिन पर्वत, 9430069987
समस्तीपुर : मृत्युंजय कुमार ठाकुर, 8406039222
राजेश कुमार, 8539007850
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866
दरभंगा : जाहिद अनवर : 8541849415
बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 9771654511
दिल्ली : नवल वत्स
ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318

प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
समाजसेवी

चर्चित बिहार

वर्ष : 6, अंक : 10, जून 2019, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

10 दरक रहा है महागठबंधन का किला, राजद में भी बड़ी फुट की आशंका

हिंदू-मुस्लिम एकता 25

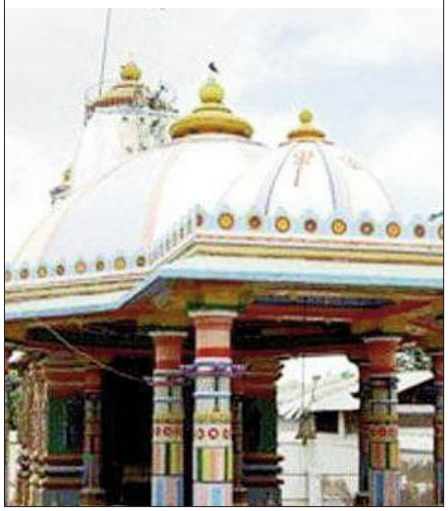

लोस चुनाव में जीत के ... 16

प्रथम महिला सांसद ... 26

बिहार की बेटी का कमाल... 27

जीत की प्रचंडता में कहीं गुम न हो जाए विपक्ष

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एकतरफा जीत ने विपक्ष को गहरा आघात दिया है. दुर्बल विपक्ष के सामने अपना वजूद ही नहीं देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को बचाने की भी सघन चुनौती है. वह आखिर किस बूते खुद को बदलेगा? सभी विपक्षी दलों को नई संसद में सत्ताधारी एनडीए गठबंधन से करीब आधी सीटें ही मिल पाई हैं। कांग्रेस की 52 सीटें हैं और वाम की पांच। पुराने क्षेत्रीय दलों में डीएमके ही अपना असर बचा पाई। नए में जगन रेड्डी की वाईएसआर कांग्रेस उभर कर आई है। बीजू जनता दल को छोड़ आरजेडी, सपा, बसपा, तृणमूल, एनसीपी आदि पुराने क्षेत्रीय दल ढह गए। एक ओर अधिकांश क्षेत्रीय ताकतों का दमखम कम हुआ तो दूसरी ओर नई क्षेत्रीय ताकतों के उभार ने यह संकेत भी दिया कि भारत में अब भी क्षेत्रीय राजनीति की स्पेस कम नहीं हुई है। ये बात अलग है कि केंद्र की सत्ता बनाने या बिगाड़ने में उनकी भूमिका पहले से कम हुई है। ज्यादातर पार्टियां पारिवारिक दायरे या उत्तराधिकार या एक व्यक्ति की छत्रछाया में चल रही हैं। 2019 के चुनावों में बेशक कई राज्यों में क्षेत्रीय दल बीजेपी और नरेंद्र मोदी के सामने टिक नहीं पाए लेकिन इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि बीजेपी को हिंदी पट्टी के अधिकतर राज्य, बंगाल और कर्नाटक छोड़ दें तो कुछ वैसी स्थितियों में भी लाभ हुआ है, जहां उसने क्षेत्रीय दलों से गठबंधन किए हैं जैसे बिहार और महाराष्ट्र। असल में इन चुनावों में ये तो और अधिक साफ हुआ है कि परिवारवाद के खोल से बाहर आए बगैर राजनीतिक दल बने नहीं रह पाएंगें। जयललिता के निधन के बाद एआईएडीएमके की स्थिति देखी जा सकती है। टीडीपी नेता चंद्रबाबू नायडु भी परिवार के मोह से नहीं निकल पाए। जेल की सजा काट रहे आरजेडी संस्थापक लालूप्रसाद यादव जैसे प्रखर नेता के बिना पार्टी में आज जो सन्नाटा पसरा हुआ है, वह दरअसल परिणति की तरह है- काश लालू भी इसे समझते और पार्टी की कमान यादव परिवार के बाहर किसी नेता को सौंप पाते। या यूपी में सपा जिस स्थिति से गुजर रही है, वो मुलायम सिंह यादव और उनके बेटे अखिलेश और अब तक सांसद बनते आ रहे उनके परिवार के अन्य लोगों के लिए इतनी स्तब्धकारी न होती। बसपा और तृणमूल जैसे दलों की सेकंड लाइन कहां हैं, कोई नहीं जानता। नरेंद्र मोदी ने इन दलों की इस कमजोर नस पर जोर से हाथ रखा है। इस मामले में कांग्रेस जैसा राष्ट्रीय दल भी नहीं बच पाया जिस पर गांधी परिवार की मिल्कियत होने का आरोप ठप्पे की तरह लगा है। हां, वामदल जरूर ऐसे आरोपों की आंधी से बचकर खड़े रह सकते थे लेकिन शायद वे यही क्या किसी भी तरह की आंधी से लड़ने की तैयारी में भी नहीं थे, वरना नैतिक तौर पर बीजेपी जैसे दल को सबसे सशक्त चुनौती देने में आगे रह सकते थे। हालांकि ये सवाल भी अपनी जगह है कि क्या आज कोई पार्टी, समस्त संसाधनों से संपन्न और आर्थिक रूप से सबसे सशक्त और मीडिया और प्रचार में समस्त ताकत झोंक देने वाली पार्टी का मुकाबला अपने सीमित और निरीह संसाधनों से कर सके। अभिभूत होकर जिसे आज प्रधानमंत्री का बड़ा करिश्मा बताया जा रहा है, उस माहौल में हमें ये बात भी याद रखनी चाहिए। दूसरी ओर, राजनीति में वंशवाद से सत्ताधारी एनडीए को परहेज रहा हो- ऐसा नहीं है वरना लोजपा नेता रामविलास पासवान और उनके बेटे आज बीजेपी लहर पर सवार न हुए होते या महाराष्ट्र में बीजेपी शिवसेना के साथ और पंजाब में अकाली दल के साथ न होती। विपक्ष की चुनौतियों की बात करें तो हमें ये भी देखना होगा कि कौनसा विपक्ष। क्या कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय लेकिन एक परिवार की अध्यक्षता में चल रही पार्टी वाला विपक्ष, या क्षेत्रीय स्तरों पर पुश्तैनी राजनीतिक दलों का विपक्ष या फिर वामपंथी दलों का विपक्ष जो एक दशक बाद संसद से लगभग समाप्त हो चुका है। कांग्रेस की सबसे बड़ी चुनौती यही है जिससे वो अभी जूझ रही है।

मोदी तांडव में उड़ गया विपक्ष देश में फिर से मोदी सरकार

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह

देश में एकबार फिर नरेंद्र दामोदर मोदी की सरकार बन रही है ।2014 में मोदी लहर और सुनामी थी लेकिन इस बार ना लहर,ना कहर,ना सुनामी और ना ही फानी तूफान आया बल्कि इस बार मोदी तांडव हुआ जिसमें सारे विपक्षी दल हवा में उड़ गए ।बीजेपी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए,खुद अपने दम से सरकार बनाने की मजबूत ताकत अर्जित कर ली ।हांलांकि 2014 के चुनाव में भी बीजेपी,अपने दम से सरकार बनाने में सक्षम थी ।2014 में बीजेपी ने 282 सीटों पर कब्जा किया था ।इसबार तो बीजेपी ने उस आंकड़े को भी पीछे छोड़ते हुए,302 सीटों पर जीत दर्ज कर,इतिहास रच दिया ।जहाँ तक एनडीए का सवाल है,तो जीत बेमिशाल है ।एनडीए को 353 सीटें मिली हैं,जो उनके इतराने के लिए बेशक बेहतरीन और अजीम सबब हैं ।21 राज्यों में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया ।दिल्ली,उत्तराखंड,हरियाणा, गुजरात,राजस्थान में बीजेपी ने क्लीन स्वीप कर लिया ।दिल्ली में आप के तीन प्रत्यासियों की जमानत जब्त हो गयी ।बेहद शर्मनाक और दुःखद पहलू यह है कि देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस का 20 राज्यों में खाता भी नहीं खुल सका ।कांग्रेस सिर्फ केरल से दहाई का आंकड़ा छूने में कामयाब हुई ।21 वर्षों के बाद नेहरू परिवार की जागीर समझी जाने वाली सीट अमेठी में,राहुल गांधी को स्मृति ईरानी ने पटखनी देकर,कांग्रेस को चारो खाने चित कर दिया है ।काबिले तारीफ बात यह है कि 17 राज्यों में बीजेपी का वोट प्रतिशत 50 प्रतिशत से ज्यादा रहा ।कहते हैं कि सत्ता तक पहुंचने के लिए यूपी से रास्ता निकलता है ।इसबार भी यूपी में बीजेपी के प्रदर्शन को हम कतई बुरा नहीं कह सकते हैं ।यूपी की 80 सीटों में बीजेपी ने 62 सीटों पर जीत दर्ज की ।यूपी में बीजेपी को 9 सीटों का नुकसान जरूर हुआ है लेकिन माया-अखिलेश के गठबंधंधन से जो तस्वीर चुनाव से पहले अचानक उभरी थी,उससे ऐसा लग रहा था कि बीजेपी 20 से 30 सीटों पर सिमट कर रह जायेगी ।लेकिन धाकड़ प्रचार और चुनाव मैनेजमेंट ने फिर से यूपी की तस्वीर बदलकर रख दी ।गौरतलब है कि गुजरात में बीजेपी का वोट प्रतिशत 49 से 62, मध्यप्रदेश में 41 से 58, राजस्थान में 39 से 58,हरियाणा में 35 से 58,बंगाल में 16 से 40, यूपी में 42 से 50 का ईजाफा हुआ है ।वोट प्रतिशत के यह आंकड़े बीजेपी के जीत वाले सभी राज्यों में बढ़े हैं ।कुल मिलाकर अगर पूरे देश

पर निगाह डालें,तो यह चुनाव जातिवाद-धर्मवाद बनाम राष्ट्रवाद की नीतियों पर हुआ ।वाकई नरेंद्र मोदी और अमित शाह की चुनावी रणनीति ने सभी राजनीतिक सूरमाओं के पसीने छुड़ा दिए ।देश के बड़े नेताओं में हारने वालों की सूची काफी लंबी है लेकिन हम कुछ नामों का जिक्र कर रहे हैं,जो हर दांव-पेंच के बाद भी अपनी सीट बचाने में कामयाब नहीं हो सके ।कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी को बीजेपी नेत्री स्मृति ईरानी ने हराया ।कांग्रेस के शीर्ष नेता दिग्विजय सिंह को साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने हराया ।लगातार चार बार सांसद रहे ज्योतिराज सिंधिया को बीजेपी के डॉक्टर केपी यादव ने हराया ।भूपेंद्र सिंह हुड्डा को दिग्विजय सिंह चौटाला ने हराया ।पीडीएफ की महबूबा मुफ्ती को नेशनल कांफ्रेंस के हसनैन मसूदी ने हराया ।जेडीएस के एचडी देवगौड़ा को बीजीएपी के जीएस बस्वाराज ने हराया ।कांग्रेस के मल्लिकार्जुन खड़के को बीजेपी के उमेश जी जाधव ने हराया ।सपा की डिम्पल यादव को बीजेपी के सुब्रत पाठक ने हराया ।टीडीपी के अशोक गजपति राजू को वाईएसआर कांग्रेस के बी चन्द्रशेखर ने हराया ।बीजीएपी ने मध्यप्रदेश में 30 में से 29,उत्तरप्रदेश में 80 में से 62 सीटें हासिल की ।यूपी में अखिलेश-माया का गठबंधन कोई भी चमत्कार करने में कामयाब नहीं हुआ और वहाँ ये औंधे मुंह गिरे ।कांग्रेस की तो यूपी में भद पिट गयी ।ममता के पश्चिम बंगाल में बीजेपी को 2014 में 2 सीटें आईं थीं लेकिन इसबार बीजेपी ने 18 सीटें जीतकर अपनी ताकत में भारी इजाफा किया है ।महाराष्ट्र में बीजेपी गठबन्धन को 48 में से 41 सीटों पर जीत दर्ज की है ।यहाँ बीजेपी को अकेले 23 सीटों पर जीत मिली है ।बिहार में 40 सीटों में एनडीए ने 39 सीटों पर जीत दर्ज की है जिसमें बीजेपी ने 17 सीटों पर अकेले जीत हासिल की है ।

यूपी लोकसभा का महात्म्य

हर लोकसभा चुनाव में सभी की नजरें यूपी के परिणाम पर टिकी रहती हैं ।चुनाव से पूर्व यूपी में अखिलेश-माया का गठबन्धन काफी मजबूत प्रतीत हो रहा था । लेकिन मतदान के कुछ दिन पूर्व से और मतदान के दिन स्थिति बदल गयी ।यहां के नतीजों में महागठबंधन पर बीजेपी पूरी तरह से भारी पर गयी ।कांग्रेस एक ही सीट पर सिमट कर रह गई ।अमेठी से कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी भी

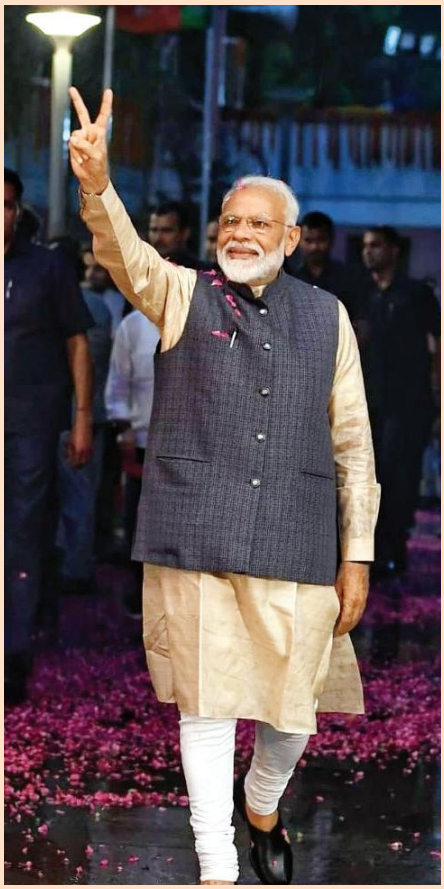

अपना गढ़ नहीं बचा सके और केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी ने यहां से जीत दर्ज की ।यूपी में बीजेपी के खाते में 62 सीटें आईं जबकि बीएसपी को 10 और एसपी को 5 सीटें मिलीं ।वहीं अपना दल को यूपी में 2 सीटों पर जीत मिली लेकिन महागठबंधन में शामिल आरएलडी के खाते में एक भी सीट नहीं आई ।यूपी की सबसे हॉट सीट वाराणसी से नरेंद्र मोदी,लखनऊ से राजनाथ सिंह और रायबरेली से सोनिया गांधी ने जीत दर्ज की ।आजमगढ़ से अखिलेश यादव और मैनपुरी से मुलायम सिंह यादव अपनी ईज्जत बचाने में सफल रहते हुए जीत दर्ज की ।

महागठबन्धन को ले डूबे लालू पुत्र तेजस्वी यादव

इस बार के लोकसभा चुनाव में जहाँ देशभर में चुनाव बेहद रणनीति,गम्भीरता और पूरी निष्ठा के साथ लड़े गए,वहीँ बिहार में चुनाव के नाम पर मजाक हुआ ।बिहार की 40 सीटों में से 39 सीटों पर एनडीए ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की ।बिहार में बने महागठबन्धन में राजद के युवराज तेजस्वी यादव के अहंकार और अति आत्मविश्वास ने एनडीए को जीतने के लिए बुनियादी और मजबूत रास्ते दे दिए ।महागठबन्धन में कांग्रेस,हम रालोसपा और भीआईपी शामिल थी ।लेकिन कहाँ से कौन उम्मीदवार खड़ा होगा,तेजस्वी यादव जबरदस्ती उसमें टांग अड़ाते रहे ।कांग्रेस पार्टी मूक और बधिर बनकर बस महागठबन्धन का एक हिस्सा भर बनकर थी ।तेजस्वी ने किसी की एक नहीं सुनी और इतनी राजनीतिक अदूरदर्शिता दिखाई और गलती दर गलती की जो इतनी शर्मनाक हार महागठबन्धन हिस्से आयी ।लालू प्रसाद यादव के घर में मचे कोहराम और पारिवारिक विवाद ने महागठबन्धन की सूरत और स्थिति को बेहद खराब कर के रख दी ।लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव ने राजद के खिलाफ लालू-राबड़ी मोर्चा बनाकर जहानाबाद से अपना उम्मीदवार जयप्रकाश यादव को खड़ा कर दिया ।राजद के उम्मीदवार सुरेंद्र यादव महज 1700 वोट से हारे,जबकि जय प्रकाश यादव को साढ़े आठ हजार वोट आये ।उम्मीदवारी के नाम पर थोक में टिकट बेचे गए ।तेजस्वी यादव की जिद और अकड़ की वजह से बिहार में राजद को एक भी सीट पर जीत नहीं मिली ।सिर्फ एक सीट किशनगंज से कांग्रेस को जीत मिली ।बिहार से जिस तरह से इस लोकसभा चुनाव में राजद का सूपड़ा साफ हो गया है,उससे राजनीतिक जानकार यह खुलकर कह रहे हैं कि आगामी 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में राजद का वजूद और अस्तित्व तक समाप्त हो जाएगा ।पाटलिपुत्र सीट से लालू प्रसाद यादव की बेटी डॉक्टर मीसा भारती को बीजेपी के राम कृपाल यादव ने हराया ।बिहार की बेगुसराय सीट को मीडिया ने कन्हैया कुमार को लेकर ऐसी हवा बना दी थी कि लग रहा था कि वहाँ से गिरिराज सिंह को कन्हैया कुमार हरा कर रहेंगे ।लेकिन गिरिराज सिंह ने कन्हैया कुमार को चार लाख 20 हजार मत से करारी शिकस्त दी ।पटना साहिब से रवि शंकर प्रसाद ने "कह देना छेनू आया था"और "खामोश" डायलॉग से मशहूर हुए अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा को बुरी तरह से पराजित किया ।बिहार की सबसे हाईप्रोफाईल और बेहद हॉट सीट बिहार के मधेपुरा संसदीय सीट से जदयू के दिनेश चंद्र यादव ने देश के सबसे पुराने सांसद प्रखर समाजवादी नेता शरद यादव को पटखनी देकर विजय श्री हासिल की है ।दिनेश चन्द्र यादव ने शरद यादव को 3 लाख 10 हजार वोट से हराया ।महागठबन्धन में मुख्य रूप से हारने वालों में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री सह हम पार्टी के मुखिया जीतन राम मांझी, भीआईपी के सुप्रीमो सन ऑफ मल्लाह मुकेश सहनी,रालोसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा और राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवंश प्रसाद सिंह शामिल हैं ।उपेंद्र कुशवाहा उजियारपुर और काराकाट दो जगहों से चुनाव लड़े थे लेकिन उन्हें दोनों जगहों पर हार मिली ।मोटे तौर पर,इस चुनाव में तेजस्वी यादव विलेन और बीजेपी की बी टीम के मुखिया के तौर पर नजर आ रहे थे ।

मोदी की विराट जीत के बीच पूर्व सांसद आनंद मोहन की सियासी जादूगरी का बजा डंका

2019 में लोकसभा चुनाव में मोदी तांडव और कहर के

चलते एनडीए ने देश भर में ऐतिहासिक जीत दर्ज की जिसका असर अभी विश्व स्तर पर देखने को मिल रहा है ।लेकिन इस एकतरफे विजय यात्रा के बीच बिहार महागठबन्धन का सूपड़ा साफ करने में बिहार के सहरसा जेल में बन्द पूर्व बाहुबली सांसद आनंद मोहन की भूमिका भी काफी मजबूत और प्रभावशाली रही ।इस बात की तारीफ सूबे के मुखिया नीतीश कुमार और बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने भी खुलकर की है ।बताना बेहद लाजिमी है कि पूर्व सांसद आनंद मोहन की पत्नी कांग्रेस में थीं और वह शिवहर संसदीय सीट से चुनाव लड़ना चाहती थीं ।बीते पांच वर्षों के दौरान लवली आनंद और उनके बड़े बेटे चेतन आनंद ने शिवहर को अपना कर्मभूमि बना लिया था ।वैसे आनंद मोहन और लवली आनंद का शिवहर से पुराना रिश्ता रहा है ।पूर्व सांसद आनंद मोहन जहां शिवहर से सांसद रह चुके हैं,वहीं लवली आनंद वैशाली से सांसद रह चुकी हैं ।इन बीते पांच वर्षों से लवली आनंद और चेतन आनंद ने शिवहर में डेरा जमाकर,क्षेत्र में विकास के लिए अनवरत कई आंदोलन किये और जनता से उनका लगातार संवाद होता रहा ।लवली आनंद कांग्रेस से टिकट मिलने को लेकर पूरी तरह से आस्वस्त थीं ।लेकिन महागठबन्धन के नायक तेजस्वी यादव ने चतुराई से शिवहर सीट राजद के खाते में करवा ली ।कांग्रेस महागठबन्धन में 40 सीटों में से 11 सीट मांग रही थी लेकिन तेजस्वी यादव ने 9 सीटें देकर कांग्रेस का मुंह बंद करा दिया ।शिवहर से लवली आनंद को टिकट नहीं मिलने के बाद सहरसा जेल में बन्द पूर्व सांसद आनंद मोहन की रणनीति और उनके समर्थकों ने महागठबन्धन के द्वारा सोची-समझी साजिश के तहत छल और विश्वासघात किये जाने का करारा जबाब,चुनाव में उसे ना केवल बुरी तरह से पराजित कर बल्कि बिहार से उसे पूरी तरह से उखाड़ फेंककर दिया है ।अपने स्वाभिमान और नीतियों के लिए आजीवन कारावास की सजा स्वीकारने वाले आनंद मोहन के बारे में राजनीतिक समीक्षकों का कहना है कि आनंद मोहन ने अपने वसूलों से ना तो कभी समझौते किये हैं और ना ही सत्ता के इर्द-गिर्द मंडराते सियासी सूरमाओं के सामने कभी घूँटने ही टे-के हैं ।आनंद मोहन ने इस दफा गजब की सियासी चाल चली । उन्होंने महागठबन्धन के खिलाफ फेज वाईज एनडीए के प्रत्यासियों की मदद के लिए अपनी पत्नी लवली आनंद और अपने बड़े बेटे चेतन आनंद को चुनाव मैदान में उतार दिया ।आनंद मोहन की इस सियासी रणनीति ने राजद के युवराज तेजस्वी यादव को मुंहतोड़ जबाब देकर,पूरी तरह से बैकफुट पर ला दिया ।आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद ने चुनाव से पहले ही कहा था कि कांग्रेस के द्वारा शिवहर से लोकसभा सीट से उन्हें उम्मीदवार नहीं बनाए जाने से वे बेहद खफा हैं ।बिहार में उन्होंने और उनके समर्थकों ने महागठबन्धन से आर-पार की लड़ाई का मूड बना लिया है ।जीतन राम मांझी की पार्टी हम को छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने वाली लवली आनंद को कांग्रेस की इस कार्यशैली से गहरा सदमा सा लगा था ।यही वजह है कि इसबार उन्होंने चुनाव नहीं लड़ने का ना केवल घोषणा कर दी बल्कि महागठबन्धन को जद से सबक सिखाने की मुनादी भी कर दी थी ।पूर्व सांसद लवली आनंद ने महागठबंधन को ठगबंधन करार देते हुए कहा कि हमारे पुरखों की असीम कुर्बानियों से देश में एक तरफ जहाँ आजादी आयी वहीं देश में लोकतंत्र भी आया ।लेकिन वर्तमान की राजनीति आज तिजारत बन

कर रह गई है ।एक बेहद गलत और खतरनाक 'ट्रेंड' चल पड़ा है ।पार्टियों के निष्ठावान और ईमानदार कार्यकर्ता जमीनी संघर्ष करते-करते मर-खप जाते हैं और पैराशूट से लूटेरे धनपशु चुनावी टिकट खरीद कर कहीं से अचानक चुनावी समर में टपक जाते हैं ।राजनीति में धनपशुओं के खिलाफ एक निर्णायक संघर्ष वक्त का तकाजा है ।ऐसे ठगबंधन वाले महागठबंधन को हराना निहायत जरूरी है ।उन्होंने आगे कहा था कि शहीदों के बलिदान से मिली आजादी और जनतंत्र को बचाना,इस देश के नौजवानों का फर्ज है ।लवली आनंद ने आगे कहा कि वर्तमान चुनाव के मद्देनजर हमने और हमारे समर्थकों ने फ्रेंड्स ऑफ आनंद और बीपीपा के बैनर तले दूसरे चरण में पुर्णिया से जदयू उम्मीदवार संतोष कुशवाहा,तीसरे चरण में मधेपुरा के जदयू प्रत्याशी दिनेश चंद्र यादव और चौथे चरण में,मुंगेर संसदीय सीट पर जद यू के ललन सिंह,दरभंगा से गोपाल जी ठाकुर और उजियारपुर से नित्यानंद राय के पक्ष में अपना समर्थन दिया था ।पांचवे चरण में,सारण से राजीव प्रताप रुढ़ी,मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी में क्रमशः अजय निषाद और सुनील कुमार 'पिंटू',छठे चरण में शिवहर से रामा देवी, मोतिहारी में राधामोहन सिंह,महाराजगंज से जनार्दन सिंह सिग्रीवाल और वैशाली से शिवहर टिकट बंटवारे के गुनहगार और सवर्ण आरक्षण विरोधी राजद प्रत्याशी रघुवंश प्रसाद सिंह के खिलाफ एनडीए के लोजपा प्रत्याशी बीणा देवी को अपना समर्थन दिया ।सातवें चरण में सासाराम से छेदी पासवान, काराकाट से महाबली सिंह और पाटलिपुत्र से रामकृपाल यादव को उन्होंने समर्थन दिया और उनके लिए जमकर चुनाव प्रचार भी किये ।वैसे लवली आनंद ने चौथे,पांचवे,छठे और सातवें चरण की शेष सीटों पर फैसला कार्यकताओं के स्वविवेक पर भी छोड़ दिया गया था ।मालूम हो कि बीते 18 अप्रैल के पुर्णिया सीट पर हुए चुनाव में जदयू के संतोष कुशवाहा और 23 अप्रैल को हुए चुनाव में मधेपुरा और सुपौल में जदयू के पक्ष में आनंद मोहन समर्थकों ने ना केवल खुलकर समर्थन दिए बल्कि लवली आनंद और उनके बेटे चेतन आनंद ने इन प्रत्यासियों के लिए नुक्कड़ सभा कर के और डोर टू डोर कैम्पेन कर के वोट भी मांगे ।यह बेहद नंगा सच है कि आनंद मोहन के समर्थन के अलावे,लवली आनंद और चेतन आनंद के चुनाव प्रचार के असर से एनडीए ये तीनों सीट चुनाव से पहले ही जीत चुकी थी ।इन क्षेत्रों में चुनाव से पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मधेपुरा और सुपौल की कई चुनावी सभा में आनन्द मोहन के समर्थन को लेकर उन्हें और उनके समर्थकों को धन्यवाद कहते हुए,शुक्रिया भी अदा किया था ।जाहिर तौर पर,आनंद मोहन के समर्थक चुनावी समर में,खुलकर खेल रहे थे ।इसे कहते हैं फ्रंटफुट पर आक्रामक होकर खेलना ।वैसे यह बताना बेहद लाजिमी है कि यह सारी रणनीति जेल की सलाखों में कैद पूर्व सांसद आनंद मोहन की थी जिसने बिहार चुनाव को बेहद रोमांचक और निर्णायक बना दिया था ।इस बार आनंद मोहन की रणनीति से एक तरफ जहां महागठबन्धन पर पहले से ही महा संकट मंडरा रहा था,वहीं एनडीए की बल्ले-बल्ले थी । यहाँ यह उल्लेख करना बेहद जरूरी है कि बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार,उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी और चारा घोटाले में रांची के होटवार जेल में बन्द पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव की तिकड़ी ने राजनीतिक षड्यंत्र से पूर्व सांसद आनंद मौहन को वर्ष 1995 में बिहार के तत्कालीन गोपालगंज डीएम जी.कृषनैया हत्या मामले में आजीवन कारावास की सजा कराने में मुख्य भूमिका निभाई थी ।पूर्व सांसद आनंद मोहन की सजा अब पूरी होने वाली है ।इधर चुनाव के दौरान कांग्रेस में रहते हुए लवली आनंद और चेतन आनंद ने एनडीए के स्टार प्रचारक की भूमिका निभाई ।अमित शाह, राजनाथ सिंह,हेमा मालिनी और नीतीश कुमार सहित कई अन्य बड़े नेताओं के साथ मंच साझा किए और दमदार लहजे में जनता को संबोधित भी किया ।कयास यह लगाया जा रहा है कि एनडीए के बड़े नेताओं की इस सोहबत से आनंद मोहन की ससम्मान रिहाई में सहूलियत होगी ।हद की इंतहा तो यह भी है कि लवली आनंद और चेतन आनंद ने कांग्रेस में रहते हुए महागठबन्धन की कब्र खोद दी लेकिन बिहार कांग्रेस और कांग्रेस आलाकमान ने इनदोनों पर अभीतक कोई भी करवाई नहीं कि है ।जेपी आंदिलन की उपज आनंद मोहन की पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई,चंद्रशेखर,अटल बिहारी बाजपेयी,विश्वनाथ प्रताप सिंह, पूर्व उप राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत,राष्ट्रपति प्रतिभा सिंह पाटिल,राजनारायण,लालकृष्ण आडवाणी,कैलाशपति मिश्र, मुलायम सिंह यादव,रमण सिंह,चौधरी चरण सिंह,अजित सिंह,ओम प्रकाश चौटाला,प्रकाश सिंह बादल,हरीश सिंह रावत, राजनाथ सिंह,रामविलास पासवान सहित देश के कई बड़े नेताओं और नेत्रियों से घरेलू सम्बन्ध रहे हैं ।लेकिन इस तमाम परिचय और सम्बन्ध के बाद भी,वे जेल की सलाखों के भीतर हैं ।इस लोकसभा चुनाव में बिहार की 40 लोकसभा सीटों में से 13 पर प्रत्यक्ष और 15 सीटों पर अप्रत्यक्ष रूप से आनंद मोहन और उनके समर्थकों का जादू चला जिससे राजद सहित महागठबन्धन का सूपड़ा साफ हो गया ।इस चुनाव ने यह जाहिर कर दिया कि जेल में रहते हुए भी पूर्व सांसद आनंद मोहन सर्वसमाज के सर्वमान्य नेता हैं और बिहार में उनका मजबूत जनाधार है ।2020 के बिहार में विधनसभा चुनाव होने हैं ।कयास यह लगाए जा रहे हैं कि उससे पहले पूर्व सांसद आनंद मोहन नेल की सलाखों से बाहर निकल जाएंगे ।जाहिर तौर पर जब जेल के भीतर से पूर्व सांसद आनंद मोहन जब बड़ी सियासी करामात कर सकते हैं,तो नेल से बाहर निकलने के बाद पूर्व सांसद आनंद मोहन गेम चेंजर और किंग मेकर की भूमिका में रहेंगे ।हर दल इन्हें अपना ब्रह्मास्त्र और संजीवनी बनाकर इस्तेमाल करने की जुगत करेंगे ।अब यह आनंद मोहन और उनके समर्थकों पर निर्भर करता है कि वे कैसा राजनीतिक इतिहास लिखने की ईच्छा रखते हैं और कोशिश करते हैं ।

नई सरकार पर रार, बिहार के सीएम नीतीश कुमार बिफरे

मुकेश कुमार सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

लोकसभा चुनाव में जहां बीजेपी को अपने दम पर प्रचंड जीत मिली,वहीं एनडीए को ऐतिहासिक जीत मिली ।30 मई को एनडीए सरकार का गठन भी हो गया ।नई सरकार के सत्तासीन होने के क्रम में ही एनडीए के मजबूत साथी जदयू ने सरकार में शामिल होने से इनकार कर दिया ।नीतीश कुमार ने राजनीतिक महत्वाकांक्षा और दर्द को छुपाते हुए कहा कि उनकी पार्टी सरकार में अपनी आंशिक और हल्की भूमिका के लिए तैयार नहीं है ।सरकार में नहीं रहने के बाद भी,एनडीए में वे बेहद मजबूती के साथ हैं ।30 मई को हुए शपथ ग्रहण समारोह में देश से लेकर विदेश तक के सैंकड़ों मेहमान शामिल हुए ।नरेंद्र दामोदर मोदी के मंत्रिमंडल में 57 मंत्रियों को शपथ दिलाई गई ।इसमें 24 कैबिनेट मंत्री,9 स्वतंत्र प्रभार के राज्य मंत्री और 24 राज्य मंत्री शामिल हैं ।इसबार पूर्व के मंत्रिमंडल में भारी फेरबदल किया गया है ।मेनका गांधी,सत्यपाल सिंह,राज्यवर्धन सिंह राठौर,जेपी नड्डा,सत्यपाल सिंह,मनोज सिन्हा,अनुप्रिया पटेल,महेश शर्मा,उमा भारती,अनंत कुमार हेगड़े सहित 36 मंत्रियों को बाहर का रास्ता दिखाया गया है ।सुषमा स्वराज और अरुण जेटली ने पहले ही,उन्हें मंत्री नहीं बनाया जाए,इसकी दरखास्त नरेंद्र मोदी से की थी ।मंत्रिमंडल में 31 पुराने और 26 नए चेहरे हैं ।सबसे अहम बात यह है कि इसबार के मंत्रिमंडल में 53 मंत्री सिर्फ बीजेपी से हैं और एनडीए के घटक दलों से सिर्फ चार सांसदों को मंत्री पद मिले हैं ।31 मई की दोपहर बाद मंत्री पद की घोषणा भी कर दी गयी ।राजनाथ सिंह की जगह अमित शाह को गृह मंत्रालय की जिम्मेवारी सौंपी गई है ।राजनाथ सिंह को नई जिम्मेवारी देते हुए,रक्षा मंत्रालय का जिम्मा मिला है ।निर्मला सीतारमण वित्त मंत्री,नितीन गडकड़ी,सड़क,ट्रांसपोर्ट,राजमार्ग और एमएसएमई मंत्री,नरेंद्र सिंह तोमर,कृषि मंत्री और रामविलास पासवान उपभोक्ता मामले और खाद्य मंत्री बनाये गए हैं ।मोदी कैबिनेट में स्मृति ईरानी को महिला और बाल विकास मंत्रालय के साथ कपड़ा विभाग मंत्रालय भी दिया गया है ।रेल मत्रालय की जिम्मेदारी पीयूष गोयल को मिली है ।प्रकाश जावडेकर को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के साथ पर्यावरण मंत्री भी बनाया गया है,इसके अलावा उन्हें वन एवं जलवायु विभाग दिया गया है ।जबकि मानव संसाधन विकास मंत्रालय रमेश पोखरियाल निसंक के पास रहेगा ।धर्मेंद्र प्रधान को पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय और इस्पात

मंत्रालय भी दिया गया है ।इनके अलावा गिरिराज सिंह को पशुपालन मंत्रालय,मुख्तार अब्बास नकवी को केंद्रीय अल्पसंख्यक कल्याण,हर्षवर्धन को स्वास्थ्य मंत्रालय,सदानंद गौड़ा को रसायन,महेंद्र नाथ पांडेय को कौशल विकास और अर्जुन मुंडा को आदिवासी मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई है ।बिहार से 6 सांसद को मंत्री पद की जिम्मेवारी मिली है जिसमें रामविलास पासवान,रविशंकर प्रसाद,गिरिराज सिंह कैबिनेट मंत्री और आर.के.सिंह को राज्य मंत्री(स्वतंत्र),अश्वनी चौबे और नित्यानंद राय राज्य मंत्री बनाये गए हैं ।पिछली सरकार में सात महिलाएं मंत्री बनी थीं लेकिन इसबार 6 महिलाएं ही मंत्री बनने में कामयाब हो सकी हैं ।वैसे नियम की बात करें तो अभी 23 और मंत्री बनाये जाने शेष हैं ।यानि कहा जा सकता है कि इन बचे 23 मंत्रियों के दम पर,आगे एनडीए के अन्य घटक दल की नाराजगी दूर करने का विराट प्रयास किया जाएगा ।ये बांकि बचे 23 मंत्री पद बीजेपी और नरेंद्र मोदी के लिए संजीवनी और ब्रम्हास्त्र हैं ।

इधर राजनाथ सिंह से गृह मंत्रालय छिनने से,देश भर से नाराजगी के स्वर उठ रहे हैं ।क्षत्रिय समाज,सवर्ण समाज से लेकर सर्वसमाज से यह सूचना मिल रही है कि लोगों को नरेंद्र मोदी का यह फैसला सही नहीं लग रहा है ।जनता एकबार फिर से राजनाथ सिंह को गृहमंत्री के तौर पर ही देखना चाहती थी ।देश के कई हिस्सों से ना केवल विरोध के मुखर स्वर सुनने को मिल रहे हैं बल्कि लोग सड़कों पर भी उतर कर अपना विरोध जता रहे हैं ।अमित शाह के लिए गृह मंत्रालय एक बड़ी चुनौती है ।उन्हें आगे खुद को साबित करना होगा ।राजनाथ सिंह के लिए भी रक्षा मंत्रालय,एक बेहद बड़ी चुनौती है ।पाकिस्तान,चीन और नेपाल जैसे देश से बेहतर सम्बन्ध नहीं होना और पाकिस्तान और चीन से सीमा पर लगातार बनी युद्ध की स्थिति पर,उन्हें गम्भीरता से कदम बढ़ाने होंगे और मजबूत फैसले लेने होंगे ।वैसे इस बार नरेंद्र मोदी के लिए भी राह आसान नहीं है ।जम्मू-कश्मीर से धारा 370 और 35 ए को हटाना और कश्मीरी पंडितों को फिर से बसाना, रोहिग्या मुसलमानों सहित बंगलादेशी घुसपैठियों पर ठोस कदम उठाना,अयोध्या में रामलला मंदिर का निर्माण,किसानों की समस्या का निदान,कृषि क्षेत्र में नई क्रांति लाना,रेलवे का विकास और सड़कों का जाल बिछाना, कुटीर,लघु और बड़े उद्योगों का सृजन,रोजगार का सृजन, आरक्षण का सदूपयोग और देश की आंतरिक व्यवस्था को सुदृढ़ रखना,आतंकवाद और नक्सलवाद पर नकेल जैसी अनगिनत चुनौतियां हैं ।उन्हें मुसलमानों का भरोसा भी जीतना है ।सभी धर्मों के रक्षार्थ,समान भाव और दृष्टि रखनी है ।देश की अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण,उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती है ।विश्व में रुपये के महत्व और उसके वजन में अप्रत्यासित इजाफे की जरूरत है ।जनता टैक्स में रियायत के साथ वृहत रोजगार सृजन की उम्मीद लगाए बैठी है ।सबका साथ और सबका

विकास को फलीभूत करना और उसे जमीन पर उतार कर दिखाने की जरूरत है ।एनडीए,खासकर बीजेपी ने यह चुनाव राष्ट्रवाद और सबका साथ,सबका विकास के नाम पर लड़ा था ।जनता ने झोली खोलकर नरेंद्र मोदी को वोट देकर,उनकी पार्टी को मालामाल कर दिया है ।जनता ने अपना भरोसा दिखा दिया है ।अब बारी नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार की है ।

बिफरे बिहार के मुखिया नीतीश कुमार,मोदी सरकार से जदयू ने किया किनारा

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का शपथ ग्रहण समारोह हो चुका है और मंत्री पद की भी घोषणा हो चुकी है ।30 मई को 57 मंत्रियों को शपथ दिलाई गई लेकिन जनता दल यूनाइटेड इस मंत्रिमंडल में शामिल नहीं हुआ । जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने साफ कर दिया कि उनकी पार्टी को सांकेतिक भागीदारी कबूल नहीं है ।नीतीश के टफ स्टैंड को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह,बिहार प्रभारी भूपेंद्र यादव सहित दूसरे बड़े नेताओं ने भी सॉफ्ट नहीं कर सके और अंत तक जदयू अपने निर्णय पर अडिग रहा ।नीतीश कुमार काफी जिद्दी हैं,यह एकबार फिर जाहिर हो गया ।आखिर क्या चाहते थे नीतीश ?

जदयू के अंदरूनी सूत्रों की माने तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की मौजूदगी में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव आरसीपी सिंह और मुंगेर के सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने बहुत पहले ही यह स्टैंड ले लिया था कि यदि कैबिनेट या मंत्रिमंडल में जदयू को सम्मानजनक प्रतिनिधित्व नहीं दिया जाता है तो मंत्री बनने की कोई जरूरत नहीं है और यही वजह रही कि जनता दल यूनाइटेड मंत्रिमंडल से दूर रहा । सरकार गठन से पहले जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दिल्ली पहुंचे थे,तो उन्होंने अमित शाह से मुलाकात की थी ।अमित शाह ने काह था कि सहयोगी दलों को एक-एक मंत्री पद दिए जाने का फैसला हुआ है ।नीतीश कुमार ने अमित शाह को उसी समय कह दिया था कि आपका यह फामूर्ला पार्टी को स्वीकार्य नहीं होगा लेकिन अपने दल के नेताओं से चर्चा करने की बात कह कर वहां से निकल गए थे ।ललन सिंह और आरसीपी सिंह को उन्होंने अमित शाह का संदेश सुनाया ।दोनों नेताओं ने कहा कि यह तो पहले से ही तय था यदि सम्मानजनक प्रतिनिधित्व नहीं दिया जाएगा तो पार्टी उस परिस्थिति में मंत्रिमंडल से बाहर रहेगी और मंत्री बनना कोई जरूरी नहीं है आरसीपी और ललन की बातों से नीतीश के स्टैंड को बल मिला और नीतीश, अपने स्टैंड पर कायम रह गए ।नीतीश कुमार कम से कम तीन से चार मंत्री पद चाहते थे ।वे आरसीपी सिंह,ललन सिंह और संतोष कुशवाहा को मंत्री बनाना चाहते थे ।उनकी दिली ईच्छा थी कि देश के सबसे पुराने सांसद और समाजवादी नेता शरद यादव को 3 लाख 20 हजार मतों से करारी शिकस्त देकर,एकतरह से शरद यादव की राजनीतिक यात्रा को खत्म करने वाले बिहार के मधेपुरा के सांसद दिनेश चंद्र यादव को भी मंत्री पद मिले ।दिनेश चंद्र यादव ने जाप संरक्षक पप्पू यादव की जमानत तक जब्त करवा डाली थी ।जदयू के भीतरखाने से मिली जानकारी के मुताबिक नीतीश कुमार तीन मंत्री पद पर रजामंद हो जाते लेकिन बीजेपी उन्हें एक मंत्री पद देकर, चिढ़ाने में लगी थी ।

लाख मनुहार के बाद भी नहीं माने नीतीश

जनता दल यूनाइटेड,खास कर के नीतीश कुमार के टफ स्टैंड के बाद अमित शाह,भूपेंद्र यादव सहित दूसरे बड़े नेताओं ने मान-मनौव्वल की बहुत कोशिशें की लेकिन नीतीश अपने स्टैंड पर अड़े रहे ।अमित शाह और भूपेन्द्र यादव ने कई बार नीतीश कुमार से बात की लेकिन जनता दल यूनाइटेड ने अपने स्टैंड में कोई परिवर्तन नहीं लाया और पार्टी अपने फैसले पर कायम रह गई । समय बीतता जा रहा था लेकिन नीतीश कुमार ने अपना निर्णय नहीं बदला और उनकी पार्टी के दोनों प्रमुख नेता इस स्टैंड पर कायम रहे कि जदयू मंत्रिमंडल का हिस्सा नहीं होगा ।

नीतीश ने पहले की दो गलतियां, क्या फिर से होगी नई गलती ?

नीतीश कुमार ने बिहार के मुख्यमंत्री रहते हुए पहली गलती 2013 में की थी,जब वे एनडीए से अपने संबंध खत्म कर लिए थे ।उस समय राजद और कांग्रेस ने बाहर से समर्थन देकर नीतीश सरकार को बचाया था ।दूसरी सबसे बड़ी गलती नीतीश कुमार ने 2015 में किया,जिसमें उन्होंने राजद और कांग्रेस से गठबन्धन कर के बिहार विधानसभा का चुनाव लड़ा ।यह वह समय था जब राजद और कांग्रेस अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन तलाशने की भगीरथ कोशिश कर रही थी ।चुनाव परिणाम में राजद के बहुरंगी तो कांग्रेस के अच्छे दिन आ गए ।इस चुनाव में राजद को 81 सीटें,कांग्रेस को 27 सीटें और जदयू को 72 सीटें आई ।बीजेपी को महज 53 सीटें मिलीं ।राजद बिहार की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभर गयी ।नीतीश महागठबन्धन के नेता चुने गए और फिर से मुख्यमंत्री बन गए ।लालू प्रसाद यादव के छोटे बेटे तेजस्वी यादव उप मुख्यमंत्री और तेजप्रताल यादव स्वास्थ्य मंत्री बनाये गए ।लालू प्रसाद यादव इस सरकार के रिंग मास्टर थे और स्वतंत्र काम-काज के आदी नीतीश कुमार को जबरन सलाह देकर,वे लगातार परेशान करते थे ।आखिरकार तंग आकर 19 अगस्त 2017 को नीतीश कुमार ने महागठबन्धन से नाता तोड़ लिया और फिर से एनडीए में शामिल हो गए ।फिर से बिहार में एनडीए की सरकार बन गयी और तभी से नीतीश कुमार निष्ठा के साथ एनडीए के साथ हैं ।अभी नीतीश सरकार में,बीजेपी के सुशील कुमार मोदी उप मुख्यमंत्री,तो मंगल पांडे स्वास्थ्य मंत्री हैं ।तेजस्वी यादव सदन में नेता प्रतिपक्ष हैं ।

ललन सिंह को मिली बड़ी जिम्मेवारी, जेडीयू संसदीय दल के नेता चुने गये

मुंगेर से चुनाव जीतने वाले ललन सिंह के बारे में यह तय माना जा रहा था कि वो केन्द्र में मंत्री बनेंगे ।इस कयास के पीछे एक मजबूत वजह भी थी ।वजह यह थी कि ललन सिंह लंबे वक्त से नीतीश कुमार के साथ रहे हैं,उन्हें नीतीश के बेहद करीबी माना जाता है और बिहार सरकार में वे जल संसाधन मंत्री रहे हैं ।पार्टी में भी उनकी साख काफी मजबूत है । मुख्यमंत्री सह जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने केन्द्र की सरकार में सांकेतिक हिस्सेदारी लेने से मना कर दिया इसलिए ललन सिंह मंत्री नहीं बन पाए लेकिन अब जेडीयू ने इसकी भरपाई कर दी है ।ललन सिंह को बड़ी जिम्मेदारी दी गयी है ।

ललन सिंह जेडीयू संसदीय दल के नेता चुन लिए गये हैं ।बिहार के मुंगेर लोकसभा सीट पर कांग्रेस की प्रत्याशी नीलम देवी को पराजित कर संसद पहुँचने वाले जदयू के राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह को लेकर ये कहा जा रहा था कि वो मोदी कैबिनेट का हिस्सा बनेंगे,परन्तु ऐसा नहीं हो सका । वहीं अब पार्टी में ललन सिंह का कद काफी बढ़ गया है।।पार्टी ने उन्हें जदयू के संसदीय बोर्ड का नेता चुना है ।पार्टी के संसदीय बोर्ड के नेता चुने के बाद सांसद ललन सिंह की जिम्मेदारी काफी बढ़ गई है ।

बिहार कैबिनेट के विस्तार में नीतीश ने बीजेपी को दूर रखकर लिया बदला

नीतीश कुमार के द्वारा मंत्रिमंडल विस्तार में जेडीयू के कुल 8 मंत्रियों ने शपथ ली है ।राज्यपाल लालजी टंडन ने सभी मंत्रियों को शपथ दिलाई है ।चार-चार के दो ग्रुपों में ये शपथ दिलाई गई है । संजय झा,नीरज कुमार,अशोक चौधरी,रामसेवक सिंह,लक्ष्मेश्वर राय,बीमा भारती,नरेंद्र नारायण यादव और श्याम रजक ने मंत्री पद की शपथ ली है ।मंत्री बनने वाले सभी जदयू के विधायक और विधान पार्षद हैं ।मंत्रिमंडल में बीजेपी से किसी को नहीं लिया गया है,जो नीतीश कुमार की खीज और भड़ास को जाहिर कर रहा है ।

केंद्र में बनी नई सरकार के गठन में जदयू के शामिल नहीं होने से लालू प्रसाद यादव के खेमे से एकबार फिर नीतीश कुमार को महागठबन्धन में शामिल होने का निमंत्रण मिल रहा है ।नीतीश कुमार को पलटू राम और पलटी मार चाचा कहकर बुलाने वाले तेजस्वी यादव,अब कह रहे हैं कि प्यारे चाचा,महागठबन्धन में आ जाईये ।हमलोग आपके स्वागत में खड़े हैं ।2020 में बिहार विधानसभा का चुनाव होना है ।राजनीतिक जानकारों की राय और खुद हमारी यह राय है कि नीतीश कुमार,अब अपने राजनीतिक जीवन में,कभी भी पाला नहीं बदलेंगे और वे एनडीए में ही बने रहेंगे ।राजद के साथ कुछ महीनों के शासनकाल में ही, बिहार में फिर से सुशासन की जगह जंगलराज की तस्वीर दिखने लगी थी ।नवोदित सरकार में अभी मंत्रियों के 23 पद खाली हैं ।इसके अलावे अभी बनाये गए मंत्रियों के विभागों में भी फेर-बदल संभव है ।अगर नीतीश कुमार की तल्खी से एनडीए को कोई नुकसान होता दिखेगा,तो नरेंद्र मोदी एंड कम्पनी शेष बचे 23 मंत्री पद,अन्यथा और किसी जुगाड़ टेक्नोलॉजी से नीतीश कुमार सहित जदयू के सारे बड़े नेताओं को मना लेंगे ।आखिर में हम,हम ताल ठोंककर कहते हैं कि नरेंद्र मोदी,आने वाले दिनों में जदयू को सरकार में शामिल करवा कर ही रहेगी ।जाहिर तौर पर,कहीं कोई तल्खी और विवाद को नहीं

आयरन लेडीज है स्मृति ईरानी

दो सौ के देहाड़ी से अमेठी की दहाड़ तक का सफर

रूढ़िवादी पंजाबी परिवार में जन्मी स्मृति जुबिन ईरानी ने अपने संघर्ष तथा आत्मबल के बदौलत कला एवं राजनीति के क्षेत्र में जिस ऊंचाई पर पहुंची है वह भारतीय महिला समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। कठिन और विपरीत परिस्थिति में भी संयम तथा विवेक का इस्तेमाल कर कभी हिम्मत नहीं हारने वाली इस महिला ने मात्र 43 वर्ष की उम्र में कामयाबी का जो इतिहास लिखा है उसे देखते हुए यदि उन्हें आयरन लेडीज कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।मल्होत्रा (पंजाबी) परिवार में जन्मी स्मृति संसाधन की कमी तथा आर्थिक अभाव के कारण दिल्ली की सड़कों पर 200 रुपया दिहाड़ी पर भी काम किया है। इसके बावजूद अपनी मंजिल पाने में आ रहे सामाजिक एवं रूढ़िवादी बाधाओं को तोड़ते हुए संघर्ष जारी रखा।

एकता कपूर की सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में तुलसी का रोल निभाते हुए अपनी प्रतिभा के बदौलत कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय पहचान बना चुकी स्मृति की शादी पारसी परिवार में जुबिन ईरानी से हुई है। और इनका प्रचलित नाम स्मृति ईरानी है। भारतीय टेलिविजन अकादमी अवॉर्ड इंडियन टेली अवॉर्ड, स्टार परिवार पुरस्कार सहित कला के क्षेत्र में दर्जनों पुरस्कार पाने वाली स्मृति ईरानी ने 1998 में मिस इंडिया सौंदर्य प्रतियोगिता में भी हिस्सा लिया था, हालांकि इन्हें सफलता नहीं मिल पाई।

गुजरात दंगे के बाद वर्ष 2002 में वहां के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी से इस्तीफा मांगने वाली स्मृति ईरानी ने एक साल बाद ही भाजपा की नीतियों से प्रभावित होकर 2003 में पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। तथा भाजपा महिला मोर्चा व युवा मोर्चा के विभिन्न पदों पर रहने के साथ ही साथ पार्टी का राष्ट्रीय सचिव ही बनी। इसी के साथ पार्टी और राजनीति में इनका प्रभाव बढ़ता गया।

इन्होंने वर्ष 2004 में दिल्ली के चांदनी चौक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से कपिल सिब्बल के खिलाफ भाजपा के तरफ से मैदान में अपना भाग्य आजमाया था, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल पाई थी। भारतीय जनता पार्टी में इनके प्रतिभा तथा कार्य कुशलता को देखते हुए गुजरात से 2011 में राज्यसभा सदस्य बनाया। वर्ष 2014 में कांग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष राहुल गांधी के खिलाफ अमेठी लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र चुनाव लड़कर राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर अपनी अलग पहचान बना ली। हालांकि उस चुनाव में इन्हें सफलता नहीं मिली लेकिन जिस अंदाज में इन्होंने चुनाव लड़ा था वह राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बना रहा। राज्यसभा सदस्य होने के कारण इन्हें हार के बावजूद नरेंद्र मोदी सरकार में शामिल कर पहली बार ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेवारी दी गई।

वर्ष 2019 लोकसभा चुनाव में अमेठी लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से राहुल गांधी को पराजित कर स्मृति ईरानी ने भारतीय राजनीति में अपना अलग पहचान बना ली। कांग्रेस के इस परंपरागत और अभेद गढ़ को ध्वस्त कर एक नया इतिहास रचा। क्योंकि गांधी परिवार अपने लिए अमेठी को देश का सबसे सुरक्षित सीट समझता था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय से लेकर कपड़ा मंत्रालय और महिला बाल कल्याण मंत्री के रूप में इन्होंने बाल महिला कल्याण मंत्री के रूप में भी इन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है इसी को देखते हुए मोदी सरकार पार्ट 2 में भी स्मृति ईरानी को पुनः इस विभाग का कार्यभार सौंपा गया है।

बिहार चुनाव परिणाम विशेष

दरक रहा है महागठबंधन का किला, राजद में भी बड़ी फुट की आशंका

मुकेश कुमार सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

23 मई की सुबह तक बिहार महागठबन्धन के नेता एक सुर में कह रहे थे कि महागठबन्धन की महा जीत होगी ।परिणाम आने तक सभी को इंतजार करने के संदेश परोसे जा रहे थे ।लेकिन जैसे कि मतगणना की शुरूआत हुई,वैसे ही महागठबन्धन की हवा निकलती दिखने लगी ।जब सारे नजीजे आ गए,तो 40 सीटों में मुस्लिम बाहुल्य संसदीय क्षेत्र किशनगंज से महज एक सीट कांग्रेस को मिली और 39 सीटों पर एनडीए ने कब्जा जमा लिया ।महागठबन्धन के सबसे बड़े दल राजद का खाता भी नहीं खुला और शून्य पर आउट होकर,उसने बेशर्मी की सारी दीवारें गिरा डालीं ।हमने अपने 34 वर्षों के पत्रकारिता जीवन में इतनी घटिया,अदूरदर्शी,अहंकारी, विध्वंसक और छुप-छुप के गेंद दूसरे गठबन्धन के पाले में देते रहने की राजनीति पहले कभी भी नहीं देखी थी ।हमें पहले से ही यह लग रहा था कि राजद के युवराज और महागठबन्धन के नायक तेजस्वी यादव और बीजेपी के बीच कोई बड़ी डील हो चुकी है ।इससे मुतल्लिक हमने अपने पहले चुनावी विश्लेषण में इस घृणित चुनावी खेल के दृष्टिगत प्रमाण का भी,बाखूबी जिक्र किया था ।अब चुनाव परिणाम के साईड इफेक्ट के रुझान आने शुरू हो गए हैं ।

भड़भड़ाया कुशवाहा का कुनबा, दो विधायक एक विधान पार्षद जेडीयू में शामिल

चुनाव के समय और चुनाव परिणाम के दिन,जिस बिहार पर पूरे देश की निगाहें टिकी हुई थीं,उस बिहार में महागठबंधन का पूरी तरह से सूपड़ा साफ हो गया ।लोकसभा चुनाव में बिहार में सिर्फ कांग्रेस को एक सीट मिली और बांकि पार्टियों का खाता भी नहीं खुल सका ।महागठबन्धन की सहयोगी पार्टी रालोसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा उजियारपुर और काराकाट दोनों सीटों से चुनाव हार गये ।उनकी पार्टी के दूसरे प्रत्याशी भी कहीं से नहीं जीत सके ।जाहिर तौर पर,इस करारी शिकस्त के बाद उनके लिए अपना कुनबा बचाना सबसे बड़ी चुनौती है ।लेकिन रालोसपा का कुनबा बिखड़ने लगा है ।उपेन्द्र कुशवाहा की पार्टी के दो विधायकों और एक विधानपार्षद ने उन्हें बड़ा झटका दिया है ।आरएलएसपी के दो बागी विधायकों और एक विधानपार्षद ने पार्टी का साथ छोड़ने के बाद,आधिकारिक तौर पर जदयू का हाथ थाम लिया है। पार्टी के विधायकों में सुधांशु शेखर और ललन पासवान हैं । एमएलसी संजीव श्याम सिंह ने अपने गुट का विलय जेडीयू में करने संबंधी पत्र बिहार विधानपरिषद सभापति को सौंप दिया है ।इन तीनों नेताओं ने उपेन्द्र कुशवाहा से अलग होकर पार्टी पर अपना दावा ठोका था । तीनों नेताओं ने चुनाव से ठीक पहले आरएलएसपी पर अपनी दावेदारी को लेकर चुनाव आयोग के समक्ष अपील की थी जिसके बाद चुनाव आयोग ने अलग गुट को मान्यता भी दे दी थी ।25 मई को तीनों नेताओं ने अपने अलग गुट को जेडीयू में विलय करने संबंधी पत्र विधानसभा अध्यक्ष विजय चौधरी को सौंपा है । जानकारी के मुताबिक चुनाव आयोग ने ललन पासवान की अगुवाई वाले बागी गुट को बिहार में राज्य स्तरीय दल की अंतरिम मान्यता पहले ही दे दी थी ।साथ ही चुनाव आयोग ने यह भी आदेश दिया था कि लोकसभा चुनाव में यह गुट अपने उम्मीदवार उतार सकते हैं ।अब यह गुट जदयू में विलय कर,पूरी तरह से जदयू में शामिल हो चुका है ।

राजद से बागी हुए फातमी ने कहा की तेजस्वी के घमंड ने हरवाया

बिहार में महागठबंधन की करारी हार का ठीकरा अब राजद के युवराज तेजस्वी यादव के सर फूटने लगा है ।राजद के बागी नेता अली अशरफ फातमी का एक बयान सामने आया है । मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से आ रहे बयान के मुताबित उन्होंने कहा है कि तेजस्वी यादव के घमंड ने बिहार में महागठबंधन को हरवाया और राजद का खाता भी नहीं खुलने दिया ।फातमी ने हार की कई और वजहें भी गिनाए हैं ।उन्होंने कहा है कि एनडीए संगठित होकर चुनाव लड़ रहा था ।वहां सीटों को लेकर तालमेल सही था ।सीटों और टिकटों का बंटवारा समय से हुआ लेकिन महागठबंधन में सिर्फ कागज पर रणनीति बनती रही और जमीन पर कुछ भी नहीं दिख रहा था । प्रत्याशियों का चयन भी राजद और उसके सहयोगी दलों ने ठीक से नहीं किया ।यही वजह रही कि महागठबंधन के प्रत्याशी ना सिर्फ हारे हैं बल्कि ज्यादातर सीटों पर लाखों मतों के बड़े अंतर से उनकी हार हुई है ।कांग्रेस ने सही प्रत्याशियों का चयन किया इस वजह से भले ही बिहार में उसको एक ही सीट आयी हो लेकिन उसके प्रत्याशी कम मतों के अंतर से हारे और बिहार में अच्छा खासा वोट कांग्रेस को मिला है । फातमी ने इशारे-इशारे में यह भी कहने की कोशिश की है कि तेजस्वी यादव को इस हार की नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए, इस्तीफा देना चाहिए ।उन्होंने कहा कि 2014

के लोकसभा चुनाव में जब जेडीयू की बुरी हार हुई थी और पार्टी को महज दो सीटें आयी थी तब नीतीश कुमार ने नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए इस्तीफा दे दिया था ।उसके बाद जीतन राम मांझी बिहार के मुख्यमंत्री बने थे ।

तेजस्वी यादव का इलेक्शन मैनेजमेंट था सिफर

यह बेहद मौजूं विश्लेषण है कि बिहार विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव,अपने पिता लालू प्रसाद यादव की तरह इलेक्शन मैनेजमेंट को नहीं संभाल सके ।बिहार की जनता के मन में यह सवाल इसलिए है, क्योंकि लोकसभा चुनाव के दौरान बिहार में महागठबंधन की बुरी हार हुई है ।राजद अपना खाता तक नहीं खोल सका ।ऐसे में हार का ठीकरा उनके सर फोड़ा जा रहा है ।यह जायज भी है ।तेजस्वी यादव की बचकानी हठधर्मिता और अपरिपक्क राजनीति ने राजद सहित महागठबन्धन को सर्कस का जोकर बनाकर रख दिया ।लगातार ऐसे कई बयान सामने आ रहे हैं ।बेहद दिलचस्प बात है कि तेजस्वी यादव अब हार पर समीक्षा और मंथन करने वाले हैं ।बड़ा सवाल सवाल यह है कि इस मंथन से क्या निकलकर आएगा ?तेजस्वी यादव 28 मई को पटना स्थित राबड़ी आवास पर महागठंबधन और आरजेडी को मिली करारी हार को लेकर समीक्षा की ।लेकिन इस समीक्षा बैठक में जहां कांग्रेस शामिल नहीं हुई,वहीं राजद के भी कई बड़े नेता गायब रहे ।सवाल यह उठने लगे हैं कि रघुवंश सिंह,जगदानंद सिंह,रामचन्द्र पूर्वे,अब्दुल बारी सिद्दीकी, शिवानंद तिवारी जैसे नेताओं को तेजस्वी यादव ने पूरे चुनाव में आखिर किस वजह से पूछा तक नहीं ?आखिर बुजुर्ग और पार्टी के बड़े अभिभावकों से तेजस्वी ने चुनाव के दौरान क्यों दूरी बनाये रखी ?

हद की इंतहा है कि अब इन्हीं वरिष्ठ नेताओं के साथ बैठकर हार की वे समीक्षा करेंगे ।आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के जेल जाने के बाद आरजेडी की पूरी कमान तेजस्वी यादव के हाथ में आ गई और उन्होंने पूरी पार्टी को वैसे चलाया जैसा उन्होंने चलाना चाहा ।जब लालू प्रसाद यादव ने पार्टी की पूरी कमान तेजस्वी यादव के हाथ में सौंपी,तब बगैर कोई सवाल किये रघुवंश प्रसाद सिंह, जगदानंद सिंह,रामचन्द्र पूर्वे, अब्दुल बारी सिद्दीकी,शिवानंद तिवारी,मंगनी लाल मंडल,कांति सिंह,अली अशगर फातमी जैसे वरिष्ठ नेताओं ने तेजस्वी यादव को अपना नेता मान लिया ।यह समझते हुए भी कि जितनी तेजस्वी की उम्र है उससे अधिक इन नेताओं का राजनीतिक अनुभव है ।लेकिन बिहार में जैसी ही लोकसभा चुनाव अभियान की शुरूआत हुई कि तेजस्वी ने इन सभी वरिष्ठ नेताओं को पार्टी के किसी मसले पर किसी बात को लेकर पूछा तक नहीं ।कोई राजनीतिक सलाह भी लेने की जरूरत तेजस्वी को नहीं हुई ।चुनाव के दौरान तेजस्वी यादव पूरी तरह से एक तानाशाह की भूमिका में थे ।अगर तेजस्वी यादव सभी वरिष्ठ नेताओं के संपर्क में रहते और उनसे राजनीतिक टिप्पस लेते रहते,तो राजद की इतनी शर्मनाक फजीहत नहीं होती ।महागठबंधन बनाते समय,महागठबंधन में कांग्रेस के अलावा अन्य पार्टियों को शामिल करने में,महागठबंधन में सामंजस्य बनाने में,एक समय बिखरने की कगार पर पहुंचे महागठबंधन को एक सूत्र में बांधने में,सहयोगी

दलों के साथ सीट के बंटवारे में,पार्टी में उम्मीदवारों के चयन में,चुनाव प्रचार जैसे किसी मसले पर किसी वरिष्ठ नेता की कोई भूमिका नहीं दिखी ।अलबत्ता स्टार प्रचारकों की लिस्ट में इन सभी नेताओं का नाम जरुर था लेकिन इनमें से कोई भी नेता चुनाव प्रचार में कहीं भी नहीं गए ।पूरे चुनाव प्रचार में आरजेडी के एक ही स्टार प्रचारक थे,तेजस्वी यादव ।हालांकि आरजेडी ने रघुवंश प्रसाद सिंह को वैशाली से,जगदानंद सिंह को बक्सर से,अब्दुल बारी सिद्दीकी को दरभंगा से उम्मीदवार बनाकर थोड़ा बहुत इन लोगों का मान रख लिया ।लेकिन मंगनीलाल मंडल और अली अशगर फातमी जैसे पुराने नेता और लालू प्रसाद यादव के बेहद करीबी समझे जाने वाले को,उम्मीदवार तक नहीं बनाया ।ऐसे में मंगनी लाल मंडल और अली अशगर फातमी ने राजद से इस्तीफा दे दिया ।पार्टी के बड़े नेताओं की उपेक्षा,राजद की फजीहत का एक बड़ा कारण रहा है ।

बीजेपी का दावा,राजद के कई विधायक बीजेपी और जदयू में शामिल होने को हैं आतुर

बिहार के कद्दावर बीजेपी नेता और स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय का कहना है कि आने वाले कुछ महीने में राजद तीन-चार टुकड़ों में बंट जाएगा ।एक टुकड़ा राजद तेजप्रताप होगा ।एक टुकड़ा राजद तेजस्वी हो या राजद राबड़ी ।एक मीसा भारती राजद की भी संभावना है ।एक रिपब्लिक राजद का खेमा होगा ।मंगल पाण्डेय ने कहा कि राजद का एक बड़ा टुकड़ा जो एनडीए के संपर्क में हैं,उनके कई विधायक हैं जो एनडीए के संपर्क हैं ।वे अब किसी भी हाल में राजद से विधानसभा का चुनाव नहीं लड़ना चाहते हैं ।वे एनडीए की तरफ आना चाहते हैं ।जब एनडीए को लगेगा कि उनको अपने दल के अंदर लेना चाहिए,तब उनको शामिल किया जाएगा ।उस समय वो अपनी सुविधा के अनुसार फिर चाहे जदयू में आएं या बीजेपी या फिर एनडीए के अन्य सहयोगी दल में ।यानि कुछ महीनों के भीतर ही राजद की सर्जरी होने वाली है ।एनडीए,राजद के वर्तमान विधायकों को आगे यह मौका देने जा रही है कि राजद के वर्तमान विधायक एनडीए में शामिल दल में से वे किसी भी दल में अपनी इच्छा से शामिल हो सकते हैं ।यानि अब ये जाहिर हो चुका है कि लालू प्रसाद यादव की अनुपस्थिति में राजद के जो बुरे दिन शुरू हुए हैं,उसका अंत जल्दी और आसानी से नहीं होने वाला है ।वाकई अगर ऐसा हुआ,तो राजद अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करता दिखेगा ।

राजद के भीतर मचा घमाशान

महागठबंधन की हार का साइड इफेक्ट अब नजर आने लगा है । राजद बिहार में जिस तरह से खाता भी नहीं खोल पायी अब इस पर राजद के अंदरखाने बवाल बढ़ गया है ।तेजस्वी यादव के सर अब हार का ठीकरा फोड़ा जाने लगा है ।मुजफ्फरपुर के गायघाट से राजद विधायक महेश्वर प्रसाद यादव ने पार्टी के खिलाफ बिगुल फूंक दिया है । आरजेडी विधायक ने बकायदा प्रेस कॉन्फ्रेंस की है ।उन्होंने कहा है कि तेजस्वी यादव को इस्तीफा देना चाहिए और अगर वे ऐसा नहीं करते हैं,तो जिस तरह के हालत हैं उससे पार्टी टूट जाएगी । मैं और मेरे साथ जो दूसरे लोग हैं वो पार्टी से अलग हो जाएंगे । उन्होंने कहा कि मैं राजद का विधायक होने के नाते यह मांग करता हूं कि तेजस्वी यादव हार की नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए इस्तीफा दें ।उन्हें नेता प्रतिपक्ष का पद छोड़ना चाहिए ।इसके बाद विधायक दल की बैठक बुलानी चाहिए ।राजद विधायक ने कहा कि हम और हमारे साथ जो लोग हैं वो अलग गुट बनाएंगे ।उन्होंने सीएम नीतीश कुमार की भी तारीफ की और कहा कि राजद में भी सभी लोग नीतीश के खिलाफ नहीं हैं ।यानि यह बयान सिर्फ अंदरूनी कलह और बगावत भर की नहीं है बल्कि यह जदयू प्रेम की सुगबुगाहट भी है ।राजद के कद्दावर नेता और मनेर में विधायक भाई वीरेंद्र भी अब तेजस्वी यादव पर कहकर सियासी हमले करने लगे हैं ।जाहिर सी बात है कि अभी जो राजद के भीतर खिचड़ी पक रही है,उससे राजद के नामोनिशान तक के मिटने की आशंका प्रबल हो गयी है ।इतना तो तय और साफ है कि लालू प्रसाद की मौजूदगी में,बिहार महागठबन्धन और राजद की इतनी बेशर्म फजीहत और कलंकित दुर्दशा नहीं होती ।

केंद्र सरकार में जदयू के शामिल नहीं होने के बाद बिहार में सियासत शुरू

इफ्तार पार्टी और मंत्रिमंडल विस्तार के माध्यम से नीतीश ने दी नाराजगी के संकेत

अखिलेश कुमार

केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को मिली बड़ी कामयाबी के साथ ही नई सरकार का गठन हो गया है। वर्ष 2019 के चुनाव में भाजपा ने उम्मीद से कहीं अधिक सफलता हासिल करते हुए स्वयं 300 से ऊपर के आंकड़े को पार कर गई। इसके बावजूद उसने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सभी दलों को मंत्रिमंडल में एक एक मंत्री पद देने का निर्णय लिया। इसी के तहत यह ऑफर जदयू को भी मिला था। लेकिन केंद्रीय मंत्रिमंडल एक स्थान मिलने से नाराज नीतीश कुमार ने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया। नीतीश कुमार का कहना था कि हम इस संकेतिक भागीदारी से संतुष्ट नहीं है। इसके बाद उन्होंने मंत्रिमंडल में नहीं शामिल होने का फैसला लिया। केंद्रीय मंत्रिमंडल के विस्तार के 2 दिनों बाद ही नीतीश कुमार ने बिहार में मंत्रिमंडल विस्तार का फैसला लिया तथा भाजपा को दरकिनार कर जदयू से सात मंत्रियों को पद तथा गोपनीयता की शपथ रविवार को दिलाई। जिसमे श्याम रजक, नीरज कुमार, अशोक चौधरी, बीमा भारती, नरेंद्र नारायण यादव, संजय झा, रामसेवक सिंह तथा लक्ष्मेश्वर राय का नाम शामिल है। केवल जदयू कोटे से मंत्रियों को शपथ दिलाने के बाद बिहार में नई सियासी संभावना को लेकर बहस आरंक हो गया। इसी बहस के बीच भाजपा और जदयू द्वारा इफ्तार पार्टी का भी आयोजन किया गया। जदयू द्वारा आयोजित इफ्तार पार्टी में नीतीश कुमार के पुराने सहयोगी रहे महागठबंधन घटक के नेता पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी की उपस्थिति और भाजपा की अनुपस्थिति ने सियासी बहस को और हवा दे दी। इसी बीच भाजपा ने भी पटना के अशोक राजपथ स्थित राजकीय मदरसा शमशुल हुदा के स्टूडेंट हॉस्टल परिसर में इफ्तार पार्टी का आयोजन कर इससे जदयू को दूर रखा। इन सारी गतिविधियों के बीच राष्ट्रीय जनता दल द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के 10 सर्कुलर स्थित आवास पर आयोजित इफ्तार पार्टी में भाजपा नेताओं को आमंत्रित कर नई बहस के लिए जगह दे दी।

बिहार में नई सियासी संभावना को लेकर जारी बहस के बीच राष्ट्रीय जनता दल के उपाध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह ने जदयू सहित भाजपा के विरोध में सभी राजनीतिक दलों को एकजुट होकर वर्ष 2020 का विधानसभा चुनाव लड़ने का अनुरोध कर किया है। वहीं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सदानंद सिंह ने भी नीतीश कुमार को भाजपा से अलग होकर धर्मनिरपेक्ष दलों का एक मजबूत गठबंधन बनाने की बात कह डाली। केंद्रीय मंत्रिमंडल में जदयू के शामिल नहीं होने के बाद बिहार की राजनीति में आई सरगर्मी के बीच बढ़ते खटास की खबरें के बाद दोनों दल के नेताओं को सफाई देने के लिए आगे आना पड़ा। खुद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि भाजपा तथा जदयू के बीच मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर कोई नाराजगी नहीं है। केंद्र में हम एक मंत्री देकर सांकेतिक भागीदारी नहीं चाहते थे। वही बिहार मंत्रिमंडल के विस्तार को लेकर उनहोंने सफाई दिया कि भाजपा चाहे तो आगे बिहार मंत्रिमंडल का फिर विस्तार हो सकता है। हमने जो मंत्री बनाए हैं वह जदयू कोटे के मंत्री हैं। वहीं बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने विवादों को बढ़ते देख ट्वीट किया कि नीतीश कुमार के तरफ से भाजपा के मंत्री को शपथ दिलाने के लिए कहा गया था लेकिन केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश पर भाजपा कोटे से बिहार में मंत्रियों को शामिल नहीं कराया गया। विदित हो कि बिहार में विधानसभा के कुल 243 सदस्य हैं और इसके अनुसार यहां अधिकतम मंत्रियों की संख्या 36 हो सकती है। रविवार से पहले भाजपा के कुल 13 तथा जदयू के 12 मंत्री थे। जदयू द्वारा सात मंत्रियों को शामिल करने के बाद मंत्रियों की कुल संख्या 32 हो गई है। इन दोनों नेताओं के सफाई के बाद जनता दल यू के राष्ट्रीय प्रवक्ता केसी त्यागी ने रविवार को कहा कि जदयू भविष्य में भी केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल नहीं होगी तथा यूनिफॉर्म सिविल कोड, 335 ए, समान नागरिक संहिता, राम मंदिर निर्माण जैसे बिंदुओं पर हमारा स्टैंडर्ड स्पष्ट है। तथा इन मुद्दों पर हम भाजपा के साथ नहीं हैं। केसी त्यागी के इस बयान के बाद इस बात के स्पष्ट संकेत नजर आने लगे हैं कि लोकसभा चुनाव से पूर्व भाजपा और जदयू में जो आत्मीयता और एकरूपता दिख रही थी उसमें कड़वाहट जरूर आई है। और इसे हवा देने में महागठबंधन के नेता कोई मौका चूकना नहीं चाहते हैं।

टुकड़े टुकड़े गैंग पर भारी पड़ा भगवा राष्ट्रवाद

बेगूसराय में गिरिराज तोड़े जीत के सारे रिकार्ड

तो हंगामा क्यों बरपा!

लोकसभा चुनाव संपन्न होने के बाद इफ्तार पार्टी की राजनीति और इस पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह का ट्वीट ने हंगामा खड़ा कर दिया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल में नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यू को इच्छा के अनुसार जगह नहीं मिलने के बाद मंत्रिमंडल में शामिल होने से इंकार करने और ठीक कि उसके 2 दिनों के बाद बिहार मंत्रिमंडल का विस्तार कर भारतीय जनता पार्टी को दरकिनार करते हुए केवल जदयू से मंत्री बनाने की घटनाक्रम ने बिहार की राजनीतिक तापमान को बढ़ा दिया। इसके बाद जनता दल यू, राष्ट्रीय जनता दल तथा भाजपा द्वारा इफ्तार पार्टी के आयोजन को लेकर गिरिराज सिंह द्वारा किए गए एक ट्वीट किया गया इस टियूट के बाद हंगामा खड़ा हो गया है। अपने ट्वीट में गिरिराज सिंह ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी आदि का फोटो शेयर किया है और लिखा कि 'कितनी सुंदर तस्वीर होती जब इतनी ही चाहत से नवरात्रि पे फलाहार का आयोजन करते और सुंदर सुंदर फोटो आते।' गिरिराज सिंह के इस ट्वीट को यदि कट्टर हिंदूवादी मानसिकता वाले नेता को दरकिनार कर तटस्थ रूप से देखा जाए तो इसे आपत्तिजनक नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि हिंदू बहुल इस राष्ट्र में वोट की राजनीति के लिए अक्सर अल्पसंख्यक समुदाय को अपने तरफ मोड़ने का प्रयास होते रहता है, जबकि बहुसंख्यकों के भावनाओं को उतनी तरजीह नहीं दी जाती है। हालांकि इस टियूट के बाद जब का प्रहार गिरिराज सिंह पर आरंभ हुआ हस्तक्षेप करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गृह मंत्री अमित शाह ने टेलीफोन के बयानों से परहेज करने की नसीहत दी है।

अखिलेश कुमार

बिहार का बेगूसराय लोक सभा सुनाव परिणाम पर बिहार ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र की नजर थी। क्योंकि 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' जैसे नारे देकर विवादों और चर्चा में आए जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने एक साल पहले से यहां चुनाव लड़ने की तैयारी शुरू कर दी थी। कन्हैया कुमार के साथ भाजपा और दक्षिणपंथ के कट्टर विरोधीलोग शुरू से साथ में खड़े थे। बिहार में पतन के तरफ जा रहे वामपंथ को कन्हैया के सहारे एक नई ऊर्जा मिलने की उम्मीद थी। यह उम्मीद तब और बढ़ गई जब राष्ट्रीय जन तांत्रिक गठबंधन के तरफ से भाजपा के फायर ब्रांड नेता गिरिराज सिंह बेगूसराय से उम्मीदवार घोषित करने के बावजूद वहां से चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया। वे चाहते थे कि नवादा लोकसभा सीट से ही पुनः चुनाव लड़े। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में वो नवादा से ही निर्वाचित हुए थे। लेकिन नवादा सीट गठबंधन के तहत लोक जनशक्ति पार्टी को मिल गया था। इसके बाद भाजपा ने इस फायर ब्रांड वाले नेता को बेगूसराय से अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया।

गिरिराज सिंह द्वारा बेगुसराय से चुनाव लड़ने से इनकार करने के बाद सीपीआई उमीदवार कंहैया कुमार ने इसे मुद्दा बनाते हुए बेगूसराय की जनता का अपमान तक कह डाला, और वहां के मतदाताओं को अपने तरफ करने के लिए इसे भी एक हथियार बनाना चाहा। लेकिन जब पार्टी द्वारा दिए गए दबाव के बाद गिरीराज सिंह बेगूसराय से चुनाव लड़ने के पार्टी के निर्णय को स्वीकार करते हुए बेगूसराय की धरती पर पहुंचे तो फिर पूरे देश के राजनीतिक विश्लेषकों की नजर वहां गढ़ गई। और वर्ष 2019 लोक सभा चुनाव में भरा बेगूसराय लोकसभा निर्वाचन सबसे हॉट सीटों शुमार हो गया।

बेगुसराय क्षेत्र से सीपीआई के कंहैया कुमार और भाजपा के गिरिराज सिंह के अलावा राष्ट्रीय जनता दल के उमीदवार तनवीर हसन में पूरी दम खम के साथ चुनाव प्रचार में कूद पड़े। पहले तो ऐसा लगा की लड़ाई त्रिकोणीय होगी, लेकिन जैसे जैसे समय व्यतीत होने लगा मतदाताओ का ध्रुवीकरण गिरिराज सिंह और कन्हैया के बीच दिखने लगा। फायर ब्रांड नेता गिरिराज के खिलाफ और कन्हैया के पक्ष में बॉलीवुड, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय दिल्ली तथा देश के कई हस्ती बेगूसराय के धरती पर आकर प्रचार किए। शबाना आजमी, जावेद अख्तर, योगेंद्र यादव, सीताराम पचौरी, शहला राशिद जैसे लोगों ने गिरिराज सिंह के विरोध में लोगों को गोलबंद करने का भरपूर प्रयास किया। वहीं दूसरी तरफ गिरिराज सिंह ने भी छद्म धर्मनिरपेक्षता तथा कथित रूप से राष्ट्रीय विरोधी नारे लगाने वाले कंहैया कुमार के खिलाफ लोगों को गोलबंदं करने के अपने रणनीति को बखूबी अंदाज दिया। दरअसल कन्हैया कुमार का प्रचार में आए शहला रसीद सहित कई बामपंथी और बॉलीवुड से जुड़े लोगों के बयान उल्टा पढ़ने लगें। चुनाव प्रचार के दौरान जो जवाहरलाल विश्वविद्यालय से आई कंहैया कुमार के समर्थन में टीम द्वारा उग्र और हिंदू विरोधी छवि और चुनाव प्रचार के दौरान किया जा वयानबाजी गिरिराज सिंह के पक्ष में लोगों को गोलबंद करते चला गया। मतदाताओं ने गिरिराज सिंह के दक्षिणपंथ और भगवा विचारधारा का पुरजोर समर्थन करते हुए टुकड़े टुकडे गैंग को अस्वीकृत कर दिया।और गिरीराज सिंह बेगूसराय से रिकार्ड मतों से जीत हासिल की। उन्हें छह लाख 87 हजार से अधिक मत हासिल किया।जबकि कंहैया कुमार दो लाख 67 हजार मतों में सिमट कर रह गया।और चार लाख बीस हजार से अधिक मतों से गिरिराज सिंह ने जीत दर्ज कर भागवा राष्ट्रवाद का परचम लहराने में कामयाब हुए।

इस जोड़ी ने विपक्ष की कमजोर कड़ी को पकड़कर बनाई रणनीति

लोकसभा चुनाव 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2014 की जीत पहले से आगे बढ़कर दोहराई है. पीएम मोदी की पार्टी बीजेपी ने न सिर्फ पिछले चुनाव के मुकाबले अपनी सीटें बढ़ा ली हैं वहीं एनडीए में शामिल उसके सहयोगी दलों ने बढ़त हासिल की है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ऐतिहासिक जीत के पीछे कारणों की खोजबीन करें तो यह साफ हो जाता है कि मोदी और शाह की जोड़ी की दीर्घकालीन रणनीति और देश के विकास के लिए लोगों की स्थिर सरकार का आकांक्षा ने उनके विजय का मार्ग प्रशस्त किया.

मजबूर नहीं मजबूत सरकार का संदेश

पिछले करीब तीन दशकों में देश ने गठबंधन वाली अस्थिर सरकारों के कई दौर देखे. इन सरकारों की मजबूरियां देखीं और नीतियों से हटकर किए गए समझौते भी देखे. साल 2014 में भारतीय जनता पार्टी की पूर्ण बहुमत वाली सरकार आई. बीजेपी ने चूंकि चुनाव एनडीए गठबंधन के साथ लड़ा था इसलिए गठबंधन धर्म निभाते हुए एनडीए के घटक दलों को भी सरकार में शामिल किया. इस गठबंधन में बीजेपी के सामने कई मौके आए जब एनडीए के घटक दलों का दबाव उसे सहना पड़ा लेकिन चूंकि बीजेपी सशक्त थी इसलिए उसे इन दबावों के सामने मजबूर नहीं होना पड़ा. यही कारण है कि पिछले एक-डेढ़ साल में एनडीए से उसके कुछ घटक दलों ने नाता तोड़ लिया. पीएम नरेंद्र मोदी देश के लोगों को यह भरोसा दिलाने में कामयाब हुए कि स्थिर सरकार देने में सिर्फ बीजेपी ही काबिल पार्टी है.

पीएम मोदी की दूरदर्शिता और दीर्घकालीन रणनीति

पीएम नरेंद्र मोदी और उनकी पार्टी बीजेपी ने लोकसभा चुनाव 2014 जीतने के बाद ही 2019 की तैयारी शुरू कर दी थी. उन्होंने दूरदर्शिता अपनाते हुए दीर्घकालीन रणनीति बनाई. देश भर में राजनीतिक स्थितियों, बीजेपी के जनाधार और विपक्षी दलों की कमजोरियों को सामने रखकर बीजेपी ने अपनी रणनीतिक योजनाएं बनाईं. बीजेपी गुजरात, महाराष्ट्र के अलावा हिंदी पट्टी के उत्तर भारत के राज्यों को लेकर आशस्त थी. यूपी के विधानसभा चुनाव के नतीजों से उसका यह विश्वास और पक्का हुआ लेकिन इसके बाद मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के विधानसभा चुनावों के परिणामों ने बीजेपी को झटका दिया. हालांकि इन राज्यों में बीजेपी और कांग्रेस को मिले वोटों के प्रतिशत में कम अंतर ने उसे भविष्य को लेकर अधिक चिंतित नहीं होने दिया. हार के कारण देखे गए तो राज्य सरकारों का अलोकप्रिय हो जाना भी एक प्रमुख कारण बनकर सामने आया. समझा गया कि इन राज्यों में केंद्र में बीजेपी को नकारने के पीछे कोई मजबूत कारण नहीं है. इस बीच किसानों के कर्ज माफ करने के वादे के साथ छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान में आई कांग्रेस की सरकारें अपना वादा निभाने में पूरी तरह सफल नहीं हो सकीं. इन राज्यों में कृषि पर आधारित जनसंख्या काफी है जिसकी नाराजगी कांग्रेस को नुकसान दे गई.

जातीय समीकरण तोड़ने में सफल

उत्तर प्रदेश में पीएम मोदी की बसपा प्रमुख मायावती और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव (।ीपसमी ल्कंअ) जैसे दमदार क्षेत्रीय नेताओं से सीधी टक्कर थी. अनुमान लगाया जा रहा था कि यूपी में इस चुनाव में बीजेपी पिछले चुनाव जैसा प्रदर्शन नहीं दोहरा पाएगी. पिछले चुनाव में बीजेपी को प्रदेश की 80 में से 71 सीटों पर जीत मिली थी. इस बार वह 62 सीटों पर

आगे रही. आंकड़े बताते हैं कि उत्तर प्रदेश में इस बार बीजेपी को प्राप्त वोटों के प्रतिशत में भी इजाफा हुआ है. उसे पिछले लोकसभा चुनाव में मिले 42.30 फीसदी वोटों के मुकाबले इस बार 49.4 प्रतिशत वोट मिले हैं. यानी कि उसके वोटों में छह प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है. यह नरेंद्र मोदी की छवि का ही कमाल है कि समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के काफी मजबूत गठबंधन के बावजूद बीजेपी को सफलता मिली. यूपी की राजनीति में जातीय समीकरण बहुत अहमियत रखते हैं. चाहे सपा और बसपा जैसे बड़े दल हो या फिर अपना दल, रालोद जैसी छोटी क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियां हों, सबका अपना वोट बैंक है जिसका प्रमुख आधार जाति ही है. बीजेपी किसी जाति को आधार बनाकर चुनाव मैदान में नहीं उतरी. माना जा रहा है कि नरेंद्र मोदी की वजह से ही बीजेपी उत्तर प्रदेश में जातीय समीकरण तोड़कर अपनी राह बनाने में सफल हुई.

पूर्वोत्तर में कड़ी मेहनत का प्रतिफल

पीएम मोदी और पार्टी के अध्यक्ष अमित शाहको पूवार्नुमान था कि सबसे अधिक सीटों वाले उत्तर प्रदेश में इस बार बीजेपी की सीटें कम घट जाएंगी. इसकी भरपाई के लिए बीजेपी ने पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर के राज्यों में बहुत मेहनत की. इसका उसे फायदा मिला. बीजेपी पूर्वोत्तर में आगे बढ़ गई. अरुणाचल प्रदेश में उसने दोनों सीटें जीत लीं. असम में 14 में से 9 सीटें जीतीं. मणिपुर की कुल दो में से एक सीट पर बीजेपी ने कब्जा जमाया. त्रिपुरा की दोनों सीटें बीजेपी ने हासिल कर लीं. वास्तव में पूर्वोत्तर में अब बीजेपी का प्रभावी उदय हुआ है. पिछले आम चुनाव में बजेपी को सभी पूर्वोत्तर राज्यों में केवल आठ सीटें मिली थीं. जबकि इस बार उसने यहां की 14 सीटों पर कब्जा किया है. साल 2014 में असम में बीजेपी को 36.50 फीसदी, मणिपुर में 11.90, मेघालय में 8.90 और त्रिपुरा में 5.70 प्रतिशत वोट मिले थे. इस बार उसे इन राज्यों असम में 35, मणिपुर में 34.2, मेघालय में 8 और त्रिपुरा में 47.8 फीसदी वोट मिले हैं.

बंगाल में वोटों का ध्रुवीकरण

तृणमूल कांग्रेस के गढ़ पश्चिम बंगाल और बीजू जनता दल के मजबूत प्रभाव वाले ओडिशा में पिछले लोकसभा चुनाव में बीजेपी को निराशा मिली थी. पश्चिम बंगाल में 2014 में कुल 42 सीटों में से बीजेपी को सिर्फ दो सीटें मिली थीं. ओडिशा में 21 लोकसभा सीटों में से 20 सीटें बीजेडी को एक सिर्फ एक सीट बीजेपी को मिली थी. इस बार पश्चिम बंगाल में बीजेपी 18 सीटों पर और तृणमूल कांग्रेस 22 सीटों पर जीतने की स्थिति में है. ओडिशा में बीजेपी आठ सीटों और बीजू जनता दल 13 सीटों पर विजय पाने की स्थिति में है. बीजेपी ने इस बार श्रुक ईस्टश की रणनीति पर काम करते हुए ओडिशा और पश्चिम बंगाल में अपनी पूरी ताकत झोंक दी. इन दोनों राज्यों में बीजेपी का जनाधार बढ़ा है. बंगाल में इस बार तृणमूल कांग्रेस की ममता बनर्जी को मोदी लहर का सामना करना पड़ा. पश्चिम बंगाल शुरू से ही बीजेपी और नरेंद्र मोदी (च्ड छंतमदकतं डवकप) के एजेंडे में था. इस चुनाव में इस राज्य में नरेंद्र मोदी ने कुल 17 रैलियां कीं. इन रैलियों में भारी भीड़ जुटी. पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यकों की आबादी करीब 30 फीसदी है. बीजेपी के लिए यह उपयुक्त स्थिति थी जिसमें वोटों का ध्रुवीकरण आसानी से किया जा सकता था. बीजेपी ने ममता बनर्जी पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि वे सिर्फ मुसलमानों की फिक्र करती हैं, हिंदुओं की नहीं. चुनावी राणनीति के तहत हिंदू वोटों को एकजुट करने का माहौल बनाने में बीजेपी सफल हो गई.

केंद्र में मोदी के नेतृत्व की स्वीकार्यता

ओडिशा (व्कर्पी) में बीजेपी नवीन पटनायक (छंअपद च्ंजदंपा) की बीजू जनता दल (ठश्रक) के सामने अधिक मजबूत तो साबित नहीं हुई लेकिन ओडिशा में अपनी जड़ें फैलाने में कामयाब रही. इस राज्य में विधानसभा चुनाव भी लोकसभा चुनाव के साथ हुए. विधानसभा चुनाव में बीजू जनता दल ने एक बार फिर बहुमत हासिल कर लिया और उसने 146 सीटों में से 103 सीटों पर फतह पा ली. यह ओडिशा में नवीन पटनायक की स्वीकार्यता को प्रमाणित करने वाला मतदाताओं का फैसला है. दूसरी तरफ लोकसभा चुनाव में 21 सीटों में से 13 पर बीजेडी और आठ सीटों पर बीजेपी जीत की ओर है. मतदाताओं का यह फैसला केंद्र में पीएम मोदी को समर्थन देने की बात की पुष्टि करने वाला है. यानी राज्य में लोगों को बीजू जनता दल से कोई शिकायत नहीं है लेकिन केंद्र में वे पीएम मोदी से प्रभावित हैं.

दिल्ली में विपक्ष में असहमति का फायदा

दिल्ली में पिछली बार की तरह इस बार भी बीजेपी ने सातों लोकसभा सीटें जीत ली हैं. फर्क यह है इस बार उसका वोट प्रतिशत 46.40 से बढ़ कर 56.6 प्रतिशत हो गया है. दिल्ली के हालात ने पीएम मोदी की जीत का रास्ता साफ कर दिया. दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल कांग्रेस के विरोध में मैदान में डटकर सत्ता में आए थे. इस लोकसभा चुनाव से पहले वे उसी कांग्रेस से गठबंधन की जी तोड़ कोशिश करते रहे. दिल्ली की जनता को उनका अपने सिद्धांतों से हटना और उनका ढुलमुल रवैया रास नहीं आया. केजरीवाल की आम आदमी पार्टी से कांग्रेस का गठबंधन नहीं हुआ और कांग्रेस ने अपने बलबूते चुनाव लड़ा. उधर बीजेपी ने केजरीवाल को उनके रवैये को लेकर जमकर निशाना बनाया. कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने आपस में एक-दूसरे के वोट काटकर बीजेपी की जीत का रास्ता प्रशस्त कर दिया.

दक्षिण में जड़ें फैलाने की कोशिश में कुछ सफलता

पीएम मोदी (च्ड डवकप) और उनकी पार्टी बीजेपी (ठश्रच) ने इस लोकसभा चुनाव में जहां पूर्वोत्तर में पैर फैलाए, वहीं दक्षिण भारत में भी जड़ें फैलाने की कोशिश की. तेलंगाना (ज्मसंदहंदं) के चुनाव परिणाम उसको कुछ हद तक सफलता मिलने की बात को रेखांकित करने वाले हैं. पिछले लोकसभा चुनाव में जहां इस प्रदेश में उसे एक सीट मिली थी वहीं इस बार उसे कुल 17 में से चार सीटों पर विजय हासिल हुई है. तेलंगाना में बीजेपी को 2014 में 8.50 प्रतिशत वोट मिले थे. इस बार उसे यहां 19 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिले हैं. कर्नाटक में बीजेपी ने जोरदार जीत दर्ज की है. यहां राज्य में सत्तासीन जेडीएस-कांग्रेस को 28 में से सिर्फ दो सीटें जीती हैं. बाकी की 26 सीटों पर बीजेपी ने कब्जा कर लिया है. हालांकि केरल और तमिलनाडु के परिणाम बीजेपी के लिए निराश करने वाले हैं. तमिलनाडु में सिर्फ एक सीट पर बीजेपी की सहयोगी एआईएडीएमके एक सीट पर जीती है.

असर दिखा रहा पीएम मोदी का जादू

राजस्थान (त्रैंजींद) में पीएम मोदी (च्ड डवकप) ने सभी 25 सीटें जीतने का लक्ष्य तय किया था और वे उसमें कामयाब हो गए हैं. मध्यप्रदेश की तरह ही राजस्थान में भी पिछले विधानसभा चुनाव में बीजेपी को असफलता मिली थी और इसे वसुंधरा राजे सरकार की नाकामयाबी माना गया था. यहां भी वही फैक्टर काम किया जिसका असर मध्यप्रदेश में देखा गया. विधानसभा चुनाव में मामूली अंतर के चलते राजस्थान में सरकार बनाने में असफल रही बीजेपी को केंद्र में सरकार बनाने करे लिए व्यापक जनसमर्थन मिला. पीएम मोदी का जादू यहां भी असर लाया. इसी तरह दिल्ली के पड़ोसी राज्य हरियाणा में बीजेपी का जलवा दिखा. साल 2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी लहर का जादू हरियाणा में चला था और यहां की 10 में से 7 सीटों पर उसने जीत दर्ज की थी. जबकि इस बार दसों सीटें बीजेपी के खाते में आ गईं. राजस्थान के पड़ोसी और पीएम मोदी व अमित शाह के गृह राज्य गुजरात में बीजेपी ने सभी सीटों पर कब्जा कर लिया है.

डंवाडोल गठबंधन को बरकरार रखने के लिए दरियादिली

लोकसभा सीटों की संख्या के हिसाब से देश के दूसरे सबसे बड़े राज्य महाराष्ट्र में कुल 48 सीटों में से बीजेपी-शिवसेना गठबंधन ने 40 सीटों पर जीत हासिल की है. कांग्रेस-एनसीपी गठबंधन को सात सीटों से ही संतुष्ट होना पड़ा है. एक सीट निर्दलीय ने जीती है. महाराष्ट्र में शिवसेना और बीजेपी का गठबंधन पुराना होने के बावजूद इन दोनों दलों के बीच रिश्ते डंवाडोल होते रहे हैं. महाराष्ट्र में शिवसेना खुद को श्बड़ा भाईश बताती रही है और अपना अधिकार जताती रही है लेकिन दूसरी तरफ बीजेपी अपने मजबूत जनाधार के कारण शिवसेना पर हावी रही है. इन दोनों के रिश्तों में बनी रही खटास के कारण कई बार ऐसे मौकते आए कि गठबंधन टूटने की कगार पर पहुंच गया. हालांकि शिवसेना की तरफ से भड़काने वाले बयान दिए जाने के बावजूद पीएम मोदी और अमित शाह इनसे विचलित होते हुए नहीं दिखे. काफी उहापोह के हालात के बावजूद लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी ने यह स्वीकार किया कि शिवसेना से नाता तोड़कर महाराष्ट्र में आगे बढ़ना आसान नहीं होगा। और इससे विपक्ष को फायदा मिलेगा. बीजेपी ने दरियादिली के साथ सीटों का बंटवारा किया और परिणाम इस गठबंधन के पक्ष में आए. उधर बिहार में नीतीश कुमार की जेडीयू और बीजेपी के गठबंधन ने चुनाव में ऐसा कमाल किया कि राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है. जेडीयू-बीजेपी ने 40 में से 39 सीटें जीत ली हैं. इस सफलता के पीछे पीएम मोदी की लोकप्रियता के साथ-साथ नीतीश कुमार की साफ-सुथरी छवि एक बड़ा कारण है.

लोस चुनाव में जीत के बाद दोबारा मंत्री बनाये गये रविशंकर प्रसाद

अनूप नारायण सिंह

छात्र नेता से राजनीतिक जीवन की शुरूआत करने वाले रविशंकर प्रसाद आज पीएम मोदी की कैबिनेट में शामिल हो गए। उन्होंने मंत्री पद की शपथ ली। वे पटना साहिब से सांसद बन हैं। बिहार के पटना साहिब लोकसभा से जीते सांसद रविशंकर प्रसाद दोबारा मंत्री बन गए। उन्हें नरेंद्र मोदी की सरकार में फिर शामिल किया गया है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन□हें पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। दरअसल पीएम मोदी की कैबिनेट में बिहार से भी लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने वाले कुछ नेताओं को जगह मिली। इसी में रविशंकर प्रसाद को भी शामिल गया। रविशंकर प्रसाद ने पटना साहिब लोकसभा सीट से जीत हासिल की थी और कांग्रेस उम्मीदवार शत्रुघ्न सिन्हा को हराया था।

लोकसभा चुनाव जीतने के बाद रविशंकर प्रसाद को राज्यसभा सांसद पद से इस्तीफा देना पड़ा है। रविशंकर प्रसाद पहले भी मोदी सरकार में कानून मंत्रालय की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। रविशंकर प्रसाद अपने कड़े तेवर के लिए अक्सर सुर्खियों में रहते हैं।

रविशंकर प्रसाद का जन्म बिहार की राजधानी पटना में हुआ। उनके पिता ठाकुर प्रसाद पटना हाईकोर्ट के वरिष्ठ वकील थे। उन्होंने पटना यूनिवर्सिटी से बीए, एम.ए और एलएलबी की पढ़ाई की है। रविशंकर प्रसाद 1980 से वकालत कर रहे हैं।

रविशंकर प्रसाद के राजनीतिक जीवन की शुरूआत 1970 में एक छात्र नेता के रूप में हुई। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ हो रहे विरोध प्रदर्शन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे छात्र आंदोलन में एबीवीपी के सक्रिय छात्र नेता के रूप में काम करते रहे।

अपने कॉलेज के दिनों में रविशंकर प्रसाद पटना यूनिवर्सिटी छात्र संघ के सहायक महासचिव बने और 1995 से रविशंकर प्रसाद बीजेपी राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं। हाल ही में हुए उत्तराखंड विधानसभा चुनाव के लिए उन्होंने रणनीति बनाने का भी काम किया था। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में 2001 से 2003 तक रविशंकर प्रसाद को कोयला एवं खान राज्यमंत्री बनाया गया। दोनों मंत्रालय में उनके द्वारा किए गए बेहतरीन कार्यों को देखते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें कानून राज्य मंत्री की अतिरिक्त जिम्मेदारी दे दी।देखते ही देखते उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का दिल जीत लिया इसके बाद उन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार दिया गया। केंद्र में मोदी सरकार बनते ही रविशंकर प्रसाद को इलेक्ट्रॉनिक्स एवं टेक्नोलॉजी मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई।

अश्विनी कुमार चौबे बक्सर से ऐसे दूसरे सांसद हैं, जो केंद्र में दोबारा मंत्री बने

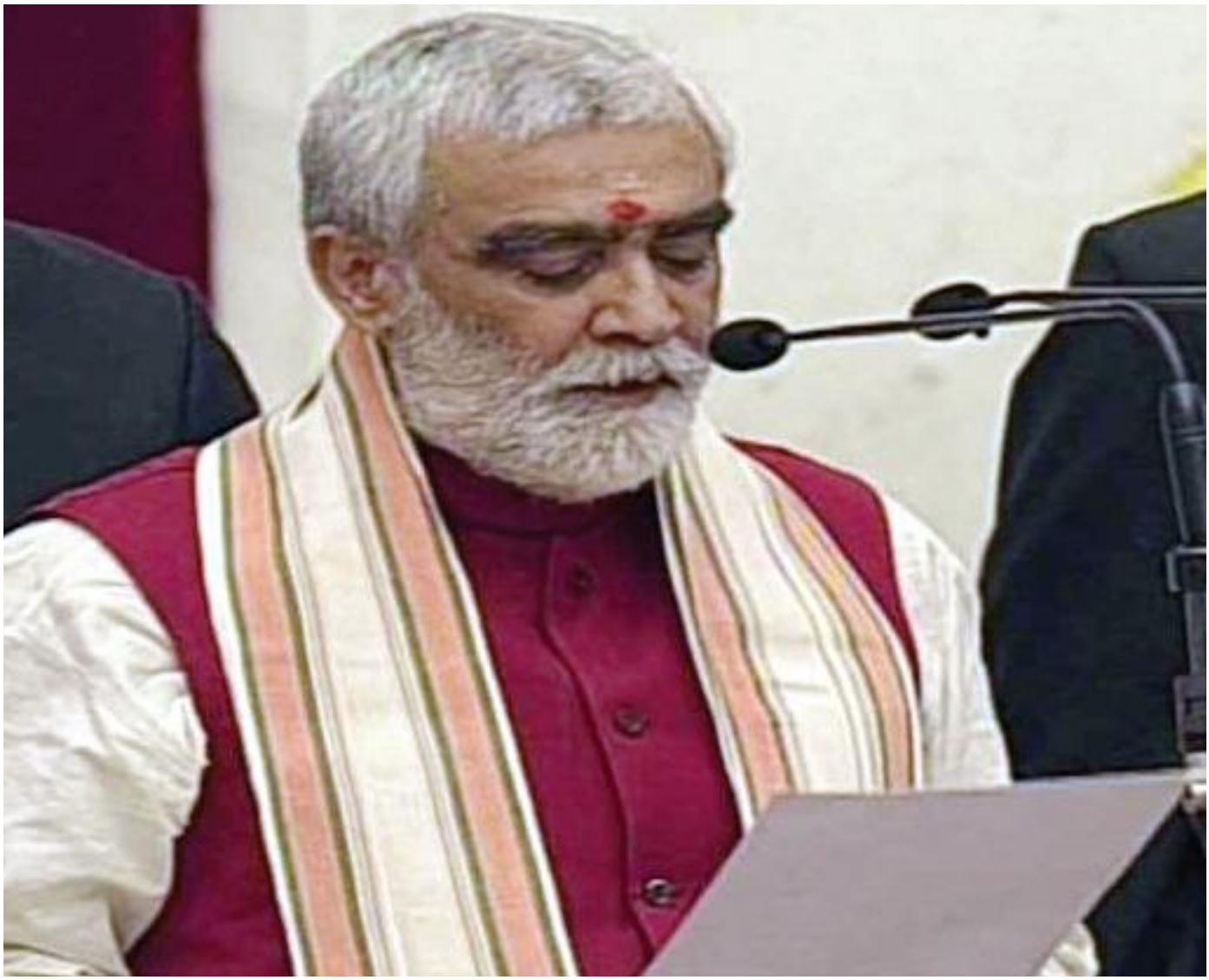

अनूप नारायण सिंह

कांग्रेस सरकार में केके तिवारी के बाद अश्विनी कुमार चौबे बक्सर से ऐसे दूसरे सांसद हैं, जो केंद्र में दोबारा मंत्री बने। चौब मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में मंत्री रहे हैं। उनहें स्वास्थ्य राज्य मंत्री की जिम्मेवारी दी गई थी। इस चुनाव में लगातार दूसरी बार बक्सर लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुने गए चौबे पांच बार भागलपुर का विधानसभा में प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। इन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत पटना विश्वविद्यालय के छात्रसंघ से की और 1978 में छात्रसंघ के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने प्रतिष्ठित पटना साइंस कॉलेज से जूलॉजी में स्नातक किया है। दो जनवरी 1953 को भागलपुर के दरियापुर में जन्मे चौबे ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सक्रिय सदस्य के रूप में कई छात्र आंदोलनों में हिस्सा लिया। जेपी आंदोलन के दौरान चर्चित फुलवारी जेल ब्रेककांड में चौबे आरोपी बनाए गए और उस दौरान आंदोलन के दमन के लिए बने मीसा कानून के तहत कई महीने जेल में रहे। वे 1995 में पहली बार ये भागलपुर से विधायक चुने गए और 2014 तक लगातार हर चुनाव में विजयी रहे। 2014 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने ब्राह्मण का बड़ा चेहरा के रूप में उन्हें बक्सर से उम्मीदवार बनाया और रिकॉर्ड वोट से चुनाव जीते। वे बेबाक बोल के कारण फायरब्रांड नेता माने जाते हैं। क्लासिकल म्यूजिक व कत्थक को पसंद करने वाले चौबे केदारनाथ त्रासदी को अपने जीवन का सबसे बुरा पल मानते हैं। 2015 में केदारनाथ में बारिश व भूस्खलन के समय वे मंदिर में ही अपने परिवार के साथ थे और चौदह घंटे जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष करते रहे। इस हादसे में उन्होंने अपने एक करीबी रिश्तेदार को भी खोया। बाद में उन्होंने केदारनाथ त्रासदी पर एक किताब लिखी, जो काफी चर्चा में रही। 2014 में सांसद चुने जाने के बाद तीन सितंबर 2017 को केंद्रीय परिवार कल्याण एवं स्वास्थ्य राज्यमंत्री बनने से पूर्व लोकसभा सदस्य के रूप में भी ये बहुत सक्रिय रहे। संसद में बातौर सांसद 93 प्रतिशत इनकी उपस्थिति रही और भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने समेत चार प्राइवेट बिल का प्रस्ताव दिया। संसद में इन्होंने 181 बहस में हिस्सा लिया और 151 सवाल सरकार से पूछे।

हाजीपुर के लाल ने रचा इतिहास बनाये गये गृह राज्य मंत्री

अनूप नारायण सिंह

नित्यानंद राय के राजनैतिक सफर की शुरूआत 1981 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, एबीवीपी के कार्यकर्ता के रूप में हुई। हाजीपुर के ही राजनारायण कॉलेज में इंटर की पढ़ाई के दौरान वे नियमित संघ की शाखाओं में जाते थे। उनकी नेतृत्व क्षमता की वजह से संघ ने उन्हें जल्द ही 1986 में हाजीपुर का तहसील कार्यवाह बना दिया और उसके बाद तो वे संगठन की हर सीढ़ी चढ़ते चले गए।1990 की शुरूआत तक संघ से पदमुक्त होकर वे सीधे बीजेपी युवा मोर्चा के प्रदेश सचिव बनाए गए और 1995-96 में युवा मोर्चा के महासचिव और फिर1999 में युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बने। फिर उन्होंने पहली बार में ही 2000 के विधानसभा चुनाव में हाजीपुर सीट से जीत हासिल की।नित्यानंद राय ने हाजीपुर से लगातार चार विधानसभा चुनाव जीता और दो बार उसी सीट से मंडल स्तर के ऐसे कार्यकर्ता को चुनाव जितवाया, जो जाति समीकरण में कहीं भी फिट नहीं बैठता था। 2015 के विपरीत माहौल में भी पार्टी ने यह सीट जीती। फिर राय 2014 के लोकसभा चुनाव में उजियारपुर लोकसभा सीट से सांसद बने और इस बार भी उन्होंने उपेंद्र कुशवाहा को बड़े अंतर से इसी सीट से पराजित किया है।वर्ष 1990 में भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी की राम रथयात्रा बिहार में लोकतंत्र की जन्मभूमि कहे जाने वाले हाजीपुर पहुंचने वाली थी। इसे रोकने के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव आमादा थे। उन्होंने ऐलान भी कर दिया था कि रथ को गांधी सेतु पार नहीं करने दिया जाएगा। उसी वक्त संघ की पृष्ठभूमि से जुड़ा बीजेपी का ये युवा चेहरा उभर रहा था और उसने ताकतवर लालू यादव की सत्ता को चुनौती दी और ऐलान किया कि राम रथ यात्रा को हाजीपुर में नहीं रोकने दिया जाएगा। महज 23 वर्ष के नित्यानंद राय ने तब महापंचायत बुलाकर ऐसा जनसमर्थन जुटाया कि बिहार की तत्कालीन लालू सरकार आडवाणी का रथ हाजीपुर में रोकने का साहस नहीं जुटा पाई। इतना ही नहीं, नित्यानंद राय ने हाजीपुर में आडवाणी की जनसभा भी कराई थी। इसके बाद नित्यानंद राय की पहचान राजनीति की शुरूआत में ही दबंग और निर्भीक कार्यकर्ता की बन गई थी। 52 वर्ष के हो चुके राय के करियर में तब अहम मोड़ आया जब 30 नवंबर, 2016 को तड़के बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महासचिव रामलाल का फोन आया और उन्हें बिहार में बीजेपी का अध्यक्ष बनाया गया। अब उन्हें बड़ी जिम्मेदारी दी गयी।

देश की सियासत एक कद्दावर चेहरा राजनाथ सिंह

अनूप नारायण सिंह

यूपी के चंदौली जिले के एक सामान्य किसान परिवार से देश की सियासत के सबसे बड़े नेताओं में से एक बनने के सफर तक राजनाथ सिंह ने अपने जीवन में इससे पूर्व कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। राजनाथ सिंह को देश की सियासत के एक कद्दावर चेहरे के रूप में जाना जाता है और उत्तर प्रदेश के सीएम से लेकर एनडीए की सरकारों में उन्होंने इससे पूर्व कई बड़ी जिम्मेदारियों पर सफलता पूर्वक काम किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बेहद करीबी राजनाथ सिंह के इसी अनुभव को देखते हुए पीएम मोदी ने उन्हें एक बार फिर देश के शीर्षतम मंत्रालयों की जिम्मेदारी दी है। 2019 के लोकसभा चुनाव में राजनाथ यूपी की राजधानी लखनऊ से सांसद बने हैं और इस सीट पर उन्होंने दूसरी बार चुनाव जीता है। चंदौली के भभौरा गांव में जन्मे राजनाथ सिंह अपने छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे हैं। विद्यार्थी काल से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ सक्रियता से काम करते हुए राजनाथ सिंह ने गोरखपुर विश्वविद्यालय से भौतिकी में एमएससी की डिग्री हासिल की। राजनाथ अपने विद्यार्थी जीवन में एबीवीपी से जुड़े रहे और 1969 में उन्होंने विद्यार्थी परिषद के सचिव पद से राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। इसके बाद 1974 में राजनाथ मिजार्पुर में जनसंघ के सचिव बनाए गए। जनसंघ के शुरूआती दिनों में ही राजनाथ ने आपातकाल के वक्त जेल काटी और फिर सक्रिय रूप से देश की राजनीति में उतर गए।

पहली बार राजनाथ सिंह ने 1977 में यूपी विधानसभा का चुनाव लड़ा निर्वाचित हुए। इसके बाद 1986 में वह बीजेपी के युवा मोर्चा में राष्ट्रीय महासचिव बनाए गए। 1988 में राजनाथ को बीजेपी युवा मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए और इसी साल उन्होंने यूपी में विधान परिषद का चुनाव भी जीता। साल 1991 में राजनाथ को यूपी की कल्याण सिंह सरकार में शिक्षामंत्री बने और इस कार्यकाल के दौरान नकल विरोधी कानून को लेकर उन्होंने कई निर्णायक कदम उठाया। अपने शिक्षामंत्री रहते हुए राजनाथ सिंह ने स्कूलों में वैदिक गणित को पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बनाया।साल 1994 में राजनाथ सिंह संसद के सदस्य बनकर राज्यसभा पहुंचे। इसके बाद मार्च 1997 के बदलते सियासी दौर में राजनाथ को यूपी बीजेपी का अध्यक्ष बनाया गया। संगठन पर एक पारखी पकड़ रखने वाले राजनाथ ने बतौर प्रदेशाध्यक्ष अपने कार्यकाल में बीजेपी को यूपी में काफी मजबूत बनाया और इसके प्रतिफल के रूप में साल 2000 में तत्कालीन पीएम अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें यूपी सरकार के मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी दी। दो साल सीएम रहने के बाद राजनाथ सिंह 2003 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के कृषि मंत्री बने।साल 2004 में यूपीए के सत्ता में आने के बाद राजनाथ सिंह को 2005 में पहली बार बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिया गया। इसके बार राजनाथ सिंह करीब 4 साल तक बीजेपी के शीर्षतम पद पर रहे और इस दौरान उन्होंने पार्टी को देश के तमाम हिस्सों में मजबूती दी। साल 2009 में राजनाथ सिंह पहली बार गाजियाबाद लोकसभा सीट से सांसद बने। इसके बाद उन्होंने एक बार फिर 2013 में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली। राजनाथ सिंह के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए ही नरेंद्र मोदी को बीजेपी की ओर से पीएम पद का चेहरा बनाया गया और 2014 के चुनाव में राजनाथ सिंह ने मोदी के साथ मिलकर देशभर के तूफानी दौरा किया। इस चुनाव में बीजेपी को प्रचंड जनादेश मिला और फिर राजनाथ सिंह देश के गृहमंत्री बनाए गए। इसके बाद तमाम राज्यों के विधानसभा चुनाव में राजनाथ बीजेपी के स्टार प्रचारक रहे और फिर 2019 में उन्होंने दोबारा लखनऊ संसदीय सीट से चुनाव लड़ा। इस चुनाव में राजनाथ को तीन लाख से ज्यादा वोटों से जीत मिली।गृहमंत्री के तौर पर भी राजनाथ सिंह ने देश के कई बड़े फैसलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पांच साल के कार्यकाल में राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान और भारत के बीच सीमा सुरक्षा और कूटनीति के स्तर पर कई बड़े फैसले किए। इसके अलावा उरी और पुलवामा के हमलों के बाद पाकिस्तान के आतंकी कैंपों पर हुई स्ट्राइक के फैसलों में राजनाथ सिंह ने पीएम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। इसके अलावा पूर्वोत्तर राज्यों में एनआरसी लागू करने, जम्मू-कश्मीर में सरकार के साथ समन्वय एवं बीजेपी संगठन के साथ सरकार के कामकाज तक में राजनाथ सिंह ने निर्णायक भूमिका अदा की।

राजनीतिक विरासत को बुलंदियों पर लाये सुनील कुमार पिंटू

व्यवसायी के तौर पर अपने करियर की शुरूआत करने वाले सुनील कुमार पिंटू ने राजनीति के क्षेत्र में भी शानदार पहचान बनायी और पहली बार सांसद बनने में सफल रहे। मां सीता की जन्मभूमि सीतामढ़ी में 22 अगस्त 1961 को जन्में सुनील कुमार पिन्टु को राजनीति की शिक्षा विरासत में मिली। उनके दादा स्वर्गीय किशोरी लाल साह और पिता स्वर्गीय हरिशंकर प्रसाद भी राजनेता थे और दो बार सीतामढ़ी से विधायक चुने गये थे। वर्ष 1985 में स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद सुनील कुमार पिंटू अपने पैतृक व्यवसाय राइस मिल और सिनेमा हॉल में पिता का हाथ बंटाने लगे। पैतृक व्यासाय को आगे बढ़ाते हुये श्री पिंटू ने दाल मिल की स्थापना की तथा पडोसी देश नेपाल से काम किया।

वर्ष 1990 में सुनील कुमार पिंटू भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गये।वर्ष 2003 के दिसंबर में सुनील कुमार पहली बार सीतामढ़ी में हुये उपचुनाव में जीतकर विधायक बने। इसके वह मार्च 2005, नवंबर 2010 में विधानसभा चुनाव जीतकर विधायक बने।वर्ष 2010 में नीतीश सरकार में सुनील कुमार पिंटू पर्यटन मंत्री बनाये गये। पर्यटन मंत्री के तौर पर सुनील कुमार पिंटू ने बिहार को कई उपलब्धियां हासिल करायी और बिहार को एक नयी उचाई पर ले गयें । सुनील कुमार पिंटू के नेतृत्व में बिहार पर्यटन पहली बार लंदन, तथा मॉरिशस गया और बिहार का परिचय अंतरराष्ट्रीय पटल पर कराया। इसके पश्चात सुनील कुमार पिंटू को रेडक्रॉस, जिला परिषद, एवं पंचायती राज्य समिति में सभापति की जिम्मेदारी दी गयी, जिसका उन्होंने बखूबी से पालन किया ।

वर्ष 2019 के आम चुनाव में पूर्व में जदयू के टिकट पर डॉ वरुण कुमार चुनाव लड़ने वाले थे लेकिन नामांकन से पहले ही उन्होंने अपना टिकट लौटा दिया और चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता और पूर्व मंत्री सुनील कुमार पिंटू जदयू में शामिल हो गये और उन्हें सीतामढ़ी सीट से टिकट दिया गया। श्री पिंटू ने राजद उम्मीदवार और पूर्व सासंद अर्जुन राय को पराजित कर दिया और पहली बार सांसद बन गये।

लगातार दूसरी बार भाजपा के टिकट पर सांसद निर्वाचित हुए आरके सिंह

अनूप नारायण सिंह

बिहार के आरा लोकसभा क्षेत्र से लगातार दूसरी बार भाजपा के टिकट पर सांसद निर्वाचित हुए आरके सिंह की छवि बेहद साफ-सुथरी है.

हर आईएएस और आईपीएस अधिकारी को अपने करियर में एक ऐसे दौर से गुजरना होता है जिससे उसकी ख्याति या यूं कहें कि चर्चा कई सालों तक होती है. आरके सिंह के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ. अपनी बेबाकी और स्वच्छ छवि के लिए पहचाने जाने वाले सिंह ने सोमनाथ से आयोध्या की रथयात्रा पर निकले भाजपा के कद्दावर नेता लालकृष्ण आडवाणी को गिरफ्तार किया था.

उस वक्त वो रातो रात सुर्खियों में आए थे. लालू ने इस बात का जिक्र अपनी किताब में भी किया है. उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद ने समस्तीपुर का विशेष डीएम बनाकर आडवाणी की गिरफ्तारी के लिए भेजा था.

सियासी सफर

जिलाधिकारी से लेकर केंद्र में गृह सचिव रह चुके आरके ने रिटायरमेंट के बाद राजनीति में हाथ आजामाया और पहली बार ही उनको पार्टी ने राजपूत बाहुल्य इलाके आरा लोकसभा सीट से टिकट दे दिया. सुपौल के आदमी को आरा से टिकट दिए जाने पर सवाल भी खड़े हुए लेकिन आरके ने अपने ससुराल और बेटी के ससुराल का हवाला देते हुए भोजपुर को न केवल दूसरा घर बताया बल्कि आरा सीट से बंपर जीत भी हासिल की. 2013 में भाजपा में शामिल हुए आरके ने साल 2014 में आरा संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा और जीतकर सीधे लोकसभा पहुंचे.

तीन साल बाद बने मंत्री

आरा सीट को बीजेपी की झोली में डालने वाले आरके सिंह को इसका ईनाम भी मिला और 2017 में हुए मोदी मंत्रिमंडल के विस्तार में उन्हें ऊर्जा एवं गैर परंपरागत ऊर्जा मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार सौंपा गया. आरके सिंह ने मंत्री रहते हुए भी जबरदस्त काम किया और देश में विद्युतीकरण की योजना में उनका अहम योगदान रहा. इस बात का जिक्र पीएम से लेकर बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह भी कर चुके हैं.

नरेंद्र मोदी की अगुवाई में बीजेपी अबकी बार 300 पार

एनडीए ने पिछले लोकसभा चुनाव में 336 सीटों पर विजय हासिल की थी. जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के बाद मोदी देश के तीसरे और पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री है जो लोकसभा में लगातार दूसरी बार पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनायेंगे.

नई दिल्लीरू देशभर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ह्यप्रचंड लहरश पर सवार भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रवाद, हिंदू गौरव और ह्यनये भारतश के मुद्दों पर लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करके लगातार दूसरी बार केंद्र में सरकार बनाने जा रही है. चुनाव आयोग से मिल रहे नतीजों के मुताबिक बीजेपी अब तक 290 सीटें जीत चुकी है और 13 सीटों पर आगे चल रही है. साल 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को 282 सीटों पर जीत हासिल हुई थी. भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल उसके सहयोगी लगभग 350 सीटों पर जीत हासिल करते हुए दिख रहे है. एनडीए ने पिछले लोकसभा चुनाव में 336 सीटों पर विजय हासिल की थी. जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के बाद मोदी देश के तीसरे और पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री है जो लोकसभा में लगातार दूसरी बार पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनायेंगे. इसके साथ ही उन्होंने दूसरी बार इस धारणा को तोड़ दिया है कि केन्द्र की सत्ता में अब गठबंधन का दौर शायद ही खत्म हो. चुनाव आयोग द्वारा जारी मतगणना के आंकड़ों के अनुसार कांग्रेस के 52 सीटों तक ही सिमटने के ही आसार नजर आ रहे हैं. बीजेपी की लहर इतनी प्रचंड थी कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अपने परिवार के गढ़ अमेठी में स्मृति ईरानी से हार गए हालांकि वह केरल में वायनाड से जीत गए. इस चुनाव ने 68 बरस के नरेंद्र दामोदरदास मोदी को पिछले कई दशकों में सबसे लोकप्रिय नेता बना दिया.

जीत के बाद क्या कहा पीएम मोदी ने

पीएम मोदी ने बीजेपी मुख्यालय में देशवासियों को धन्यवाद देते हुए कहा, श्आपने फकीर की झोली उम्मीदों से भर दी है. हमने नये भारत के निर्माण के लिये जनादेश मांगा था और लोगों ने हमें इसके लिये आशीर्वाद दिया है.श उन्होंने भाजपा मुख्यालय में पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के साथ खचाखच भरे कार्यकताओं और समर्थकों को संबोधित करते हुए कहा, श्भारत में पहली बार मतदान का प्रतिशत इतना रहा है और अब दुनिया को भारतीय लोकतंत्र की ताकत को पहचानना होगा.श उन्होंने यह भी कहा कि ह्यमेरे जीवन का हर पलश और ह्यमेरे शरीर का हर कणश देश की भलाई के लिये समर्पित है. उन्होंने विरोधी दलों से भी चुनाव अभियान की कटुता को भुलाने का आग्रह किया. उन्होंने कहा ,ह्यह्यहमें आगे बढना होगा. हमें सभी को साथ लेकर चलना होगा, विरोधियों को भी . हमें देश के हित में काम करना है .

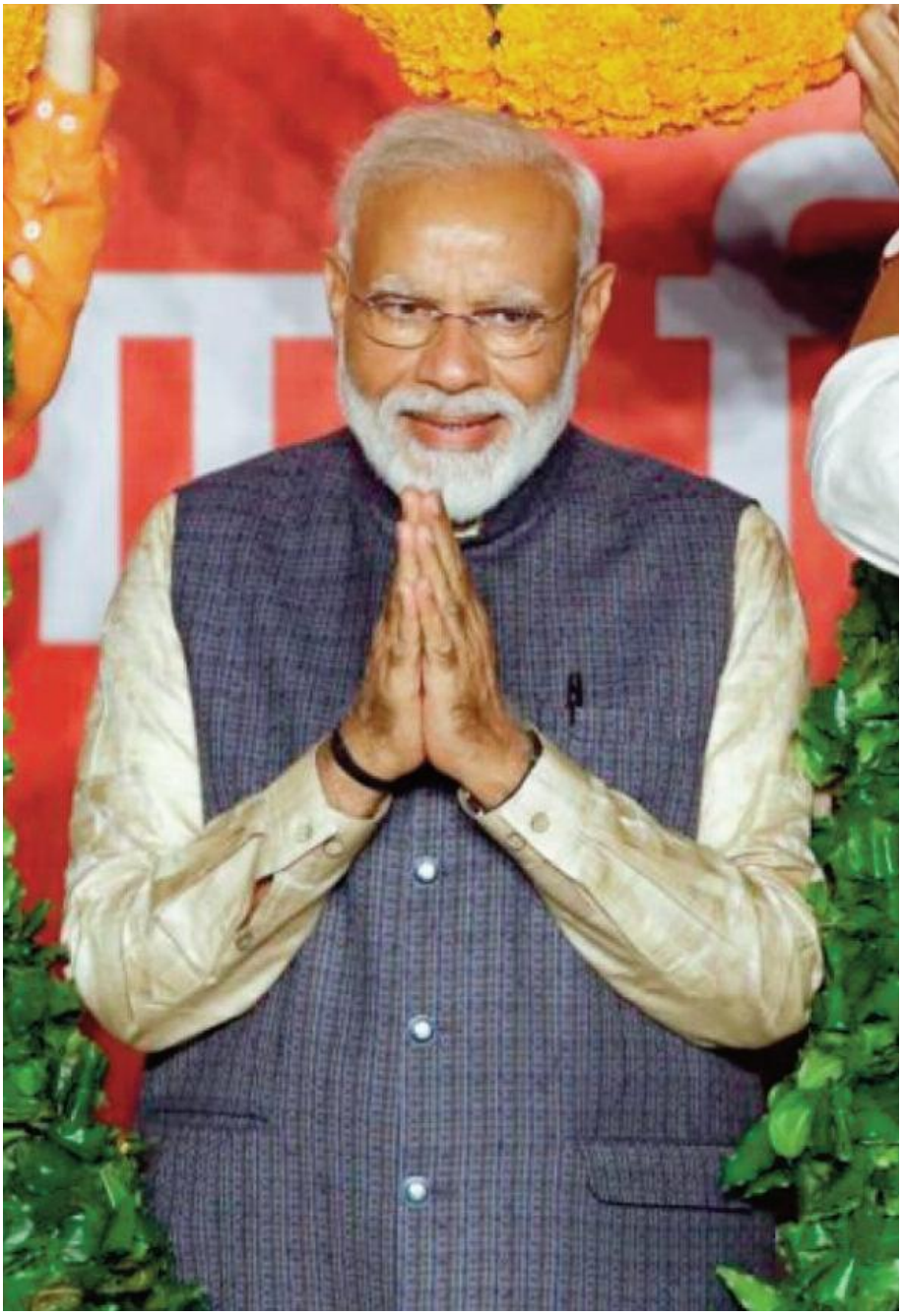

वाराणसी में कितने वोटों से जीते पीएम मोदी

मोदी वाराणसी में चार लाख 79 हजार 505 वोट से जीत गए जबकि पार्टी अध्यक्ष अमित शाह गुजरात में गांधीनगर लोकसभा सीट पर साढे पांच लाख वोट से विजयी रहे हैं. मोदी ने ट्वीट किया,ह्यह्यसबका साथ , सबका विकास और सबका आत्मविश्वास यानी विजयी भारत .श्

सही साबित हुआ नारा अबकी बार 300 पार

मतदान के आखिरी चरण में ह्यअबकी बार 300 पारश का भाजपा का नारा सही साबित होता दिख रहा है. कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के ह्यचैकीदार चोर है के नारे का मतदाताओं पर कोई असर हुआ नहीं दिखा. इन नतीजों से गांधी के नेतृत्व और उनकी पार्टी के भविष्य पर भी सवाल उठने लगे हैं. एक प्रेस वार्ता में उन्होंने इन मसलों पर बात करने से इनकार करते हुए कहा कि पार्टी शुक्रवार को भविष्य को लेकर बैठक करेगी . दिल्ली में कांग्रेस कार्यालय में आयोजित गांधी ने कहा,ह्यह्यभारत के लोगों ने तय किया है कि नरेंद्र मोदी अगले प्रधानमंत्री होंगे और मैं उसका पूरा सम्मान करता हूं.श्श उन्होंने मोदी और भाजपा को बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन हार के कारणों की पड़ताल करने का नहीं है बल्कि देशवासियों की इच्छा का सम्मान करने का है. उत्तर प्रदेश जैसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के गठबंधन से मिली चुनौती के बीच भाजपा के 80 में से 62 सीटें जीतने की उम्मीद है. सपा छह और बसपा 11 सीटों पर आगे है. भाजपा ने पिछली बार उत्तर प्रदेश में 71 सीटें जीती थी.

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सुनामी एवं करिश्माई नेतृत्व के चलते भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनाव में मध्य प्रदेश की कुल 29 सीटों में से 28 सीट पर कब्जा कर ऐतिहासिक जीत दर्ज की है, जबकि कांग्रेस केवल एक सीट छिन्दवाड़ा पर ही सिकुड़ गई है. यह प्रदेश में भाजपा का अब तक का सबसे बेहतर प्रदर्शन है. इससे पहले भाजपा ने मोदी की लहर के चलते वर्ष 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश की 29 में से 27 सीटों पर कब्जा किया था. तब कांग्रेस को दो सीटें छिन्दवाड़ा एवं गुना मिली थी. लेकिन इस बार भाजपा ने गुना सीट को कांग्रेस से छीन ली है. गुना लोकसभा सीट से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं चार बार लगातार सांसद रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया को पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रहे भाजपा के कृष्ण पाल यादव ने 1,25,549 मतों के अंतर से हरा कर उनसे यह सीट छीन ली है. भाजपा के केवल दो प्रत्याशी ही 90,000 एवं एक लाख के मतों के अंतर से जीते। बाकी सभी भाजपा प्रत्याशी एक लाख से पांच लाख के बड़े अंतर से विजयी रहे. लोकसभा चुनाव में मोदी लहर का असर राजस्थान में भी दिखा, जहां बीजेपी की अगुवाई वाले एनडीए ने सभी 25 सीटें जीत लीं. राज्य के इतिहास में पहली बार किसी पार्टी ने लगातार दूसरे चुनाव में एक तरह से एकतरफा जीत दर्ज की है. मोदी सरकार के चारों केंद्रीय मंत्री आसानी से जीत गए जबकि कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री जसवंत सिंह के बेटे मानवेंद्र सिंह भी चुनावी समर में हार गए. निर्वाचन विभाग ने राज्य की सभी 25 सीटों के लिए परिणाम गुरुवार देर रात तक घोषित कर दिया. भाजपा ने 24 सीटों पर जीत दर्ज की है तो राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के हनुमान बेनीवाल नागौर सीट से जीते हैं. भाजपा ने इस पार्टी से चुनावी गठजोड़ किया था और इस जीत के साथ बेनीवाल राष्ट्रीय राजनीति में कदम रखेंगे.

गुजरात

पीएम मोदी के गृह राज्य गुजरात में बीजेपी ने साल 2014 का प्रदर्शन दोहराते हुए सभी सीटें जीतने जा रही है. अब तक मिले आंकड़ों के मुताबिक बीजेपी 23 सीटें जीत चुकी है जबकि 3 सीटों पर वह आगे चल रही है.

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र से मिल रहे आंकड़ों के मुताबिक बीजेपी 23, शिवसेना 18, एनसीपी-4, कांग्रेस-1, और एआईएमआईएम-1 सीट पर जीत दर्ज की है. ऐसा लगा रहा है बीजेपी-शिवसेना गठबंधन राज्य में 2014 का प्रदर्शन दोहरा रही है.

बिहार

बिहार में बीजेपीज़ेडीयूलोजपा गठबंधन ने आरजेडीक ांग्रेस. अन्य दलों के गठबंधन का सफाया कर दिया है. यहां की 40 सीटों में से बीजेपी-17, जेडीयू-16, लोजपा ने 6 सीटें जीती हैं. यहां एक सीट सिर्फ कांग्रेस के खाते में गई है.

झारखंड

झारखंड की सभी 14 लोकसभा सीटों के परिणाम आधिकारिक तौर पर गुरुवार की देर रात घोषित किये गये और 14 लोकसभा सीटों में से 12 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी और उसकी सहयोगी आजसू के उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की है. राज्य के मुख्य विपक्षी झारखंड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष शिबू सोरेन उर्फ गुरु जी दुमका की अपनी परंपरागत सीट से और उनके महागठबंधन के सहयोगी झारखंड विकास मोर्चा के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी कोडरमा सीट से और रांची से कांग्रेस उम्मीदवार पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय बुरी तरह पराजित हुए हैं.

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी ने राज्य की 11 लोकसभा सीटों में से नौ सीटों पर जीत दर्ज कर ली है. वहीं कांग्रेस ने दो सीटों पर जीत हासिल की है. भारत निर्वाचन आयोग के अनुसार छत्तीसगढ़ के सरगुजा लोकसभा सीट पर भाजपा की रेणुका सिंह कांग्रेस के प्रत्याशी खेलसाय सिंह से 157873 वोटों से जीत गई हैं. रेणुका सिंह भाजपा की तेजतर्रार नेत्री है तथा रमन सिंह मंत्रिमंडल में मंत्री रह चुकी हैं.

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में की 42 सीटों में टीएमसी ने 22, बीजेपी ने 18 और कांग्रेस ने दो सीटें जीती हैं. पश्चिम बंगाल में बीजेपी की इतनी सीटें आना ममता बनर्जी के लिए खतरे की घंटी है.

एलआईसी से 52 लाख रुपये सहित कई लूट और हत्या कांड मामले का किया उद्भेदन

समस्तीपुर पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली। एलआईसी से 52 लाख रुपये सहित कई लूट और हत्या कांड मामले का किया उद्भेदन। तीन कुख्यात अपराधियों को किया गिरफ्तार। अपराधी के पास से 400 ग्राम सोना ,एक पिस्टल ,तीन देशी कट्टा ,11 कारतूस ,और बाइक किया बरामद। गिरफ्तार अपराधी वैशाली में दो होमगार्ड जवान और सीतामढ़ी में सैप जवान की हत्या में था शामिल।

मृत्युंजय कुमार ठाकुर

समस्तीपुर पुलिस के लिए मुसरीघरारी थाना क्षेत्र के एनएच 28 पर 16 मई को हुए। स्वर्ण कारोबारी के साथ 35 लाख रूपए रुपए के स्वर्ण आभूषण और 90 हजार नगद। लूट कांड कहे तो एक वरदान की तरह साबित हुई। स्वर्ण कारोबारी से हुई लूट की वारदात का खुलासा पुलिस के लिए एक चुनौती थी। इस मामले में समस्तीपुर पुलिस के द्वारा तकनीकी अनुसंधान शुरू की गई इस मामले में समस्तीपुर पुलिस ने चार अपराधियों को पूर्व में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था जिसके बाद एक अपराधी मोनू झा समस्तीपुर कोर्ट में सरेंडर किया जिसके बाद समस्तीपुर पुलिस ने मोनू झा को रिमांड पर लेकर पूछताछ शुरू की तबे जिले में हुए अपराधिक वारदातों का खुलासा करने लगा। जिसे सुने पुलिस के होश उड़ गए। 30 अगस्त 2018 को हुए एलआईसी से 52 लाख रुपए लूट के दौरान कैश वैन गार्ड की हत्या, 24 जनवरी को हुए राजद नेता रघुवर राय हत्याकांड, 9 दिसम्बर 18 को रोसरा में हुए फाइनेंस कंपनी एल एंड टी से 42 लाख रुपए लूट मामले का जंहो उद्भेदन हुआ। वही मोनू झा के पूछताछ के आधार पर महुआ थाना क्षेत्र के बिजली विभाग के रुपया लूट के दौरान 2 होमगार्ड जवान की हत्या, मुजफ्फरपुर के गरौल थाना क्षेत्र अंतर्गत एल आई सी के 9.5 लाख रुपए लूट कांड में सहभागिता एवं सीतामढ़ी के मेहसौल ओपी अंतर्गत सैप जवान की हत्या सुपारी किलर के द्वारा कराई गई थी इसका भी खुलासा हुआ। इस मामले को लेकर समस्तीपुर पुलिस अधीक्षक हरप्रीत कौर ने आज प्रेस वार्ता कर बताया कि समस्तीपुर पुलिस के द्वारा अपराधी मोनू झो से हुई पूछताछ के आधार पर कार्रवाई शुरू की गई। और तीन कुख्याते अपराधी को गिरफ्तार किया गया। जिसके पास से 38 पैकेट में करीब 400 ग्राम स्वर्ण आभूषण ,चार पिस्टल , 11 कारतूस एलआईसी लूट कांड में प्रयोग किया गया बाइक ,महुआ थाना क्षेत्रे में होमगार्ड हत्याकांड के दौरान लूटा गया बैग , और इस हत्याकांड में प्रयोग किए गए एक बाइक को भी बरामद किया गया है। पुलिस अधीक्षक हरप्रीत कौर ने बताया कि अमृतसर के स्वर्ण कारोबारी से हुए लूट मामले में मोनू झा और उसके साथी भीम सिंह के हिस्से का सोना मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बाघी गांव स्थित एक पोखर के किनारे जमीन के नीचे से बरामद किया गया। वहीं पुलिस ने इस घटना में इस्तेमाल किए गए हथियार के साथ महुआ थाना क्षेत्रे से छोटू सिंह उर्फ अजीत एवं राहुल झा को समस्तीपुर एसआईटी एवं वैशाली के एसआईटी के द्वारा की गई संयुक्त कार्रवाई में गिरफ्तार किया गया।

पुलिस के द्वारा गिरफ्तार किए गए अपराधी राहुल झा ने 30 अगस्त 2018 को हुए समस्तीपुर के ताजपुर रोड में एलआईसी के 52 लाख रुपए लूट और कैश वैन के गार्ड की हत्या और 24 जनवरी 2019 को राजद नेता रघुवर राय की हत्या कांड में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। साथ ही 9 दिसंबर 2018 को हुए रोसरा में फाइनेंस कंपनी एल एन्ड टी के 42 लाख रुपए लूट कांड में भी शामिल था। पुलिस के द्वारा पूछताछ के दौरान गिरफ्तारे किए गए अपराधी राहुल झो ने बताया कि इसके अलावा अन्य दो अपराधी सोनू झा उर्फ अजीत जो सरायरंजन थाना क्षेत्र के उदापट्टी का रहने वाला है और सोनू सिंह जो कि लालगंज का रहने वाला है वह भी एलआईसी लूट कांड में शामिल था. एलआईसी के लूटे गए 52 लाख रुपए का इन अपराधियों के द्वारा आपसी। बंटवारा किया गया जिसमें राहुल झा के द्वारा अपने हिस्से के पैसे से गांव में अपने पिता के नाम पर जमीन खरीदा गया अपराधी सोनू सिंह के द्वारा अपने हिस्से के पैसे को अपने रिश्तेदार के फैक्ट्री में इन्वेस्ट किया गया पुलिस अधीक्षक हरप्रीत कौर ने बताया कि इस मामले पर तहकीकात की जा रही है और जल्द ही संपत्ति जप्त करने की कार्रवाई की जाएगी. उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान यहे भी खुलासा हुआ कि राजद नेता रघुवर राय की हत्या सुपारी देकर कराई गई थी। जिसमें राहुल झा और मोनू झा को एक एक लाख रुपए दिए गए. रघुवर राय की हत्या के पीछे जमीन का विवाद बताया गया और जिससे राजद नेता का विवाद चल रहा था उन्हीं लोगों के द्वारा हत्या की साजिश रची गई.समस्तीपुर पुलिस को मिली बड़ी सफलता पर पूरा पुलिस महकमा राहत की सांस ली है वही एसपी हरप्रीत कौर ने अपराधियों के गिरफ्तारी के लिए बनाई गई टीम के सदस्यों को पुरस्कृत करने के लिए अनुशंसा करने की बात कही है।

हिंदू-मुस्लिम एकता की अनूठी मिसाल है बिहार का यह शिवमंदिर

समस्तीपुर जिला मुख्यालय से करीब 17 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम मोरवा प्रखंड के सुल्तानपुर मोरवा में स्थापित हैं- खुदनेश्वर महादेव।मंदिर का नाम खुदनी नामक मुस्लिम महिला के नाम पर रखा गया है, जिसको इस स्थान के खुदाई के दौरान शिवलिंग मिला और तत्पश्चात वह भगवान शिव की भक्त बन गयी। खुदनी बीवी की मृत्यु प्रश्चात उसकी इच्छानुसार उसके पार्थिव शरीर को शिवलिंग से एक गज दक्षिण में दफना दिया गया। इसके बाद इस स्थान का नाम खुदनी बीवी के नाम पर खुदनेश्वर स्थान रख दिया गया।यह सामाजिक सौहार्द एवं साम्प्रदायिक एकता का अनुपम स्थल है। यहां बाबा खुदनेश्वर के शिवच्लग एवं खुदनी बीबी के मजार की पूजा अर्चना श्रद्धा एवं विश्वास के साथ की जाती है। यह स्थल अपने आप में अद्वितीय है।

जनश्रुति

प्रचीन च्कवदन्ती है कि सात सौ वर्ष पूर्व यहां घनघोर जंगल था जहां आस पास के लोग मवेशी चराया करते थे। वहीं मुस्लिम बाला खुदनी बीबी अक्सर गाय चराया करती थी। परन्तु, शाम के समय गाय के थन से दूध नहीं निकलता था। इस पर परिवार वालों को आश्चर्य हुआ। एक दिन गाय चराने के क्रम में खुदनी ने देखा कि गाय एक झुरमुट में खड़ी है तथा उसके थन से अपने आप एक निश्चित स्थान पर दूध गिर रहा है। यह देख उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। इस घटना को जब लोगों ने सुना तो उस स्थल पर खुदाई की गई। जहां भव्य शिवच्लग दिखाई पड़ा। खुदाई के क्रम में कुदाल लगने से शिवच्लग का उपरी भाग कट गया जो साक्ष्य के रूप में आज भी देखा जा सकता है। खुदनी बीबी के मरणोपरान्त शिव के स्वप्न के मुताबिक शिवच्लग के बगल में मात्र डेढ़ गज की दूरी पर उन्हें दफनाया गया। उन्हीं के नाम पर इस स्थल का नामकरण खुदनेश्वर स्थान पड़ा। ब्रिटिश समय में नरहन स्टेट ने 1858 में एक मंदिर का निर्माण कराया। जिसकी देख-रेख के लिए पुजारी भी नियुक्त किया गया। कालान्तर में मंदिर की जीर्ण-शीर्ण अवस्था को देख आपसी सहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण प्रारंभ किया गया। निर्माण के क्रम में 2008 में बिहार धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष किशोर कुणाल का ध्यान आकर्षित कराया गया। न्यास बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा स्थल निरीक्षण के उपरान्त पंजीकरण के साथ आर्थिक सहायता करते हुए पर्यटन स्थल बनाने की घोषणा की गई। इस धाम का पंजीयन संख्या- "3783 श्री शिव मंदिर खुदनेश्वर धाम" मोरवा है।

आवागमन

समस्तीपुर जिला मुख्यालय से बस के द्वारा दक्षिण-पश्चिम में 15 किमी पर गंगापुर चौक है। वहां से लगभग 2 किमी दक्षिण खुदनेश्वर धाम अवस्थित है। ताजपुर चौक से 5 किमी दक्षिण-पूर्व की ओर खुदनेश्वर धाम अवस्थित है जहां से निजी वाहन के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। मंदिर के दक्षिण दिशा में मात्र 5 किमी की दूरी पर एनएच 103 पर सरैया चौक है, जहां से निजी वाहन द्वारा धाम तक पहुंचा जा सकता है। पूजा अर्चना-वैसे तो यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है, परन्तु पूरे सावन, शिव पंचमी एवं महा शिवरात्रि के अवसर पर भारी मेला का भव्य आयोजन होता है। इस अवसर पर आस-पास का क्षेत्र भक्ति रस में सराबोर रहता है, तथा हर-हर बम-बम के मत्रोच्चार से दिशाएं निनादित हो उठती हैं।

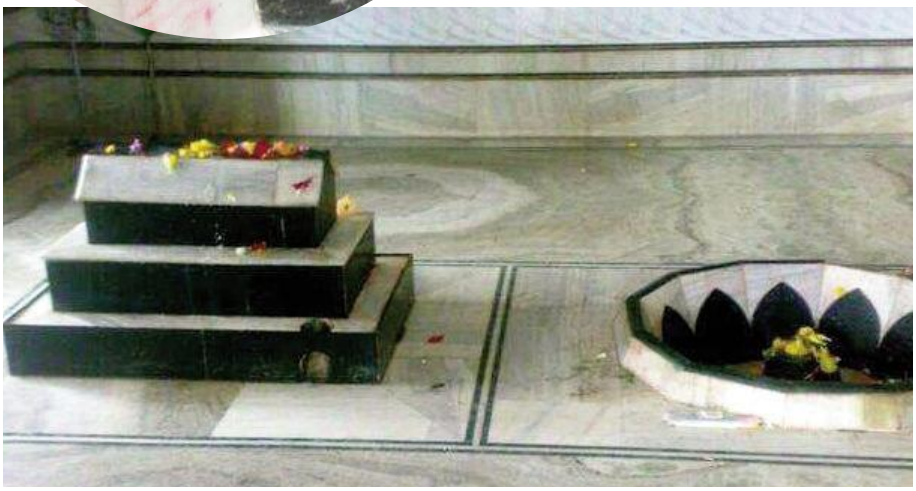

प्रथम महिला सांसद बनकर कविता सिंह ने रचा इतिहास

सचिन कुमार पर्वत/ सिवान

पूरे देश में उठे प्रचण्ड मोदी लहर से सिवान लोकसभा सीट भी अछूता नहीं रहा।यहां भी एनडीए उम्मीदवार जदयू विधायक कविता सिंह ने महागठबंधन उम्मीदवार राजद की हेना शहाब को करारी शिकस्त देकर सिवान की प्रथम महिला सांसद बनकर इतिहास रच दिया।चुनाव से पहले व नामांकन के साथ ही डिजाइनर पत्रकारों एवं स्वघोषित राजनीतिक विश्लेषकों द्वारा हेना शहाब की जीत सुनिश्चित बता कर मतदाताओं को भ्रमित किया जाता रहा।अप्रैल अंक में चर्चित बिहार ने इस सीट का तथ्यात्मक एवं सटीक विश्लेषण किया था।जिसमें यह बताया गया था कि जनता सरकार के राष्ट्रवाद और विकास के मुद्दे तथा सर्जिलकल एवं एयर स्ट्राइक जैसे साहसिक फैसलों एवं आतंक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के कारण जनता का झुकाव मोदी सरकार के प्रति ज्यादा है और इसी मुद्दे पर मतदान करने के लिए गोलबन्द है।साथ ही कविता सिंह का विधायक के रूप में कार्य से जनता के मन में कविता के प्रति झलक रहा विश्वास और मिल रहे समर्थन के कारण कविता सिंह की जीत की सम्भवना ज्यादा बताई गई थी।और हुआ वही हेना शहाब के समर्थन में एम वाई का बनता दिख रहा समीकरण प्रचण्ड मोदी लहर में बनने से पहले ही टूट गया। सिवान के मतदाताओं ने जाती धर्म और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर मोदी के राष्ट्रवाद और विकास के फामूर्ले के समर्थन में दिल खोलकर मतदान किया।जहांतक एनडीए का सवाल है भाजपा के कई जनाधारविहीन स्वयम्भू नेता कविता सिंह को हराने के लिए गोबन्द दिखे,लेकिन जनता की गोलबन्दी के आगे वे बेअसर साबित हुए।जागरूक मतदाताओं ने साबित कर दिया कि लोकतंत्र में जनता ही मालिक है किसी

पार्टी विशेष और व्यक्ति विशेष का बंधुआ नहीं है मतदाता।भितरघात राजद में भी दिखी जब उसके एक बड़े नेता जो जाती विशेष के नेता भी रहे हैं अपनी जाति के मतदाताओं को हेना शहाब के पक्ष में नहीं कर पाए,सूत्रों की मानें तो अपनी राजनितिक कैरियर बचाने के लिए उन्होंने हेना शहाब के लिए अपनी जाति का जनसमर्थन हासिल करने का कोई विशेष प्रयास नहीं किया।फलस्वरूप उन मतों का झुकाव मोदी के तरफ बढ़ता चला गया।मुख्य मुकाबला एनडीए महागठबंधन और सीपीआई एमएल उममीदवार के बीच था।जिसमें एनडीए से जदयू की कविता सिंह 448473 मतों के साथ पहले तो वहीं राजद की हेना शहाब 331515 दूसरे तथा सीपीआई के अमरनाथ यादव 74644 मतों के साथ तीसरे स्थान पर रहे।इस प्रकार कविता सिंह ने हेना शहाब को 116958 मतों के भारी अन्तर से पराजित कर इतिहास रच दिया।ऐसा पहली बार हुआ जब मतदाता किसी के पक्ष में किसी नेता के कहने और मना करने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और मतदाताओं ने दिल की बात सुना और मोदी को चुना।इस जीत के पीछे नगर परिषद के पूर्व उपसभापति भाजपा नेता कर्णजीत सिंह,पूर्व जिलाध्यक्ष रामाकांत पाठक,राहुल तिवारी और देवेन्द्र गुप्ता सहित जदयू की पूरी टीम महत्वपूर्ण योगदान रहा।वैसे देखा जाए तो मोदी लहर के साथ ही कविता सिंह के पति और राष्ट्रीय युवा हिन्दू वाहिनी के बिहार प्रदेश अध्यक्ष जदयू नेता अजय सिंह का विरोधियों के प्रति आक्रामक और सहयोगियों एवं आम आदमी के प्रति उदार और स्पष्ट वयत्कित्व तथा उदार हिन्दुत्व की क्षवि असरदार साबित हुआ।युवाओं में लगातार बढ़ रही लोकप्रियता के कारण अजय सिंह को बिहार का दूसरा योगी से पुकारा जा रहा है।वे हिंदुत्व का प्रभावी चेहरा बनकर तेजी से उभरे हैं।जिसके कारण लोकसभा चुनाव में उनके नाम पर भी अपार समर्थन मिला जो कविता सिंह को ऐतिहासिक जीत दिलाने में महत्वपूर्ण रहा।मतगणना के दौरान स्वयं को पराजित होता देख हेना शहाब ने मतगणना केंद्र पर जाकर मतगणना रोकने और ईवीएम की जगह बैलेट दे मतदान कराने की मांग करने लगीं और जिला निवार्ची पदाधिकारी सह डीएम रंजीता को एक आवेदन भी दिया।लेकिन डीएम ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला देते हुए हेना शहाब के मांग को सिरे से खारिज कर दिया। मतगणना समाप्त होते ही कविता सिंह को विजयी होने का प्रमाणपत्र भी जारी कर दिया गया। इसके बाद राजद समर्थकों ने पुलिस पर पथराव शुरू कर माहौल खराब करने का भरपूर कोशिश किया लेकिन प्रशासन की मुस्तैदी के आगे उनकी एक न चली और पुलिस ने उपद्रवियों को दौड़ा दौड़ा कर पीटा। उपद्रवियों को काबू करने के लिए पुलिस को हवाई फायरिंग भी करनी पड़ी।चुनाव जीतने के बाद कविता सिंह ने प्रेस से कहा कि,ह्ल सबका साथ सबका विकास और न्याय के साथ विकास के मुद्दे के साथ वो समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने का कार्य करेंगी,साथ ही सिवान में विकास की गति को और तेज करने के लिए कार्य करेंगी।

वहीं उनके पति अजय सिंह ने कहा कि, पाकिस्तान से प्रेम करने वालों को जनता ने नकार दिया है,मजबूत एवं सुरक्षित समृद्ध राष्ट्र निर्माण के लिए लोगों ने मतदान किया है,यह लोकतंत्र की जीत है और सिवान की सम्मानित जागरूक स्वाभिमानी जनता की जीत है जिसने जाती धर्म से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद को चुना"। सिवान की जनता ने जिस उम्मीद और आकांक्षा के साथ भारी मतों से विजयी बनाकर संसद भेजने कार्य किया है,उसे हर हाल में पूरा किया जाएगा।उसपर खरा उतरा जाएगा।और सबके मान-सम्मान की सुरक्षा के लिए और उनकी सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

बिहार की बेटी का कमाल

पटना की साक्षी प्रिया मॉडलिंग, एक्टिंग में मचा रही है धूम

साक्षी प्रिया बिहार की जानी मानी एक्टर और मॉडल है। इन्होंने बिहार में मॉडलिंग की दुनिया में अपना परचम लहराने के बाद माया नगरी मुंबई की ओर प्रस्थान किया है। जहां इस फिल्ड में असीम संभावनाएं है। बहुत कम समय में ऊंचाई की पहुंचना आसान काम नहीं है। साक्षी प्रिया बताती है कि कड़ी मेहनत के बाद उन्हें यह सफलता मिली है। बिहार और बिहार से बाहर कई सारे ब्यूटी पेजेंटस और रैंप शो कर चुकी है। अपने वाले समय में वे टीवी सीरियल में दिखने वाली हैं। जी पूवईया एवं बिग मैजिक गंगा जैसे टीवी चैनलों में काम कर चुकी है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने कैबिनेट का किया विस्तार

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज अपने कैबिनेट का विस्तार किया। विस्तार के क्रम में आठ नये मंत्रियों ने शपथ लिया। केंन्द्र में मोदी कैबिनेट के गठन के बाद आज हुए विस्तार में बीजेपी और लोजपा के सदस्यों को शामिल नहीं किया गया। इस विस्तार में अधिकतर पिछड़ी जातियों को प्रतिनिधित्व दिया गया है।

संजय झा, अशोक चौधरी, श्याम रजक, नीरज कुमार, नरेन्द्र नारायण यादव, लक्ष्मेश्वर राय, रामसेवक सिंह और बीमा भारती कैबिनेट में शामिल किये गये हैं।

आज राजभवन में आयोजित समारोह में सभी मंत्रियों ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। गौरतलब है कि संजय झा पूर्व में भाजपा में थें और नीतीश कुमार के काफी करीब माने जाते हैं। श्याम रजक पहले भी मंत्री रहे हैं। अशोक चौधरी कांग्रेस से जदयू में आये हैं. श्याम रजक को उद्योग विभाग अशोक चौधरी को भवन निर्माण विभाग, बीमा भारती को गन्ना विभाग, संजय झा को जलसंसाधन का मंत्री, नीरज कुमार को सूचना एवं जन संपर्क विभाग का मंत्री, रामसेवक सिंह को समाज कल्याण मंत्री बनाया गया है । नरेंद्रन नारायण यादव को विधि मंत्री बनाया गया है। जयकिशोर सिंह से भवन निर्माण विभाग वापस ले लिया गया है. अब वे सिर्फ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के मंत्री रहेंगे जबकि भवन निर्माण मंत्री को अब योजना एवं विकास विभाग का मंत्री बनाया गया है.डा. प्रेम कुमार को पशुपालन विभाग का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है.

राष्ट्रमंडल वेटलिफ्टिंग चैम्पियनशिप के लिए चुनी गई सृष्टि सिंह

बिहार के सिवान जिले के गुठनी प्रखंड के मैरिटार गांव निवासी पूर्व मुखिया विंध्यांचल सिंह की सुपुत्री सृष्टि सिंह जुलाई माह में समोआ की राजधानी ऐपिया में आयोजित होने वाले राष्ट्रमंडल वेटलिफ्टिंग चैम्पियनशिप के लिए चुनी गई है सृष्टि सिंह का चयन बीते दिनों एन आई एस पटियाला में आयोजित एक चयन खेल स्पर्धा के दौरान किया गया इस खेल के दौरान 87 किलो भारवर्ग स्नैच में 96 किलोग्राम क्लीन और जर्क में 118 किलोग्राम यानी कुल 214 किलोग्राम भार उठाया। समोआ देश में राष्ट्रमंडल वेटलिफ्टिंग चैम्पियनशिप का आयोजन 7 से 14 जुलाई माह में होना है,,2010 में हुए राष्ट्रमंडल खेलों का हिस्सा सृस्टि रह चुकी है इस खेल दौरान इन्होंने भारत को पदक देने से चूक गई थी। जापान इंडोनेशिया जकार्ता बुल्गारिया सहित कई देशों में भारत के लिए प्रतिधित्व कर चुकी है

दरभंगा में चिता पर बसा मां काली का धाम

बिहार के दरभंगा जिले में काली रूप में मां श्यामा बड़े ही भव्य रूप में भक्तों को दर्शन देती हैं. इस मंदिर की सबसे खास बात यह है कि यह मंदिर ने केवल चिता पर बना है, बल्कि मंदिर के अंदर हर तरह के मागंलिक कार्य भी किए जाते हैं.

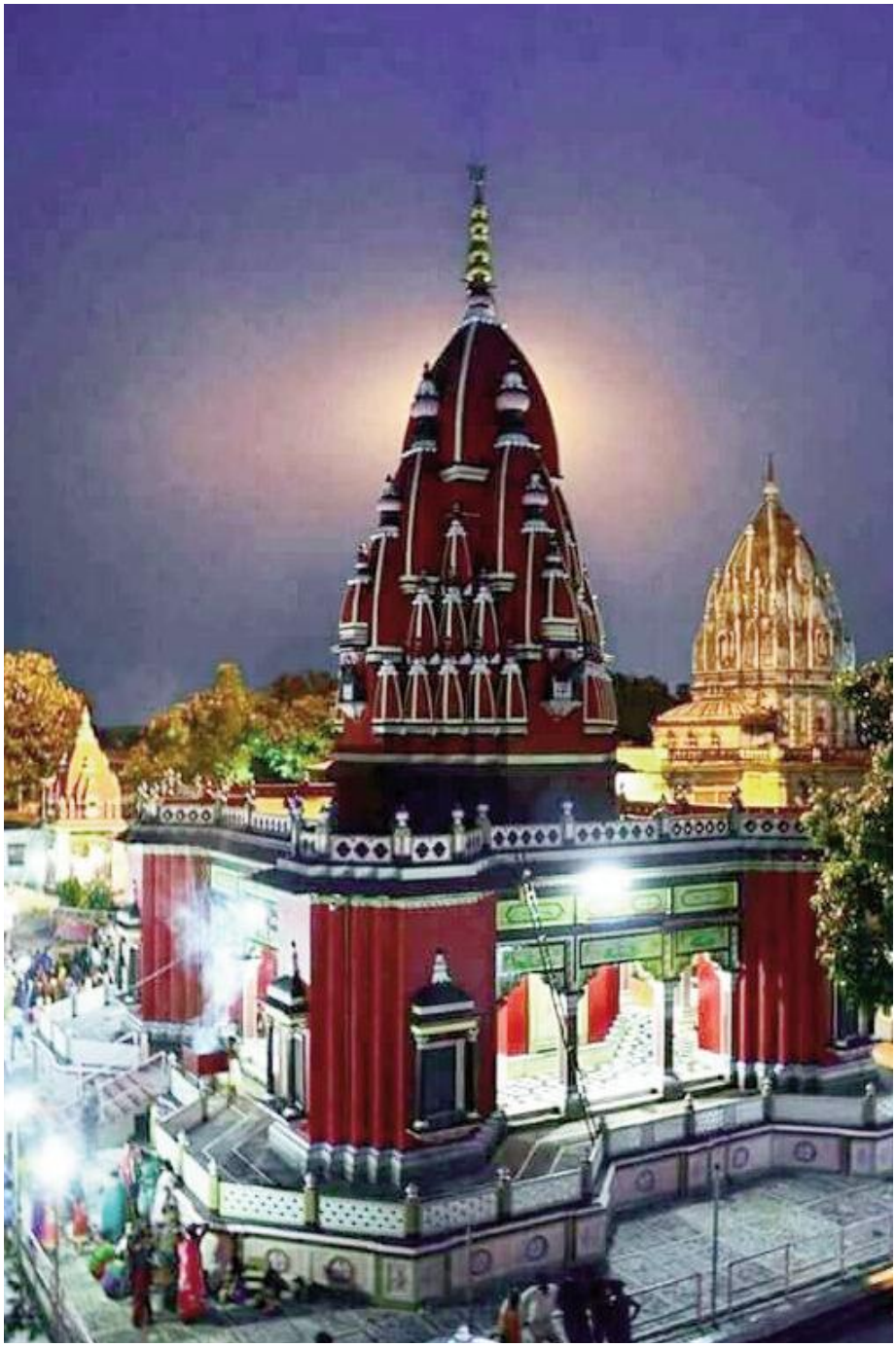

बिहार के दरभंगा जिले में मां काली का यह भव्य मंदिर मौजूद है, जिन्हें यहां भक्त श्यामा माई के नाम से पुकारते हैं. इस मंदिर के निर्माण की कहानी जिसे सुनकर सब हैरान हो जाते हैं. मां काली का यह मंदिर दरभंगा राज परिवार के महान साधक महाराज रामेश्वर सिंह की चिता पर बना है. इस मंदिर के अंदर दक्षिण दिशा की ओर एक खास स्थान पर आज भी लोग साधक महाराज रामेश्वर सिंह के चिता की तपिस को महसूस करते हैं, फिर चाहे कड़ाके की ठंड ही क्यों न पड़ रही हो. यहां के लोगों का मानना है कि पूरे भारत में काली की इतनी बड़ी मूर्ति कहीं नहीं है. मूर्ति का विग्रह अलौकिक और अविस्मरणीय है.

भक्तों को मां श्यामा के दर्शन से ही अदभुत सुख की प्राप्ति होती है. कहते है अगर भक्त नम आंखो से कुछ मांगते हैं तो उनकी इच्छा अवश्य पूरी होती है. इस विशालकाय मंदिर की स्थापना 1933 में दरभंगा महाराजा कामेश्वर सिंह ने की थी, जिसमें मां श्यामा की विशाल मूर्ति भगवन शिव की जांघ एवं वक्षस्थल पर अवस्थित है. मां काली की दाहिनी तरफ महाकाल और बायीं ओर भगवान गणेश और बटुक की प्रतिमाएं स्थापित हैं. चार हाथों से सुशोभित मां काली की इस भव्य प्रतिमा में मां के बायीं ओर के एक हाथ में खड्ग, दूसरे में मुंड तो वहीं दाहिनी ओर के दोनों हाथों से अपने पुत्रों को आशीर्वाद देने की मुद्रा में विराजमान हैं. मां श्यामा के दरबार में होने वाली आरती का विशेष महत्व है. माना जाता है कि जो भी मां की इस आरती का गवाह बन गया उसके जीवन के सारे अंधकार दूर हो जाते हैं, साथ ही भक्तों की समस्त मनोकामना भी पूरी हो जाती है. मंदिर के गर्भगृह में जहां एक तरफ काली रूप में मां श्यामा के भव्य दर्शन होते हैं, वहीं दूसरी ओर प्रार्थना स्थल के मंडप में सूर्य, चंद्रमा ग्रह, नक्षत्रों सहित कई तान्त्रिक यंत्र मंदिर की दीवारों पर देखने को मिलते हैं. इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इस मंदिर में मां श्यामा की पूजा तांत्रिक और वैदिक दोनों ही रूपों में की जाती है. आमतौर पर हिन्दू रीती रिवाज के अनुसार यह परंपरा रही है की किसी भी व्यक्ति का कोइ भी मांगलिक संस्कार होने के एक साल तक वह श्मशान नहीं जाता है, लेकिन मां श्यामा के इस मंदिर में नए जोड़े मां का आशीर्वाद ही लेने नहीं बल्कि श्मसान भूमि पर बने इस मंदिर अनेकों शादियां भी होती है.

01 वाल्मिकी नगर
बैद्यनाथ प्रसाद महतो, जदयू
3,53,908
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
शाश्वत केदार, कांग्रेस
02 प. चंपारण
डॉ. संजय जायसवाल, भाजपा
2,92,771
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
ब्रजेश कुशवाहा, आरएलएसपी
03 पू. चंपारण
राधा मोहन सिंह, भाजपा
2,86,316
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
आकाश कुमार सिंह, आरएलएसपी
04 शिवहर
रमा देवी, भाजपा
3,39,714
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
सैयद फैजल अली, कांग्रेस
05 सीतामढ़ी
डॉ. सुनील पिंटू, जदयू
2,50,539
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
अर्जुन राय, राजद
06 मधुबनी
अशोक कुमार यादव, भाजपा
4,54,940
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
बद्रीनाथ पूर्वे, बीआईपी
07 झंझारपुर
रामप्रीत मंडल, जदयू
3,22,429
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
गुलाब यादव, राजद
08 सुपौल
दिलेश्वर कामथ, जदयू
2,66,853
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
रंजीत रंजन, कांग्रेस
09 अररिया
प्रदीप सिंह, भाजपा
1, 37,241
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
सरफराज आलम, राजद
10 किशनगंज
डॉ. मो. जावेद, कांग्रेस
34,466
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
सैयद महमूद अशरफ, जदयू
11 कटिहार
दुलार चंद गोस्वामी, जदयू
57,203
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
तारिक अनवर, कांग्रेस
12 पूर्णिया
संतोष कुमार कुशवाहा, जदयू
2,63,461
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
उदय सिंह, कांग्रेस
13 मधेपुरा
दिनेश चंद्र यादव, जदयू
2,77,204
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
शरद यादव, राजद
14 दरभंगा
गोपालजी ठाकुर, भाजपा
2,67,979
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
अब्दुलबारी सिद्दीकी, राजद
15 मुजफ्फरपुर
अजय निषाद, भाजपा
4,06,407
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
राजभूषण चौधरी, भाजपा
16 वैशाली
वीणा देवी, लोजपा
2,34,000
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
रघुवंश प्रसाद सिंह, राजद
17 गोपालगंज (सु)
डॉ. आलोक कुमार सुमन, जदयू
2,86,434
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
सुरेंद्र राम उर्फ महंत, राजद
18 सीवान
कविता सिंह, जदयू
1,16,568
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
हिना शहाब, राजद
19 महाराजगंज
जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, भाजपा
2,28,720
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
रणधीर सिंह, राजद
20 सारण
राजीव प्रताप रूढ़ी, भाजपा
1,36,531
मतों के अंतर से
निकटतम प्रतिद्वंद्वी
चंद्रिका राय, राजद

21 हाजीपुर (सु)
पशुपति कुमार पारस, एलजेपी
2,02,639 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
शिवचंद्र राम, राजद
22 उजियारपुर
नित्यानंद राय, भाजपा
2,77,264 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
उपेंद्र कुशवाहा, आरएलएसपी
23 समस्तीपुर(सु)
रामचंद्र पासवान, लोजपा
2,51,643 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
डॉ. अशोक कुमार, कांग्रेस
24 बेगुसराय
गिरिराज सिंह, भाजपा
4,19,660 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
कन्हैया कुमार, सीपीआई
25 खगड़िया
चौ. महबूब अली कैसर, लोजपा
2,25,329 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
मुकेश सहनी, वीआईपी
26 भागलपुर
अजय कुमार मंडल, जदयू
2,64,911 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
शैलेश कुमार, राजद
27 बांका
गिरिधारी यादव, जदयू
2,00,131 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
जय प्रकाश यादव, राजद
28 मुंगेर
ललन सिंह, जदयू
1,39,450 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
नीलम देवी, कांग्रेस
29 नालंदा
कौशलेंद्र कुमार, जदयू
2,12,601 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
अशोक कुमार आजाद, वीआईपी
30 पटना साहिब
रविशंकर प्रसाद, भाजपा
2,82,656 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
शत्रुघ्न सिन्हा, कांग्रेस
31 पाटलिपुत्र
रामकृपाल यादव, भाजपा
41,549 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
मीसा भारती, राजद
32 आरा
राजकुमार सिंह, भाजपा
1,41,840 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
राजू यादव, सीपीआई (एमएल)
33 बक्सर
अश्विनी कुमार चौबे, भाजपा
1,15,063 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
जगदानंद सिंह, राजद
34 सासाराम(सु)
छेदी पासवान, भाजपा
1,65,745 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
मीरा कुमार, कांग्रेस
35 काराकाट
महाबलि सिंह, जदयू
84,901 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
उपेंद्र कुशवाहा, आरएलएसपी
36 जहानाबाद
चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी, जदयू
1,075 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
सुरेंद्र यादव, राजद
37 औरंगाबाद
सुशील कुमार सिंह, भाजपा
68,043 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
उपेंद्र प्रसाद, हम
38 गया (सु)
विजय कुमार मांझी, जदयू
1,51,623 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
जीतनराम मांझी, हम
39 नवादा
चंदन कुमार, लोजपा
1,46,770 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
विभा देवी, राजद
40 जमुई (सु)
चिराग कुमार पासवान, एलजेपी
2,41,049 मतों के अंतर से निकटतम प्रतिद्वंद्वी
भूदेव चौधरी, आरएलएसपी

एक रात ने बदल दी चुनावी तस्वीर

फरवरी की एक सर्द रात को श्रीनगर के आम लोग घने काले आसमान में उड़ते जेट फाइटर की आवाज से जग गए थे. कई लोगों को ये आशंका हुई कि युद्ध महज एक धमाके भर की दूरी पर रह गया है. भारत प्रशासित कश्मीर के लोग अपने यहां खाने-पीने का सामान जमा करने लगे. पेट्रोल पंप के सामने लोगों की लाइन लगने लगी तो पेट्रोल पंप पर पेट्रोल कम पड़ने लगा. अस्पताल के डॉक्टरों को दवाइयों का भंडार रखने को कहा गया. घबराये हुए लोग अपने बगीचों में बंकर बनाने की सोचने लगे थे. एक बड़े नेता को अब इस बात पर पछतावा हो रहा है कि उन्होंने एयरपोर्ट के पास घर खरीद लिया. उन्हें अब ये अच्छा विचार नहीं लग रहा है. कुछ ही दिनों में भारत के लड़ाकू विमान मिराज 2000 पाकिस्तान की सीमा में दाखिल तक हो गए. भारत ने कहा कि उसके जेट विमानों ने लेजर गाइडेड बमों से खैबर पख़्तूनख़्वाह के बालाकोट में चरमपंथी शिविरों को निशाना बनाया. साल 1971 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद ये पहला मौका था जब भारत ने नियंत्रण रेखा के उस पार जाकर हवाई हमला किया. समझदारी यही कहती है कि परमाणु हथियार से संपन्न पड़ोसियों को सोच समझकर कदम उठाना चाहिए. लेकिन भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस नीति को अब खारिज कर दिया है.

इस हमले की वाहवाही करते हुए 68 वर्षीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये हमला पुलवामा में फरवरी में ही भारतीय सुरक्षा बल के जवानों पर हुए घातक हमले का वाजिब और मुंहतोड़ जवाब है. मोदी ने लोगों से ये भी कहा कि उन्होंने इस हमले के लिए सेना को खुली छूट दी थी. एक सभा में तो उन्होंने ये भी कहा, लोगों का खून उबल रहा है.ष एक दूसरी सभा में उन्होंने कहा, मेरे दिल में भी वही आग जल रही है जो आपके अंदर जल रही है. दरअसल, कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से आपसी दुश्मनी का युद्ध क्षेत्र रहा है. दोनों पक्ष इस खूबसूरत से मुस्लिम बहुल इलाके पर अपना अपना दावा जताते हैं.

लेकिन दोनों ही देशों के पास इसके कुछ ही हिस्सों पर नियंत्रण है. दोनों ही पक्ष एक-दूसरे से खतरा भी महसूस करते हैं. दोनों देशों के बीच दो युद्ध और इस इलाके में एक झड़प हो चुकी है. लेकिन इस बार भारत के हमले के पीछे पर्याप्त वजह मानी जा सकती है. इसी साल 14 फरवरी को भारत के अर्धसैनिक बलों के 78 बसों के काफिले को विस्फोटकों से भरी एक मिनी वैन ने निशाना बनाया. भारी सुरक्षा के बीच हाइवे पर श्रीनगर से 19 किलोमीटर दूर हुए इस हमले में 46 जवानों की मौत हुई. ये इस इलाके में दशकों बाद भारत के सुरक्षा बलों पर सबसे खतरनाक हमला था. पाकिस्तान से संचालित चरमपंथी समूह श्जैश-ए-मोहम्मदश ने इस हमले के बाद जिम्मेदारी ली थी. ऐसे में मोदी की प्रतिक्रिया को इस हमले के जवाब के तौर पर देखा गया. प्रधानमंत्री की भारतीय जनता पार्टी ने हमेशा ये कहा है कि राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता उनके मूल तत्वों में शामिल है.

मोदी ने उस भाव में अपनी ताकत और अचल राष्ट्रवाद से नया उत्साह पैदा किया है. मोदी समर्थकों का मानना है कि वे अपनी बातों पर खरे उतरे और पाकिस्तान को करारा जवाब दिया है. हालांकि सच्चाई इतनी सरल भी नहीं है, जितनी दिख रही है. हवाई हमले के 24 घंटे के भीतर पाकिस्तान ने भारत के एक लड़ाकू जेट विमान को अपने शासन वाले कश्मीर में मार गिराया और एक भारतीय पायलट को गिरफ्तार भी कर लिया. इसके बाद दोनों देशों पर तनाव कम करने लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ता गया जिससे पाकिस्तान ने भारतीय पायलट को रिहा करने की पेशकश की. एक दिन बाद भारतीय पायलट स्वदेश लौट आए. वहीं मोदी ने इसे अपने पक्ष में प्रचारित करने का कोई मौका नहीं गंवाया. उन्होंने ऐलान कर दिया, देश सुरक्षित हाथों में है.ष ये मोदी के लिए किसी जीत से कम साबित नहीं हुआ और इसकी कई वजहें भी सामने हैं. मोदी को पसंद करने वाली रेटिंग पिछले कुछ समय से राज्यों में चुनाव हारने के चलते गिरावट की ओर थी. उसमें तेजी से सुधार देखने को मिला. मोदी साल 2014 में देश के प्रधानमंत्री बने, उन्होंने अपने नेतृत्व में हिंदुत्व और राष्ट्रवाद की बात करने वाली बीजेपी को शानदार जीत दिलाई. साल 1984 के बाद ये पहला मौका था जब किसी पार्टी को आम चुनावों में बहुमत हासिल हुआ था. इतने शानदार बहुमत के बावजूद मोदी के कामकाज को लेकर मिश्रित प्रतिक्रियाएं दिख रही हैं. कुछ मामलों में फायदा हुआ है, ज्यादा सड़कें बन गई हैं, ग्रामीण विकास हुआ है, लोगों को सस्ती रसोई गैस दी गई है, गांवों में शौचालय बन गए हैं. एक समान बिक्री कर यानी जीएसटी लागू हो गया है.

इतना ही नहीं पचास करोड़ परिवारों को स्वास्थ्य बीमा देने के लक्ष्य के साथ स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू हुई है और दिवालिया को लेकर नया कानून भी बना है. लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था ठीक से काम नहीं कर रही है. खेती किसानी कर रहे लोगों को अपने फसल का मामूली दाम मिल रहा है. याद रहे कि देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा खेतीबाड़ी से जुड़ा हुआ है. देश में बेरोजगारी बढ़ रही है और विवादास्पद नोटबंदी से गरीबों को काफी नुकसान हुआ है. वहीं, सामाजिक तौर पर भारतीय जनता पार्टी के उग्र हिंदू राष्ट्रवाद से देश में ध्रुवीकरण बढ़ा है और अल्पसंख्यक घबराए हुए हैं. इसके साथ-साथ भारत फेक न्यूज की महामारी की चपेट भी आ गया है. अलग राय रखने वालों को राष्ट्रद्रोही बताने और इस आरोप में जेल भेजने तक का चलन बढ़ा है. इन सबके बीच नरेंद्र मोदी एक निर्णायक आम चुनाव का सामना कर रहे हैं. कुछ मामलों में ये एक तरह से मोदी पर जनमत संग्रह होने वाला है. कई लोगों का मानना है कि मोदी भारत की छवि को इस रूप में ढालना चाहते हैं- श्राष्ट्रवादीश, श्सामाजिक तौर पर संकीर्णश और श्खुले तौर पर देशभक्त. बहरहाल 11 अप्रैल से 19 मई तक, करीब 40 दिनों तक चलने वाले मैराथन चुनाव में तकरीबन 90 करोड़ लोग अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे. ये भी कहा जा रहा है कि ये देश का सबसे बड़ा, सबसे लंबे समय तक चलने वाला और सबसे महंगा चुनाव साबित होने वाला है. लेकिन सवाल वही है, जैसा कुछ लोग पूछ भी रहे हैं, क्या ये चुनाव भारत की आत्मा को बचाने की लड़ाई है? गुजरात के वडोदरा की गलियों में तेज धूप के बीच राजनबेन धनंजय भट्ट का चुनावी अभियान जोरों पर दिखा. 56 साल की भट्ट यहां बीजेपी की उम्मीदवार हैं. वे काली चमचमाती जीप की छत से बाहर निकलकर हाथ जोड़े लोगों का अभिवादन कर रही हैं. उनका स्वागत करने के लिए बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएं और बच्चे इकट्ठा हुए हैं. ये लोग उन्हें माला पहना रहे हैं, आशीर्वाद दे रहे हैं और घर में बनी मिठाइयां और जूस भी ऑफर कर रहे हैं. जब भट्ट जीत का निशान बनाती हैं तो गली के मकानों और छतों से उन्हें उत्साहवर्धक जवाब मिलता है. पूरी गली भगवा रंग में डूबी नजर आती है. भगवा साफा बांधे, टोपी पहने, रुमाल बांधे, गमछा लगाए मोटरसाइकिल पर सवार युवा भट्ट की रैली के आगे-आगे चल रहे हैं. एक ट्रक भी साथ में था जिसमें डीजे तेज धुनों पर संगीत बजा रहा था और आतिशबाजी भी देखने को मिली. कोलाहल के इस उत्सव में हर ओर से एक ही आवाज गूंजती है. पार्टी के युवा समर्थक उन्मादी एक स्वर से मोदी, मोदी, मोदी के नारे लगा रहे हैं. ये नारे देखते-देखते बीजेपी के 2019 के चुनावी अभियान की गीत

से मिल जाते हैं, ये गीत है, मोदी है तो मुमकिन है. मोदी का चेहरा लोगों की टीशर्ट, टोपी, होर्डिंग और कार पर सब जगह दिखता है. मोदी खुद तो मौजूद नहीं हैं, लेकिन हर तरफ वे नजर आते हैं. यहां के बीजेपी कार्यकर्ता इस बात को लेकर निश्चिंत नहीं हैं कि वे यहां चुनाव प्रचार करने का वक्त निकाल पाएंगे या नहीं. खुद कभी नहीं हार मानने वाली भट्ट कहती हैं, मोदी जी यहां से चुनाव नहीं लड़ रहे हैं. लेकिन उनकी छवि लार्जर दैन लाइफ वाली है, जो लोग मुझे वोट दे रहे हैं, वे लोग मोदी जी को वोट दे रहे हैं. साल 2014 में मोदी वडोदरा संसदीय सीट से 5,70,128 मतों के विशाल अंतर से जीते थे. बाद में उन्होंने उत्तर प्रदेश की वाराणसी सीट से प्रतिनिधित्व किया और वडोदरा सीट खाली कर दी थी. कुछ महीने बाद हुए उपचुनाव में पूर्व नगरपालिका पार्षद और डिप्टी मेयर रहीं भट्ट पार्टी के उम्मीदवार को तौर पर चुनाव जीतने में कामयाब हुई.

इस बार वह दूसरी बार संसद पहुंचने की कोशिश कर रही हैं. बीजेपी के गढ़ में उनके सामने कोई चुनौती भी नजर नहीं आती. बीजेपी यहां 1996 से लगातार चुनाव जीतती आई है और इन दिनों तो विपक्षी उम्मीदवार कहीं नजर भी नहीं आ रहे हैं. भट्ट बताती हैं, ये चुनाव मेरी जीत का नहीं है, बल्कि जीत के अंतर का है. मेरा लक्ष्य इस सीट पर कम से कम छह लाख वोट से जीतकर गुजरात के लिए नया रिकॉर्ड बनाना है. भट्ट के मुताबिक, हमलोग जो भी यहां करते हैं वो नरेंद्र भाई को समर्पित कर देते हैं. लोग यहां उन्हें ही वोट देते हैं. गुजरात उनकी जन्मभूमि है और वडोदरा उनका कर्मक्षेत्र रहा है. बहरहाल, दिलचस्प ये है कि भारत के सबसे शक्तिशाली माने जाने वाले नरेंद्र मोदी के बारे में बेहद कम जानकारी मौजूद है. वडोदरा से यही कोई 200 किलोमीटर दूर देहाती इलाके वडनगर में एक चाय वाले के परिवार में मोदी का जन्म हुआ. मोदी की जीवनी लिखने वाले एक लेखक के मुताबिक मोदी का अपने परिवार या फिर वडनगर के दोस्तों के साथ कोई खास रिश्ता नहीं था, अपनी युवावस्था में तो उन्होंने इस इलाके को लगभग भुला ही दिया था. मोदी जब किशोर ही थे, तब परंपरागत तौर पर उनकी शादी हुई थी. इस सच्चाई का पता साल 2014 में उस वक्त चला जब उन्होंने चुनाव के लिए अपना नोमिनेशन दाखिल किया था. वे अपनी पत्नी जसोदाबेन के साथ केवल तीन साल तक रहे.

जीवन के शुरूआती दिनों में ही मोदी दक्षिणपंथी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ गए थे. संघ को बीजेपी का मातृ संगठन माना जाता है. थोड़े ही समय में मोदी संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का गठन 1925 में हुआ था. इस संगठन का ध्येय भारत की बहुसंख्यक हिंदू आबादी की एकता और सुरक्षा है. संघ खुद को प्राथमिक तौर पर राजनीतिक संगठन के तौर पर पेश भी नहीं करता, इसका मिशन स्टेटमेंट सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर जोर देता है. ब्रिटिश राज के जमाने से ही संघ हिंदू राष्ट्रवाद की वकालत करने लगा. साल 1948 में महात्मा गांधी की हत्या संघ के ही एक पूर्व सदस्य ने की थी. आज आरएसएस के छह हजार से ज्यादा पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं. भारत भर में फैली 80 हजार शाखाओं में करीब 20 लाख लोग शामिल होते हैं. बीजेपी, आरएसएस की राजनीतिक इकाई है. बीजेपी का विश्वास हिंदुत्व में हैं, ये विचारधारा हिंदुओं की श्रेष्ठता और हिंदू रीति रिवाजों के मुताबिक जीवनशैली को स्थापित करना चाहती है. बीजेपी कार्यकताओं के मुताबिक आरएसएस के अपने शुरूआती दिनों में मोदी वडोदरा में ज्यादा वक्त रहे थे और संघ की ओर से मिले घर में लोगों के साथ कमरा शेयर करते थे. पार्टी के एक कार्यकर्ता ने बताया, वे कभी कभार बाइक से बाहर जाते थे और संघ के कैडरों से मिलते थे. वे यहां की हर गली के बारे में जानते हैं और इस शहर में अभी भी उनके दोस्त मौजूद हैं.

साल 2014 में देश का प्रधानमंत्री बनने से पहले 13 साल तक मोदी गुजरात के बेहद प्रभावी और बिजनेस फ्रेंडली मुख्यमंत्री के तौर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुए थे. उन्हें गुजरात को आर्थिक तौर पर सशक्त बनाने का श्रेय दिया जाता है, हालांकि उनके मोदीनॉमिक्स को लेकर अर्थशास्त्रियों में काफी बहस होती रही है. इस दौरान मोदी पर ये भी आरोप लगा कि साल 2002 के सांप्रदायिक दंगों पर काबू पाने के लिए उन्होंने पर्याप्त कदम नहीं उठाए. इस दंगे में 1000 से ज्यादा लोग मारे गए थे. मरने वालों में ज्यादातर मुसलमान थे. ये हिंसा गोधरा में एक ट्रेन के डिब्बे में आग लगाए जाने के बाद भड़की थी, इस आग में 60 हिंदू तीर्थ यात्रियों की मौत हो गई थी. ट्रेन के डिब्बे में आग लगाने का आरोप मुस्लिम समुदाय पर लगाया गया था. मोदी को बीजेपी ने 2013 में चुनाव अभियान समिति का प्रमुख बनाया और उनके नेतृत्व में ही चुनाव लड़ने का फैसला लिया. एक साल बाद वे देश के प्रधानमंत्री बन गए. उनके समर्थक उन्हें बेहद परिश्रमी नेता मानते हैं. समर्थकों का कहना है कि वे अल्पसंख्यकों को संतुष्ट करने के लिए कोई उल्टा-सीधा फैसला नहीं कर सकते. हालांकि ये जानना जरूरी है कि भारत में करीब 17 करोड़ मुस्लिम आबादी है. मोदी के समर्थक ये भी बताते हैं कि वे सामान्य परिवार से निकलकर बने सेल्फमेड शख्सियत हैं. ऐसा कहते हुए वे मोदी की तुलना सुविधासंपन्न नेहरू-गांधी परिवार से करते हैं. मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस की कमान इसी परिवार के हाथों में रही है और परिवार ने करीब 50 साल तक देश पर शासन भी किया है. बीजेपी के एक वरिष्ठ नेता बताते हैं, ष्मोदी यहां बीजेपी से ज्यादा लोकप्रिय हैं. वे चमत्कार की तरह हैं. वे गुजरात के सर्वाधिक लोकप्रिय मुख्यमंत्री रहे और अब वे भारत के सबसे बड़े नेता हैं. गुजरातियों को उन पर गर्व है. वडोदरा के एमएस यूनिवर्सिटी में राजनीतिक विज्ञान के प्रोफेसर अमित ढोलकिया बताते हैं कि गुजरात में हिंदुत्व की राजनीति का लंबा इतिहास रहा है और इससे मोदी को मदद मिली है. लेकिन वे ये भी कहते हैं, ष्हिंदुओं में अलग-अलग वर्गों के चलते हिंदुत्व की राजनीति की अपनी सीमा है और मोदी इसको समझते हैं. गुजरात में भी, बीजेपी को कभी 48 फीसदी से ज्यादा वोट नहीं मिले. यही वजह है कि वे अब राष्ट्रवाद और विकास की बात ज्यादा करने लगे हैं. हिंदुत्व अभियान में फिलर की तरह इस्तेमाल हो रहा है. अमित ढोलकिया ये भी कहते हैं, एक विचारक के बनिस्बत मोदी एक व्यावहारिक नेता ज्यादा हैं. उन्हें सत्ता पसंद है और यहां के लोग उन्हें पसंद करते हैं.

नवंबर, 2016 की शाम अंबरीश नाग बिश्वास काम पर से घर लौट रहे थे. कोलकाता के पूर्वी हिस्से से वो अपने घर पहुंच पाते उससे पहले उनके मोबाइल फोन की घंटी बजने लगी. उनके एक दोस्त का फोन था जो बहुत घबराया हुआ लग रहा था. उसने तेज आवाज में कहा, ष्नरेंद्र मोदी टीवी पर हैं और वे हम लोगों से हमारा पैसा ले रहे हैं. बिश्वास ने उनसे पूछा, क्या मतलब है तुम्हारा?

तब उनके दोस्त ने थोड़ी सांस लेकर पूरी बात बताई. प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की थी कि उनकी सरकार बड़े मूल्यों के नोट की वैधता खत्म करने जा रही है, अगले चार घंटे के बाद 500 और 1000 रुपये के नोट के चलन पर पाबंदी लग जाएगी. 500 और 1000 रुपये के नोटों का मूल्य भारतीय अर्थव्यवस्था में जितने नोट चलन में थे, उनमें 80 फीसदी से भी ज्यादा था. मोदी ने ये भी बताया कि इस कठोर कदम का उद्देश्य भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना है क्योंकि लोगों के पास अरबों रुपया जमा है जो घोषित नहीं है, अब उन्हें नए नोट लेने के लिए बैंकों में जमा करना होगा. ये भी कहा गया कि इस कदम से जाली नोटों की समस्या से छुटकारा मिलेगा. साथ में भारतीय अर्थव्यवस्था की नकदी पर निर्भरता कम होगी.

उस रात बिश्वास को नींद नहीं आई.

एक डेयरी फर्म में काम करने वाले बिश्वास के पास अपातकालीन जरूरतों के लिए घर में 24 हजार रुपये रखे हुए थे. अब उन्हें बैंक जाकर अमान्य करार दिए गए इन नोटों को जमा कराना था और नए नोट लेने थे. उनकी पत्नी रिंकू घरेलू महिला थीं और बेटी साबोरनी हाई स्कूल में पढ़ती थीं. अगली सुबह जब बिश्वास बैंक पहुंचे, तब बैंक बंद था. बैंक के बाहर भीड़ जमा थी और किसी को मालूम नहीं था कि कितने रुपये बदले जाएंगे. बिश्वास पूरे दिन कतार में खड़े रहे लेकिन उन्हें कोई कामयाबी नहीं मिली. अगले दिन वे एक दूसरे बैंक में गए, जहां उनका खाता था लेकिन वहां और भी लंबी कतार थी. लंबी कतार देखकर वे पहले वाले बैंक में ही आ गए. अचानक से उन्होंने हलचल सुनी. छड़ी और नकद और बैंक के कागज वाले प्लास्टिक बैग के साथ कतार में खड़े एक बुजुर्ग आदमी गिर गए थे. चिलचिलाती धूप में घंटों खड़े होने और थकावट के चलते ऐसा हुआ था.

बिश्वास ने आगे बढ़कर उस आदमी को उठाया और कार में बिठाकर अस्पताल तक ले गए. दो घंटे बाद भी बुजुर्ग को होश नहीं आया. बिश्वास बताते हैं, मैं दो दिन काम पर नहीं जा पाया था, कतार में खड़े होने के बाद भी मैं अपने नोट नहीं बदलवा पाया था.ष ऐसे में बिश्वास ने अपने बॉस को फोन करके एक और दिन की छुट्टी मांगी. बिना खाए पिए, आठ घंटे तक कतार में रहने के बाद बिश्वास पैसा तो बैंक में जमा करा पाए लेकिन उन्हें वापस महज दो हजार रुपये ही मिल पाए. बैकों में तेजी से नकद खत्म हो रहा था.

बिश्वास बताते हैं, ये विचित्र स्थिति थी. केवल हमारे जैसे लोग ही नकद के लिए कतारों में लगे थे. पैसे वाले प्रभावी लोग कहां थे, जिनके बारे में कहा जा रहा था कि काफी पैसा जमा कर रखा है. मोदी की घोषणा के बाद देश में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई. शहरों में हर तरफ घबराए लोग नजर आने लगे जो बैंकों में अपना पैसा जमा करा कर, कम मूल्य के नोटों में पैसे निकाल रहे थे.

पॉलिटेक्नीक कोर्स कर बनाये एक अच्छा कॅरियर

इंजीनियरिंग करने में कई साल और कई सारा पैसा लगता है। इसके बाद भी नौकरी लगे न लगे इसकी कोई गॉरंटी नहीं। ऐसे में पॉलिटेक्नीक एक ऐसा कोर्स है जिसकी मदद से आप कम पैसे और कम समय में एक अच्छी जॉब पा सकते हैं।

क्या है पॉलिटेक्नीक कोर्स

पॉलिटेक्नीक कोर्स इंजीनियरिंग की तरह ही है। इंजीनियरिंग एक डिग्री कोर्स है और पॉलिटेक्नीक एक डिप्लोमा कोर्स है। पॉलिटेक्नीक कोर्स करने में इंजीनियरिंग के मुकाबले कम पैसा और समय लगता है। पॉलिटेक्नीक में इंजीनियरिंग की तरह ही कई सारी ब्रांच होती है जिसमें से आप जिस सब्जेक्ट में रूचि रखते हैं उसे चुन सकते हैं। वहीं इसमें एक फायदा और होता है कि आप इस डिप्लोमा को पूरा करके डायरेक्ट इंजीनियरिंग के दूसरे साल में एडमिशन ले सकते हैं।

पॉलिटेक्नीक कोर्स के लिए योग्यता

पॉलिटेक्नीक कोर्स करने के लिए उम्मीदवार का 10वी या 12वी पास होना जरूरी है।पॉलिटेक्नीक कॉलेज में एडमिशन के लिए आपको इंजीनियरिंग की तरह ही एक टेस्ट देना होता है। जिसके अंकों के आधार पर आपको सरकारी कॉलेज मिलता है।कई प्राइवेट कॉलेज में आप सीधे बिना एग्जाम के भी एडमिशन पा सकते हैं। आज देश में कई निजी कॉलेज इस कोर्स को चला रहे हैं।पॉलिटेक्नीक में एडमिशन के लिए होने वाली एग्जाम हर राज्य में अलग-अलग होती है जिसके नाम भी अलग-अलग होते हैं।पॉलिटेक्नीक में एडमिशन के लिए होने वाली एग्जाम में आप जितने ज्यादा मार्क्स लाएंगे आपको उतना अच्छा कॉलेज मिलेगा और आपकी फीस भी कम लगेगी।

पॉलिटेक्नीक कोर्स के फायदे

पॉलिटेक्नीक कोर्स करने का पहला फायदा है कि ये आप दसवी से ही कर सकते हैं। यानि जैसे ही आपने दसवी पास की वैसे ही आप इसके कॉलेज में एडमिशन ले सकते हैं। आपको बता दें कि कई पॉलिटेक्नीक कोर्स में बारहवी पास होना जरूरी है।इन कोर्स में आपको जो भी सिखाया जाता है वो प्रैक्टिकल तरीके से सिखाया जाता है जिससे आपकी नॉलेज काफी अच्छी और प्रैक्टिकल होती है।पॉलिटेक्नीक के कोर्स को करने के बाद आपकी नौकरी लगने की संभावनाएं काफी ज्यादा बढ़ जाती है क्योंकि इस कोर्स को करने के बाद नौकरी का ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ता है।इसे कोर्स को पूरा करने के बाद आप सीधे इंजीनियरिंग के दूसरे साल में

एडमिशन ले सकते हैं।देश में निकलने वाली कई सारी सरकारी नौकरियों जैसे रेल्वे, एसएससी में पॉलिटेक्नीक डिप्लोमा वालों को आसानी से नौकरी मिल जाती है।

पॉलिटेक्नीक में कैसे लें एडमिशन

पॉलिटेक्नीक में एडमिशन लेने के लिए आप दसवी में साइंस, मैथ्स और इंग्लिश अच्छे से पढ़ें क्योंकि इन्हीं से प्रश्न इंट्रेंस एग्जाम में पूछे जाते हैं। अगर आपकी इन सब्जेक्ट पर पकड़ अच्छी होगी तो आप इंट्रेंस एग्जाम में अच्छे मार्क्स ला पाएंगे।दसवी पास होते ही आप पॉलिटेक्नीक की इंट्रेंस एग्जाम के लिए अप्लाईकरें। ये हर स्टेट के लिए अलग होती है तो नजर रखें कि आपकी स्टेट में ये कब होगी। एग्जाम में अच्छे मार्क्स लाने की कोशिश करें जिससे आपका एडमिशन सरकारी कॉलेज में हो सके।एग्जाम देने के बाद इस कोर्स के लिए काउंसलिंग होती है। काउंसलिंग में आपको कॉलेज और आपकी ब्रांच चुनना होती है। ये पूर्णतः ऑनलाइन होती है। यहां आपकी रैंक के हिसाब से यानि आपके मार्क्स के हिसाब से आपको कॉलेज और ब्रांच बताई जाती है जिन्हें आपको चुनना होता है।पॉलिटेक्नीक में एडमिशन होने के बाद इसकी 3 साल की पढ़ाई होती है। जहां आपको प्रैक्टिकली आपकी फील्ड का नॉलेज दिया जाता है। ध्यान रखें पढ़ाई के साथ-साथ कहीं न कहीं इंटर्नशिप भी करें जिससे कॉलेज खत्म होने के बाद आपको तुरंत नौकरी मिल जाए।

1पॉलिटेक्नीक कोर्स में कई बेहतर संभावनाएं हैं जो अन्य कोर्स में नहीं हैं।

रोजमर्रा की आम बातों को खास तरीके से समझाता है ये महीना

विद्वानों का मानना है कि आपको रोजमर्रा की आम बातों को खास तरीके से समझाता है ये महीना।

आध्यातमिकता की ओर सफर

रविवार, 5 मई 2019 से रमजान या रमादान का महीना शुरू हो रहा है, ये इस्लामी कैलेण्डर का नवां महीना होता है। इस्लामिक विषयों के जानकार रामिश सिद्दीकी के अनुसार रोजा इस्लाम की सबसे उत्कृष्ट इबादत मानी गई है, जिसका पालन प्रत्येक मुसलमान को रमजान के पूरे महीने करना होता है। रोजे में व्यक्ति सूर्योदय से सूर्यास्त तक स्वयं को भोजन-पानी के सेवन से दूर रख ईश्वर से जुड़ने का प्रयास करता है। रमजान का सबसे बड़ा लक्ष्य व्यक्ति को भौतिकवाद से निकाल आध्यात्मिकता के पथ पर अग्रसर करना है, ताकि वह इस दुनिया में एक सात्विक जीवन गुजार पाए।

ईश्वर की देन की कृपा का आभार

रमजान में एक व्यक्ति अपना ज्यादा से ज्यादा समय खुदा की इबादत में लगाता है। रोजा इंसान के अंदर कृतज्ञता का भाव बढ़ाता है। थोड़े समय के लिए जब वह अपना खाना- पीना छोड़ देता है, तो उसे यह एहसास होता है कि यह जीवन खुदा की देन है। सूर्यास्त के समय जब वह भोजन-पानी ग्रहण करता है, तब वह यह समझ पाता है कि कैसे ईश्वर सदियों से निरंतर इंसान को सब कुछ प्रदान करते चले आ रहे हैं। यह भाव उसमें ईश्वर के प्रति कई गुना आभार पैदा करता है।

जीवन का महत्व समझाता है

रमजान इंसान को नैतिकता के साथ जीना सिखाता है। जीवन की बुनियादी चीजों से दूर रह कर रोजा आत्मसंयम और सहनशीलता का पाठ सिखाता है। जैसे तेज भागती गाड़ी को एक गति अवरोधक चालक को काबू करने का संकेत देता है, उसी प्रकार रमजान व्यक्ति के जीवन में काम करता है। रमजान का एक महीना व्यक्ति को पूरे साल का प्रशिक्षण देने के लिए आता है। वह जीवन के पथ पर बेकाबू भागने के लिए नहीं आया है, बल्कि जीवन की महत्ता को समझने के लिए भेजा गया है। रोजा व्यक्ति की इबादत की क्षमता को ही बढ़ाने का दूसरा नाम है। रमजान में रोजेदार खुदा का ज्यादा से ज्यादा स्मरण करने की कोशिश करता है और अपने से यह वादा करता है कि वह अपने जीवन को आध्यात्मिक बनाएगा। साथ ही, वह समाज का एक लेने वाला सदस्य न बनकर देने वाला सदस्य बनेगा।

रमजान का पवित्र महीने को शुरू होने में कुछ ही दिन बाकी हैं। इस पूरे महीने के दौरान मुस्लिम समुदाय के लोग रोजे रखते हैं, जिसमें दिनभर न कुछ खाया जाता है और न ही कुछ पिया जाता है। पूरा दिन पानी न पीने

की वजह से लोगों में डिहाइड्रेशन का खतरा बना रहता है। ऐसे में अपने खानपान में एहतियात बरतना बहुत जरूरी होता है। आइए जानते हैं कि रोजे के दौरान हमें किन चीजों का सेवन करना चाहिए और किन चीजों को खाने से बचना चाहिए...

रोजे के दौरान तली हुई चीजों का ज्यादा सेवन नहीं करना चाहिए। सहरी के वक्त अंडा, आटे की रोटी या पराठा, ताजे फल आदि का सेवन करना चाहिए। इससे सेहत सही रहती है। इसके अलावा सहरी के वक्त ज्यादा कॉफी या सोडा नहीं पीना चाहिए। साथ ही सहरी में बिरयानी, कबाब, पिज्जा और फास्ट फूड नहीं खाने चाहिए।

इफ्तार के वक्त भी ज्यादा तला-भुना नहीं खाना चाहिए। पूरे दिन खाली पेट रहने के बाद एकदम से तैलीय खाने का सेवन करना काफी नुकसानदायक हो सकता है। खजूर में आयरन होता है। इसलिए रोजे में इफ्तार के दौरान खजूर खाना चाहिए।

रोजे में सहरी के वक्त पत्तेदार सब्जियां और सलाद खाना चाहिए ताकि शरीर में फाइबर मौजूद रहे और अपच की समस्या सामने न आए। इसके अलावा इफ्तार में तला हुआ खाना खाने से बचना चाहिए। अगर रमजान के वक्त अपच की समस्या होती है तो खाने को पचाने के लिए फाइबरयुक्त चीजें खानी चाहिए।

इफ्तार के समय खाना खाते समय कम से कम पानी पीना चाहिए। क्योंकि ज्यादा पानी पीने से खाना पचता नहीं है। जो शरीर को नुकसान पहुंचाता है। रमजान के दौरान उन खाद्य पदार्थों का ज्यादा सेवन करना चाहिए जिसमें प्रोटीन ज्यादा होता है। आप कहीं भी रहते हों या कुछ भी खाते हों हर घर में धनिया जरूर होता है। धनिया आप रोजाना खाते होंगे लेकिन गुणों से भरपूर ये मसाला कोई साधारण चीज नहीं है। धनिया एक ऐसा पौधा है, जिसकी पत्तियों से लेकर बीज तक इस्तेमाल किया जाता है। खाने के अलावा धनिया का इस्तेमाल आयुर्वेद जैसी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में किया जाता है। धनिया के इतने फायदे हैं जिसे जानकार आप इसे हमेशा अपने घर में रखेंगे।

बिहार के चुनाव परिणाम से कैसे नीतीश का राजनीतिक कद बढ़ा

लोकसभा चुनाव में बिहार में बीजेपी और जेडीयू ने मिलकर कुल 40 सीटों में से 39 पर जीत हासिल की है. आरजेडी और कांग्रेस के गठबंधन को सिर्फ एक सीट पर जीत मिल सकी है. लोकसभा चुनाव 2019 के परिणाम आने के बाद गुरुवार रात को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की नींद उनके राजनीतिक जीवन की सबसे सुखद और आरामदायक नींद होगी. इसके कई कारण हैं.

1. इन परिणामों में नीतीश कुमार के लिए सबसे ज्यादा सुखद अहसास इस बात का होगा कि वे अपनी राजनीतिक प्रतिद्वंदी पार्टी आरजेडी और लालू यादव व उनके परिवार को चुनाव में जीरो पर आउट करने में कामयाब हुए. हालांकि नीतीश कुमार वे शख्स हैं जिन्होंने 2014 के चुनाव में अपनी पार्टी की करारी हार के बावजूद राजद अध्यक्ष लालू यादव को फोन करके मीसा भारती और राबड़ी देवी की हार पर सांत्वना दी थी.

2. आरजेडी से रिश्ते में कड़वाहट और पिछले साल अररिया लोकसभा और जहानाबाद विधानसभा के उपचुनाव में हार के बाद निश्चित रूप से न केवल राजद बल्कि उनके साथ जीतनराम मांझी, उपेन्द्र कुशवाहा और मुकेश निषाद की करारी हार के बाद नीतीश न केवल बृहस्पतिवार को खुश दिखे बल्कि उन्हें इस बात का संतोष दिखा कि उनके नेतृत्व वाले एनडीए के खिलाफ फिलहाल कोई गठबंधन या समीकरण जनता के सामने काम नहीं कर रहा.

3 .इस बार के चुनाव परिणाम से एक बार फिर साबित हुआ कि अगर किसी बारात को बिहार में राजनीतिक जीत तय करनी है तो दूल्हे के रूप में नीतीश कुमार को रखना होगा. यह बात खुद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने पटना में आयोजित एक रात्रि भोज के दौरान स्वीकार की थी. तब पटना के पत्रकारों ने नीतीश को सत्रह सीट दिए जाने पर शिकायत के लहजे में कहा था कि भाजपा को अधिक सीटों पर लड़ना चाहिए था. तब उनका कहना था कि वोटों का जो प्रतिशत है उसमें नीतीश कुमार को न नाराज और न नजरंदाज किया जा सकता है.

4. चुनाव परिणाम से दी बातें साफ थीं एक एनडीए के उम्मीदवारों को हर जाति और वर्ग का वोट मिला जो नरेंद्र मोदी का चेहरा और नीतीश का साथ होने के कारण आसान हुआ. जमीन पर लोग कुछ भी शिकायतों में मीडिया वालों के सामने कहें लेकिन मोदी के नीतीश के साथ आने के कारण वोटों के मामले में रुझान एनडीए उमीदवारों की तरफ था.

5. चुनाव परिणाम में एक सीट जो किशनगंज हारे वह नीतीश के लिए सबसे अधिक संतोष का कारण रहा. जैसे अधिकांश एनडीए प्रत्याशियों को अपनी जीत के इतने अधिक अंतर का अंदाजा नहीं था वैसे ही किशनगंज में जनता दल प्रत्याशी के तीन लाख से अधिक वोट आने की शायद नीतीश को भी उम्मीद नहीं थी. लेकिन इन वोटों से नीतीश को अब भरोसा हो गया है कि विधानसभा चुनाव में मुस्लिम मतदाताओं का एक प्रभावी तबका उनके गठबंधन को उनके नाम पर वोट करेगा.

6. चुनाव परिणाम से नीतीश के सहयोगी और विरोधी दोनों एक बात पर सहमत दिखे कि अति पिछड़ी जातियों और महादलित समुदाय पर अभी भी नीतीश का सिक्का चल रहा है. ये दोनों वोट बैंक नीतीश ने अपने शासन काल में बनाए और अभी भी उनका विश्वास किसी अन्य दल से ज्यादा नीतीश पर है.

7. हालांकि चुनाव परिणाम के बाद नीतीश (छपजपी ज्ञनउंत) ने माना कि जाति एक फैक्टर है लेकिन उन्होंने ये भी माना कि काम को मान्यता जनता देगी, जो परिणाम से साबित हो गया. नीतीश के अनुसार महत्व काम का ही है. उनके अनुसार बाकी जो समाज को बांटने की कोशिश हैं वे नाकाम हुई. काम करने वाली जमात को जनता ने समर्थन दिया है. जो जाति को जोड़कर विश्लेषण करने की कोशिश कर रहे थे, वे अब समझ रहे हैं.

8. जाति आधारित राजनीति का दौर अब खत्म हो गया. यह नीतीश (छपजपी ज्ञनउंत) के लिए सबसे सुखद बात है क्योंकि उनके सीमित वोट बैंक के बारे में अब तक सवाल उठते रहे थे.

9. इस चुनाव के परिणाम से नीतीश इसलिए भी खुश होंगे कि अब अगले साल विधानसभा चुनाव में राजद-कांग्रेस गठबंधन से उन्हें कोई राजनीतिक चुनौती नहीं है. वैसे भी वोट का अंतर बीस प्रतिशत से अधिक है जिसे पलटने के लिए राजनीतिक चमत्कार चाहिए.

10. सबसे ज्यादा नीतीश के लिए संतोषजनक बात इस लोक सभा परिणाम से यह रही कि तेजस्वी यादव उनके लिए अब राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि एक वरदान हैं जो जब तक उनके सामने रहेगा नीतीश आराम से बिहार की गद्दी पर राज करेंगे.

8. जाति आधारित राजनीति का दौर अब खत्म हो गया. यह नीतीश के लिए सबसे सुखद बात है क्योंकि उनके सीमित वोट बैंक के बारे में अब तक सवाल उठते रहे थे.

9. इस चुनाव के परिणाम से नीतीश इसलिए भी खुश होंगे कि अब अगले साल विधानसभा चुनाव में राजद-कांग्रेस गठबंधन से उन्हें कोई राजनीतिक चुनौती नहीं है. वैसे भी वोट का अंतर बीस प्रतिशत से अधिक है जिसे पलटने के लिए राजनीतिक चमत्कार चाहिए.

10. सबसे ज्यादा नीतीश के लिए संतोषजनक बात इस लोक सभा परिणाम से यह रही कि तेजस्वी यादव उनके लिए अब राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि एक वरदान हैं जो जब तक उनके सामने रहेगा नीतीश आराम से बिहार की गद्दी पर राज करेंगे.

चुनाव में फ्लॉप हुए फिल्मी सितारे, एक भोजपुरी स्टार भी है शामिल

लोकसभा चुनाव के नतीजे सामने आने शुरू हो चुके हैं। रुझानों के मुताबिक चुनाव में उतरे सात फिल्मी सितारे सिनेमा अपनी सीट बचाने में नाकामयाब होते दिखाई दे रहे हैं। इन सात सितारों में एक भोजपुरी स्टार दिनेश लाल यादव (निरहुआ) भी शामिल हैं। जो चुनाव हारते नजर आ रहे हैं। तो चलिए जानते हैं इन 7 कलाकारों के बारे में

1. उर्मिला मातोंडकर

बाल कलाकार के रुप में अपने फिल्मी सफर की शुरूआत करने वाली बॉलीवुड एक्ट्रेस उर्मिला मातोंडकर ने इसी चुनाव से कांग्रेस के साथ अपना सियासी सफर मुंबई नॉर्थ सीट से शुरू किया है।

2. प्रकाश राज

साउथ और हिंदी सिनेमा के मशहूर अभिनेता प्रकाश राज, बेंगलुरु से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं।

3. शत्रुघ्न सिन्हा

हाल ही में भारतीय जनता पार्टी छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने वाले बॉलीवुड अभिनेता शत्रुघ्न सिंहा पटना शरीफ से चुनावी मैदान में हैं। वहीं रुझानों के अनुसार अभिनेता शत्रुघ्न सिंहा की जीत की संभावनाएं

बेहद कम हैं।

4. राज बब्बर

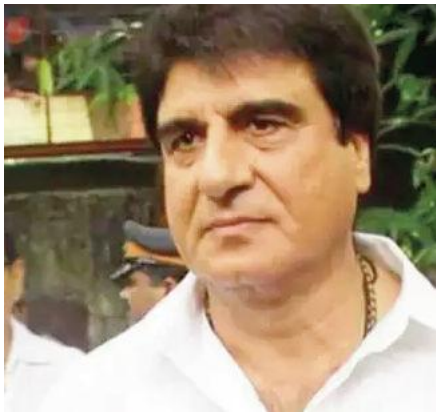

बॉलीवुड अभिनेता और कांग्रेस नेता राज बब्बर उत्तर प्रदेश के फतेहपुर सीकरी से चुनाव मैदान में हैं।

5. हेमा मालिनी

बॉलीवुड अभिनेत्री और भाजपा नेता हेमा मालिनी मथुरा से भाजपा सांसद रह चुकी हैं। लेकिन इस बार रुझानों में हेमा मालिनी हारती दिख रही हैं।

6. जयाप्रदा

गुजरे जमाने की मशहूर अभिनेत्री जयाप्रदा को भाजपा ने उत्तर प्रदेश की रामपुर से मैदान में उतारा है। उनका मुकाबला सपा नेता आजम खां से हैं। रुझानों में जयाप्रदा पीछे चल रही हैं।

7. दिनेश लाल यादव

भोजपुरी स्टार दिनेश लाल यादव उर्फ निरहुआ को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ सीट से बीजेपी ने टिकट दिया है। उनके खिलाफ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव मैदान में हैं। रुझान के मुताबिक निरहुआ की इस सीट पर हार तय मानी जा रही है।

मौत का सबब बनता जा रहा है कोचिंग क्लासेस, सूरत में 20 छात्रों की मौत

कुछ सीखने के लिए बच्चे कोचिंग की एसी क्लास में बैठकर पढ़ाई कर रहे थे और नीचे आग लग रही थी. छात्रों को जब तक इस बात का अहसास होता तब तक उनके निकलने के रास्ते बंद हो चुके थे. उनकी आंखों के सामने जब उनके साथी जलने लगे तो कुछ छात्रों ने चौथी मंजिल से छलांग लगा दी. कुछ की जान बची तो कुछ जान चली गई. इस पूरे हादसे में 20 छात्रों की मौत हो गई. यह दिल दहलाने वाला हादसा गुजरात के सूरत में शुक्रवार शाम को घटा.

सूरत के तक्षशिला आर्केड में जब आग लगी तो चौथी मंजिल पर चल रही फैशन क्लासेस के स्टूडेंट्स को पता तक नहीं था. नीचे की मंजिलों पर सब भाग रहे थे और बच्चे क्लास में थे. जब चौथी मंजिल तक धुआं पहुंचा तो स्टूडेंट्स में भगदड़ मच गई. बाहर निकलने के सारे रास्ते जाम हो चुके थे. आग से बचने का कोई रास्ता ही नहीं था.

15 साल के राम वाघाणी ने बताया, "मैं अलोहा के नाम से चल रहे माइंड फ्रेश यानी कि मेंटली डेवलप क्लासेस में था तभी धुआं चारों ओर फैलने लगा. मैडम जेनीशाबेन के साथ मैं भी तीसरी मंजिल पर गया. हमारे पास तीसरी मंजिल से कूदने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं था. अब तो मरना ही है, यह सोचकर कूद गया. शुक्र है बच गया." ऐसे में बच्चों ने एक-एक कर बालकनी से कूदना शुरू कर दिया. 13 छात्र-छात्राएं गिरते हुए नीचे आए. इनमें से 3 की मौत हो गई.

आग लगते ही लोगों ने सूचना फायर ब्रिगेड को दी. एक साथ 50 से ज्यादा फोन फायर टीम के पास पहुंच गए. इसके बाद भी फायर ब्रिगेड को पहुंचने में आधा घंटा लग गया. तब तक आग पूरी तरीके से तीसरे और चौथे फ्लोर के रास्ते को बंद कर चुकी थी और बच्चे फंस चुके थे.

तब तक आग उनके क्लास रूम तक नहीं पहुंची थी. एक स्टूडेंट ने फायर ब्रिगेड को फोन किया तो काफी देर बाद गाड़ियां आईं. शुरूआत में केवल 6 टैंक लेकर पहुंची फायर की टीम ने 20 मिनट तो अपने संसाधनों को तैयार करने में लगा दिए, उसके बावजूद पानी की बौछार आग तक नहीं पहुंच रही थी, इसलिए आग पर काबू ही नहीं पाया जा सका.

तक्षशिला आर्केड में अवैध तरीके से चल रहे फैशन इंस्टीट्यूट के साथ ही फिटनेस जिम और महिलाओं के लिए नर्सिंग होम भी चल रहा है. चश्मदीदों के मुताबिक शॉपिंग सेंटर में आने-जाने का रास्ता एक ही है. शुक्रवार को शॉर्ट सर्किट की वजह से कोचिंग सेंटर में जाने के रास्ते में ही आग भड़क उठी.

धीरे-धीरे बढ़ रही आग बाहर निकलने के रास्ते में ही बढ़ती गई और लोग अपनी जान बचाकर बाहर निकलते रहे, जबकि तीसरे और चौथे फ्लोर पर अलग-अलग कोचिंग सेंटर में मौजूद लगभग 56 छात्रों को इस बात की भनक तक नहीं लगी.

शॉपिंग कॉम्पलेक्स के अंदर जाने वाले रास्ते पर ही बिजली का खम्भा था, जिससे बिजली कनेक्शन शॉपिंग सेंटर की कई दुकानों में बिजली कनेक्शन था. अचानक शार्ट सर्किट की वजह से आग लगी, जिसे बिना बिजली काटे रोका नहीं जा सकता था.

एक-एक कर फायर ब्रिगेड की 25 से ज्यादा गाड़ियां मौके पर पहुंची, लेकिन टैंकों में पर्याप्त पानी तक नहीं था.

इतना ही नहीं आग की जगह तक पहुंचने के लिए गाड़ियों में लगाए गए लैडर ही काम नहीं कर रहे थे. फायर टीम के पास चौथे मंजिल से नीचे गिर रहे बच्चों को पकड़ने के लिए भी कोई संसाधन नहीं था. घटना के समय दूसरी, तीसरी मंजिल पर दोनों कोचिंग सेंटर में मौजूद थे 60 छात्र और छात्राएं मौजूद थे. बच्चे भागकर ऊपर चढ़े, लेकिन धुएं के गुबार और आग की वजह से बचने का मौका नहीं मिला. दोनों फ्लोर से बचकर निकलने की जगह नहीं मिली.

फायर ब्रिगेड ने दो घंटे रेस्क्यू कर 16 शव और 26 से अधिक लोगों को निकाल अस्पताल भेजा. आग सीढ़ी के पास लगी थी. निकलने का एक ही रास्ता था. पूरा चैंबर एसी था, इसलिए निकलने का कोई और रास्ता नहीं था. बाद में एक छात्रा की और मौत हो गई.

ये हैं मरने वालों के नाम

एशा रमेश खंडेला (17), जान्हवी मतुर वसोया (17), मीत दिलीप संघानी (17), हस्ती हितेश सुरानी (18), ईशा जॉन्टी कांकड़िया (15), अंश मनसुख ठुमर (18), जान्हवी महेश वेकरिया (17), वंशवि जयेश काननि (18), कृति ध्याला (18), दृष्टि खूंट (18), रूमी बलर (17), खुशाली किरीट, कोठड़िया (17), कृष्णा सुरेश भिकडिया (22), रूद्र डोंडा (18), ऋतू संजय साकरिया , दिनेश केवलिया, ग्रीष्मा गजेरा, निसर्ग कातरोडिया , मानसी वरसानी और एक अन्य.

राजद की करारी हार के बाद 'अकेले' पड़े लालू

परिवार समेत किसी नेता ने नहीं की मुलाकात

लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद से राजद के खेमे में खासी निराशा है. हार का असर पटना के अलावा रांची तक देखने को मिल रहा है. नतीजों के बाद से जहां लालू परेशान हैं और वह खाना भी छोड़ चुके थे, वहीं पांच दिन बाद तक उनसे पार्टी के किसी सीनियर नेता या फिर उनके घरवालों ने भी मुलाकात नहीं की है. रांची के रिम्स में भर्ती लालू यादव की खराब तबियत के बारे में सभी को जानकारी है, लेकिन लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद से अब तक उनसे मुलाकात करने कोई भी नहीं पहुंचा है. विश्वस्त सूत्रों की मानें तो इस हार से लालू हताश और चिंतित हैं, क्योंकि पार्टी की स्थापना के बाद से ये पहला मौका है जब राजद का लोकसभा चुनाव में खाता तक न खुला हो. हार के कारण ही उनकी तबियत भी अचानक बिगड़ गई.

अचानक चिल्लाने लगे थे लालू

रिम्स में भर्ती लालू प्रसाद का रविवार सुबह अचानक से दम घुटने लगा था और वो चिल्लाने लगे थे. इसके बाद डॉक्टरों ने लालू प्रसाद के ब्लड प्रेशर की जांच की थी जो सामान्य निकला था. हालांकि, जांच में शुगर थोड़ा बढ़ा हुआ पाया गया था. उन्हें कमरे से बाहर निकालकर खुले में आधे घंटे तक बिठाया गया, जिसके बाद उनकी हालत सामान्य हुई.

20 सीटों पर उतारे थे प्रत्याशी

लालू की पार्टी बिहार में महागठबंधन को लीड कर रही थी और यही कारण है कि उसने 20 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जबकि बाकी के बीस सीटों में उसके चार सहयोगी कांग्रेस, हम, रालोसपा और वीआईपी दलों ने अपने उम्मीदवार उतारे थे. पार्टी को अपने इस बुरे प्रदर्शन का अंदाजा नहीं था, यही कारण था कि छठे फेज के बाद भी तेजस्वी ने बंपर जीत मिलने का दावा किया था, लेकिन नतीजे ठीक इसके उलट आए और राजद बिहार में अपना खाता तक नहीं खोल सका. लोकसभा चुनाव में झारखंड में आरजेडी का सूपड़ा साफ हो गया. पार्टी दो सीटों पर चुनाव लड़ी थी, लेकिन उसे करारी हार का सामना करना पड़ा था.

हार की समीक्षा

इस हार को लेकर पार्टी के अंदर भी असंतोष के स्वर हैं. हार की समीक्षा के लिए ही बिहार में फखऊकी महत्वपूर्ण बैठक आज होनी है. विधानमंडल दल की ये बैठक बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की अध्यक्षता में होगी.

पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के आवास पर बुलाई गई है इस बैठक में पार्टी के तमाम बड़े चेहरे मौजूद होंगे. बैठक में शमिल होने के लिए तेजस्वी यादव भी मंगलवार की सुबह पटना पहुंचे हैं. तेजस्वी 23 मई को आए नतीजों के अगले दिन ही दिल्ली चले गए थे और फिर उन्होंने मीडिया से भी दूरी बना कर रखी थी. बैठक में जिन महत्वपूर्ण चेहरों पर नजर रहेगी, उनमें तेजप्रताप यादव और मीसा भारती होंगी.

समझे साइबर क्राइम को, बची रहेगी गाढ़ी कमाई

अगर आपने पढ़ ली यह पूरी खबर तो कभी नहीं होगी परेशानी

अवधेश कुमार

आज साईबर अपराध पुलिस के लिए बहुत बड़ी चुनौती साबित हो रही है ।आए दिन साईबर अपराधी किसी न किसी के खाते से उनकी गाढ़ी कमाई लूट लेते हैं ।अगर आप साईबर अपराध से बचना चाहते हैं तो यह पूरी खबर अवश्य पढ़ें ।

ऐसे बचें साईबर अपराधियों से

अपने इंटरनेट की बैंकिंग और बैंकिंग लेन-देन का इस्तेमाल कभी भी सार्वजनिक स्थान जैसे कि साइबर कैफे,ऑफिस,पार्क, सार्वजनिक मीटिंग और किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान पर ना करें ।किसी भी प्रकार के बैंकिंग लेन-देन के लिए आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर या लैपटॉप का ही इस्तेमाल करें ।जब कभी भी आप अपने इंटरनेट बैंकिंग या किसी भी जरुरी अकाउंट में लॉगिन करें,तो काम खत्म कर, अपने अकाउंट को लॉग आउट करना न भूलें ।जब आप लॉगिन कर रहे हों,तब इस बात पर जरूर धयान दें कि पासवर्ड टाइप करने के बाद कम्प्यूटर द्वारा पूछे जा रहे ऑप्शन रिमेब्बर पासवर्ड या कीप लॉगिन में क्लिक न करें ।

साईबर अपराधी फेक साइट के माध्यम से हटाते हैं लोगों को

लोगों को धोखा देने के लिए और अपनी चंगुल में फसाने के लिए अधिकतर स्कैमर्स(घोटाले बाज) फेक साईट को प्रयोग मे ला रहे हैं,जिससे की लोगों को पता भी ना चले और उनका काम भी आसानी से हो जाए ।आइये जानते हैं आखिर फेक साईट होती क्या है ?फेक साईट के नाम से ही प्रतीत हो जाता है कि यह एक झूठी वेबसाईट है,जो हूबहू आपके बैंक के वेबसाईट, खरीदारी करने वाली साईट या पेमेंट गेटवे के जैसा इंटरफेस होता है ।ऑनलाइन खरीदारी या कोई भी ऑनलाइन लेन-देन करने के लिए जैसे ही आप,यहां अपने क्रेडिट कार्ड,डेबिट कार्ड,इंटरनेट बैंकिंग का यूजर नेम,लॉगिन पासवर्ड ट्रांजिक्सन पासवर्ड या ओ.टी.पी इंटर करते हैं,तो वो इस डिटेल्स को कॉपी कर लेता है और बाद में इसका प्रयोग कोई भी गलत तरीके से गलत कार्यों के लिए कर सकता है ।इस शातिर प्रक्रिया को आप और हम समझ नहीं पाते हैं कि यह गलत ट्रांज्किशन कैसे हो गया ?फेक वेबसाईट का संचालन एक संगठित ग्रुप के क्रिमिनल्स के द्वारा किया जाता है ।आप अपने कम्प्यूटर में अगर इंटरनेट का प्रयोग करते हैं,तो सबसे पहले आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर को पासवर्ड से सुरक्षित कीजिए, जिससे कोई दूसरा व्यक्ति बिना आपके जानकारी के आपके कम्प्यूटर प्रयोग ना कर सके ।अगर आपका कम्प्यूटर सुरक्षित नहीं होगा,तो क्रिमिनल या कोई व्यक्ति आपके कम्प्यूटर से जरूरी जानकारियां चुरा सकता है और गलत कार्यों के लिए आपके कम्प्यूटर का इस्तेमाल भी कर सकता है ।इसके साथ आप यह भी चेक करें की आपके कम्प्यूटर में लेटेस्ट सिक्योरिटी अपडेटेड इन्सटाल्ड है या नहीं ?साथ ही यह भी चेक करें की आपका एंटी वायरस और एंटी स्पाई वेयर सॉफ्टवेयर ठीक से काम कर रहा है या नहीं ?उसके वेंडर से जरुरी अपडेट्स आ रहा है या नहीं ?

हमेशा ए स्ट्रांग पासवर्ड का करें प्रयोग

हमेशा बहुत स्ट्रांग पासवर्ड का प्रयोग करें,जिससे आसानी से किसी को पता न चले ।क्योंकि साईबर क्रिमिनल प्रोग्रामर ऐसे सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का निर्माण करते हैं जो कि आपके साधारण से पासवर्ड को आसानी से अनुमान कर सकता है ।ऐसे में अपने आप को बचाने के लिए आप ऐसा पासवर्ड सेट करें, जिसका कोई दूसरा अनुमान ना लगा सके और आप आसानी से उसे याद भी रख सकें ।आपका पासवर्ड कम से कम आठ कैरेक्टर का हो,जिसमें लोअर केस लेटर्स,अपर केस लेटर्स, नंबर्स और स्पेशल कैरेक्टर्स का मिश्रण हो ।अगर आप एक से अधिक अकाउंट्स का प्रयोग करते हैं,तो सभी के लिए अलग- अलग पासवर्ड का प्रयोग करें । अपना पासवर्ड कभी भी अपने नाम,पता,गली नंबर,जन्म तिथि, परिवार के सदस्यों के नाम, विद्यालय के नाम या अपने वाहनों के नंबर पर न बनाएं,जिसका दूसरों के द्वारा आसानी से अनुमान लगाया जा सके ।

बैंकिंग ट्रांजैक्शन करें सुरक्षित

अपने इंटरनेट बैंकिंग और बैंकिग ट्रांजिक्शन का इस्तेमाल कभी भी सार्वजनिक स्थान जैसे कि साईबर कैफे,ऑफिस,पार्क, सार्वजनिक मीटिंग और किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान पर ना करें ।किसी भी प्रकार के बैंकिंग लेन-देन के लिए आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर या लैपटॉप का ही इस्तेमाल करें ।जब कभी भी आप अपने इंटरनेट बैंकिंग या किसी भी जरुरी अकाउंट में लॉगिन करें,तो काम खत्म कर अपने अकाउंट को लॉग आउट करना न भूलें ।जब आप लॉगिन कर रहें,हो तब इस बात पर जरूर धयान दें कि पासवर्ड टाईप करने के बाद कम्प्यूटर द्वारा पूछे जा रहे ऑप्शन रिमेब्बर पासवर्ड या कीप लॉगिन में कभी भी क्लिक ना करें ।कभी भी आप अपने बैंकिंग यूजर नेम,लॉगिन पासवर्ड, ट्रांजिक्शन पासवर्ड,ओ.टी.पी, गोपनीय प्रश□नों या गोपनीय उत्तर को अपने मोबाइल,नोटबुक, डायरी,लैपटॉप या किसी कागज पर ना लिखें ।हमेशा आप ऐसा पासवर्ड सेट करें,जो की आपको आसानी से याद रहे और आपको इसे कहीं लिखने की आवश्यकता ना पड़े ।

अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर रखें पैनी नजर

अपने सोशल मीडिया के अकाउंट को लगातार देखते रहें ।अगर कभी आप अपने सोशल साइट्स के अकाउंट को डिलीट कर रहे हैं, तो उससे पहले आप अपनी सारी पर्सनल जानकारी को डिलीट कर दें और फिर उसके बाद आप अपना अकाउंट डीएक्टिवेट करें या डिलीट करें ।आप किसी भी स्पैम ई-मेल का उत्तर ना दें । अंजान ई-मेल में आए अटैचमेंट्स को कभी खोल कर ना देखें या उस पर मौजूद लिंक पर क्लिक ना करें ।इसमें वायरस या ऐसा प्रोग्राम हो सकता है,जिसको क्लिक करते ही आपका कम्प्यूटर उनके कंट्रोल में जा सकता है या आपके कम्प्यूटर में वायरस के प्रभाव से कोई जरूरी फाईल डिलीट हो जाए और आपका ऑपरेटिंग सिस्टम करप्ट हो जाए ।

सही साइट का ही करें प्रयोग, रहेंगे सुरक्षित

अगर किसी वेबसाईट पर कोई पॉपअप खुले और आपको कुछ आकर्षक गिफ्ट या इनाम ऑफर करे तब आप अपनी पर्सनल जानकारी या बैंक अकाउंट नंबर या बैंक से संबंधित कोई भी जानकारी ना भरें ।अगर आप किसी ऑफर का लाभ लेना चाहते हैं,तो आप सीधे रिटेलर के वेबसाईट,रीटेल आउटलेट या अन्य जायज साईट से संपर्क करें ।आज के दौर मे इंटरनेट हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है लेकिन इंटरनेट पर जरा सी नासमझी स्कैमर्स को साईबर क्राईम के लिए खुला निमंत्रण देता है ।पक्का विश्वास है कि अगर आप इन सभी बिंदुओं पर गौर करते रहते हैं,तो आप,कभी भी साईबर क्राईम के शिकार नहीं होंगे ।

(लेखक पुलिस इंस्पेक्टर और साईबर क्राईम सेल के विशेषज्ञ हैं) ।

एलिट में नीट-रिजल्ट की धूम छाई !

इंजीनियरिंग और मेडिकल-प्रवेश परीक्षाओं के लिये पटना का प्रसिद्ध संस्थान एलिट इन्स्टिच्युट के 68 छात्र-छात्राओं ने नीट-मेडिकल परीक्षा में सफलता का परचम लहराया । एलिट इन्स्टिच्युट, पटना के 159 छात्र-छात्राओं ने वर्ष-2019 में नीट-मेडिकल परीक्षा को दिया, जिसमें 68 छात्रों ने नीट-मेडिकल में सफलता दर्ज करवायी। सफल छात्र-छात्राओं में 46 बच्चों का रिजल्ट 500 अंकों से ज्यादा है। सफल छात्र-छात्राओं में आनंद कुमार, दिव्यांश राज, सुधा प्रकाश, अंजलि कुमारी, आफताब आलम और राजेश सिंह के नाम उल्लेखनीय है, क्योंकि ये मध्यम-वर्गीय परिवार के छात्र-छात्रायें हैं, जिन्होंने अपनी लगन और मेहनत से खुद को प्रमाणित किया। एलिट संस्थान के संस्थापक-निदेशक अमरदीप झा गौतम ने सफल छात्रों को बधाई देते हुये कहा कि छात्रों की कड़ी-मेहनत, शिक्षकों का सहयोग, एलिट का डीपीपी, टेस्ट-सीरिज और यहाँ के माहौल की उपज है कि एलिट 18 वर्षों से छात्रों के सपनों को पूरा करते आया है।

सांसद का नागरिक अभिन्दन का दौर चरम पर, सर्मथको में जबरदस्त उल्लास का माहौल

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

नवनिर्वाचित सांसद गिरिधारी यादव का नागरिक अभिनंदन इन दिनों विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में चरम पर है पिछले कुछ दिन पहले स्थानीय बांसी में इनका भव्य नागरिक अभिनंदन किया गया सीएनटी उच्च विद्यालय प्रांगण में इन्होंने अपने समर्थकों के द्वारा अभिनंदन स्वीकार करते हुए जनता के सामने अपनी बात रखते हुए कहा कि मैं अपने कर्तव्यों का पालन एवं निर्वाहन बिल्कुल और बिल्कुल सही दिशा में करूंगा जनता की कसौटी पर खरा उतरूंगा यह मेरा वादा है गरीब किसान मजदूर हर तबके के लोग इस क्षेत्र में खुशहाल होंगे खासकर किसानों की व्यवस्था सिंचाई के लिए समुचित साधन सड़क मार्ग से आवागमन की व्यवस्था बिजली की व्यवस्था शिक्षा हेतु अच्छे स्कूल कॉलेज की व्यवस्था हेतु इन्होंने विशेष जोर दिया स्थानीय समर्थकों के द्वारा इस अवसर पर बौंसी में भी इनका भव्य स्वागत किया गया . स्वागत समारोह के अवसर पर बिहार सरकार के राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री रामनारायण मंडल भी उपस्थित थे उन्होंने अपने उद्बोधन में स्थानीय जनता आम नागरिकों से भी यह वादा किया कि हमारे नए प्रतिनिधित्व काल में इस जिले का इस संसदीय क्षेत्र का समुचित विकास होगा जिसके लिए हम सभी नरेंद्र भाई मोदी के आदर्शों को अपनाते हुए उनके द्वारा निर्देशित कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं

कटोरिया में नवनिर्वाचित सांसद गिरिधारी यादव का हुआ भव्य नागरिक अभिनंदन

कटोरिया विधानसभा क्षेत्र में स्थानीय कटोरिया बाजार में ग्राम पंचायत कटोरिया के मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में उनके बेलोनी स्थित बगीचे में नवनिर्वाचित सांसद गिरधारी यादव का वैश्य समाज के द्वारा एक भव्य नागरिक अभिनंदन का आयोजन किया गया इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने अपनी अपनी बात रखी कटोरिया जंगली इलाका होने के नाते इस क्षेत्र में विकास की गति धीमी है स्थानीय सांसद बेलहर के पूर्व सांसद विधायक थे जो कटोरिया से काफी नजदीकियां रखते थे उनके सांसद काल में कटोरिया का भी समुचित विकास हुआ था पूर्व में वर्तमान समय में सभी समर्थकों के द्वारा काफी अपेक्षा की गई और उनसे यथोचित विकास सड़क एवं बिजली पानी की व्यवस्था सही करने की अपेक्षा की . स्थानीय मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के द्वारा कटोरिया में बच्चों के एक अच्छे शिक्षक शिक्षण संस्थान होने के लिए माननीय सांसद महोदय से आग्रह किया जिससे कि बच्चों का समुचित विकास हो साथ ही साथ सड़क के किनारे पानी की निकासी हेतु बड़ा सा नाला जिससे की संपूर्ण बाजार का पानी उसी नाले के द्वारा बाहर निकल कर गंदगी को दूर करें की भी मांग की इस विषय पर स्थानीय सांसद ने अपने संबोधन में कहा कि यहां की समस्या के विषय में आप स्वयं प्रतिनिधित्व प्रतिनिधित्व करें जिसके लिए जिस तरह की भी व्यवस्था जिस तरह

सांसद का स्वागत करते मुखिया प्रदीप गुप्ता

का सहयोग हम से प्राप्त करना चाहते हैं मैं हमेशा आपके साथ हूं मैं हर समय तत्पर हूं हमेशा मैं सहयोग करता रहूंगा. सांसद महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि कटोरिया में डिग्री कॉलेज होना अति आवश्यक है डिग्री कॉलेज होने से यहां के लड़के लड़कियां खासकर उन लड़कियों महिलाओं के लिए यह बहुत ही सुलभ हो जाएगा जो पढ़ाई के लिए किसी अन्यत्र जगह जाने की आवश्यकता होती .है इस क्षेत्र में यदि डिग्री कॉलेज होती है तो

यहां के बच्चे बच्चियां नजदीक के कॉलेज में डिग्री प्राप्त कर सकेंगे मैं इस विषय मे विशेष पहल करूंगा सरकार से इस विषय मे

अपने प्रतिनिधित्व काल में इस विषय पर मैं पूर्ण रुप से सहयोग कर इसे सफल बनाने का प्रयास करूंगा साथ ही उन्होंने बायपास रोड के विषय में पटना तक जाने के लिए विशेष बात बताई उन्होंने कहा कि सरकार के अधीनस्थ मंत्रियों के द्वारा अपने सांसद काल में मैंने उन सब पर पहल की है और वर्तमान समय में मैंने इस व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए काफी तेज गति से कार्य प्रारंभ करवाने का आग्रह किया और अभी अब मैं इस क्षेत्र में इसके लिए पूर्ण रूप से जागृत हो गया हूं और इसको पूर्ण रूप से सफल बना लूंगा बांका जिला से सीधा सिमुलतला सोनो होते हुए एक ऐसा बायपास मार्ग का सत्यापन और उसका काम प्रारंभ हो गया है जो पंचवारा से लेकर बांका बांका से एनएच होते हुए सीधा पटना लोग आसानी से जा सकेंगे उन्होंने आगे कहा कि विभिन्न योजनाओं के विषय में उन्होंने बताया कि खासकर पुल पुलिया जो सरकार के द्वारा निर्धारित होता है वर्तमान सांसद के द्वारा उस कार्य को सम्पन्न कराया जाता है तो उन्होंने इस विषय पर अपने पूर्व सांसद पर यह आरोप लगाया कि सारे स्थिति को देखते हुए उन्होंने अपने ऊपर सारी जवाबदेही लेकर अपना बड़प्पन लूटना चाहे वैसे सांसद में से नहीं हूं मैं जनता के सामने आप सबों के सामने खड़ा हूं मेरी प्रमाणिकता आप लोगों ने बता दी है मैं अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित रहूंगा और आप सबों के साथ रहूंगा जिस प्रकार सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो सड़कों का सही ढंग से रखरखाव सड़क सही हो बिजली की व्यवस्था सही हो इस विषय पर विशेष रूपउन्होंन जोर दूंगा और स्थानीय वैश्य समाज के द्वारा जो नागरिक अभिनंदन समारोह मनाने का आयोजन किया गया था इसमें मुख्य रूप से रविंद्र कुमार वर्णवाल टिंकू जी के द्वारा भी अपने नवनिर्वाचित सांसद का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया अभिनंदन समारोह के क्रम में किसी के आम नागरिकों की सुविधा के लिए उन्होंने सांसद कोटे से कटोरिया स्टैंड पर हाय मॉस्क लाइट लगाने की घोषणा की जिससे समर्थकों में काफी उल्लास का माहौल व्याप्त हो गया इस प्रकार उनके द्वारा विभिन्न योजनाओं में जनता को समुचित लाभ मिले हर क्षेत्र में किसान खुशहाल हो गरीबी मिटाने का माननीय नरेंद्र मोदी की जो एक संकल्प है इलाज के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ लेंगे हर तरह से कल्याण होगा इसके लिए हम भी तत्पर हैं और अंत में उन्होंने उपस्थित समस्त नागरिकों अपने समर्थकों एवं मीडिया बंधुओं का भी अभिवादन करते हुए उन्होंने अपने कार्य रूप को गति देने हेतु आप सबका सहयोग आप सबों का समर्थन आवश्यक है की बात दोहराई और उन्होंने धन्यवाद दिया आप अपने सभी मतदाता बंधुओं को कि आपने मुझे इस लायक समझा मैं आपकी प्रतिष्ठा को हनन नहीं करने दूंगा मैं बिल्कुल आपके साथ हूं और हर समय विकास के कार्यों में आप हमें कभी भी याद कर सकते हैं मैं हर समय जनता के साथ हूं इस अवसर पर कटोरिया के सभी गण माण्य लोग उपस्थित थे इसके उपरांत सभा की समाप्ति की घोषणा अध्यक्ष प्रदीप कुमार गुप्ता के द्वारा की गई.

नागरिक अभिनंदन सभा को संबोधित करते हुए

लोक सभा चुनाव 2019

गिरिधारी यादव के सिर पर सज गया ताज : जीत पर उड़े अबीर और गुलाल

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

लोकसभा चुनाव 2019 के परिणाम ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये एनडीए से जदयू उम्मीदवार गिरधारी यादव बांका के सांसद निर्वाचित हुए गिरधारी यादव ने राजद के जयप्रकाश नारायण यादव को 200571 मतों से हराया गिरधारी यादव बांका के तीसरी बार सांसद निर्वाचित हुए हैं इधर भाजपा की बागी वध निर्दलीय प्रत्याशी पुतुल कुमारी तीसरे स्थान पर रही है बांका लोकसभा चुनाव में भी सारे फैक्टर को हटाकर जनता ने मोदी फैक्टर को अपनाएं एनडीए प्रत्याशी गिरधारी यादव को जनता ने अप्रत्याशित मतों से जीत दिलाकर बांका की बागडोर सौंप दिए उनके सिर पर ताज स्थापित कर दिया बाग गिरधारी यादव को कुल 477831 मत मिले जबकि उनके प्रतिद्वंदी राजद के जयप्रकाश नारायण यादव को 277260 मत प्राप्त हुए तीसरे स्थान पर रही निर्दलीय प्रत्याशी पुतुल कुमारी को 103730 मत प्राप्त हुए तीसरे स्थान पर रही निर्दलीय प्रत्याशी पुतुल कुमारी को इस बार भी मुंह की खानी पड़ी जीत के बाद डीएम ने जिलाधिकारी डीएम ने जिलाधिकारी जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने गिरधारी यादव को जीत का प्रमाण पत्र प्रदान किया इससे पहले बांका लोकसभा चुनाव की मतगणना सुबह 8:00 बजे से पीवीएस कॉलेज प्रांगण में शुरू की गई बांका लोकसभा चुनाव की मतगणना कार्य सुबह 8:00 बजे से पीवीएस कॉलेज प्रांगण में शुरू की गई काफी चौक चौक अंत और पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतगणना शुरू हुई जदयू के गिरधारी यादव प्रथम राउंड में ही आगे बढ़ते गए जो कि अंतिम राउंड तक आगे बने रहे सरवर में तकनीकी खराबी के कारण मतदान मतगणना कुछ देरी हुई तथापि बाद में राउंड में बढ़त मिलते ही मिलते जाने से लगातार 10 राउंड के बाद राजद खेमे में मायूसी छाने लगी तथा कई कार्यकर्ता मतगणना केंद्र से बाहर ही लौटने लगे इधर बढ़ता जा रहा था एनडीए के खेमे में लगातार उत्साह देखा जा रहा था(

जनसैलाब के साथ नवनिर्वाचित सांसद गिरधारी यादव

इस बार पराकाष्ठा इस बार जनता ने अपनी उम्मीद को इस तरह प्रमाणित किया की असर राजनीति का दूसरा रूप राजद के खेमे में दिखाई पड़ा मोदी फैक्टर का प्रमाण इस तरह प्रदर्शित हुआ कि गिरधारी यादव तीसरी बारइतने अधिक मतो से अपने प्रतिद्वन्दियो को पराजीत कर उन्होंने इतिहास रच दिया बांका संसदीय क्षेत्र से चुनाव जीतकर तीसरी बार सांसद बनने पर 2019 के लोकसभा चुनाव में मंत्री के घर में जुटी रही एनडीए कार्यकताओं की भीड़ ने बिहार के राजस्व मंत्री रामनारायण मंडल के आवास पर सुबह से ही एनडीए कार्यकताओं का जुटान हो रहा था इधर मतगणना कार्य गति पर था और उधर उनके खेमे में काफी उत्साह था. मतगणना स्थल पर जुटी रही प्रत्याशियों की भीड़ लोकसभा चुनाव की मतगणना सुबह 8:00 बजे से पीवीएस कॉलेज के मैदान में प्रांगण में शुरू की गई इधर लोग सुबह से ही कॉलेज के में प्रत्याशियों के समर्थकों की भीड़ लगने लगी थी सभी अपने-अपने प्रत्याशियों के पक्ष में जीत हार का आकलन कर रहे थे जो जो मतगणना का दौर बढ़ रहा था यारा राजद व निर्दलीय प्रत्याशी के समर्थकों के बीच हादसा बढ़ती जा रही थी मतगणना कक्ष से लेकर बाहर तक जमे समर्थक हर राउंड के बाद अगले राउंड में जीत का अंतर कम होने की बात करे थे वोट की गिनती का क्रम बढ़ने के साथ ही निर्दलीय प्रत्याशी के समर्थकों में नि□ाशा छा गई समर्थक हार के पूर्व ही मतगणना स्थल से सिरकने लगे उनके समर्थकों में भारी निराशा व्याप्त हो गई सभी एक दूसरे को अपने हार के का□ण की रणनीति के विषय मे अपने हार का कारण बता रहे थे इधर जीत पर पूरे संसदीय क्षेत्र में कटोरिया अमरपुर धोरैया हर क्षेत्र में बांका में खूब अबीर और गुलाल उड़े समर्थकों में एक जबरदस्त उत्साह का माहौल था पहली बार यह दृश्य देखने को का अवसर मिला था कि इतने अधिक मतों से किसी सांसद कोबांका का ताज जनता ने पहनाया है गिरिधारी यादव तीसरी बार सांसद बने इसको लेकर भी एक अलग जश्न का माहौल था।

जीत का प्रमाण पत्र प्राप्त करते गिरधारी यादव

मानसरोवर

राहुल बांका

स्वर्ण शांत चित्त से
दिव्य प्रभा प्रदीप्त हुई,
मनोरमा छा गई
श्वेत सोम वरण लिए ।

मणिकांत चमक उठा
स्वर्ग भी निशांत हुआ,
देव लोग जो आ पड़े
देवत्व के वरण में।

श्वेत कमल खिल उठा
मादकता उदित हुई,
क्षण सुवास से पूर्ण था
वसंत का सृजन हुआ।

वीणा की झंकार से
हृदय नवोदित हो उठा ,
हर कन में नव संचार था
नाद का व्यापार हुआ।

दिव्य छन दिव्य पल
दिव्य से पूर्ण था,
मानस के पटल पर
प्रज्ञा का प्रादुर्भाव था ।

कोटी सूर्य से व्योम में
रवि भी मृदु हुआ ।
सत्य झर रहे थे
शीतल चंद्र पुर्णिमा लिए ।

कृष्ण की मुस्कान से
माया निस्तेज हो गई।
सरल शिव भी अलंकृत हुए
मायापती जो आ गई ।

निष्णात निसप्राण से कण
सत्य रूप प्राण वाण हुए ,
देवत्व का संचार हुआ
सैल भी पूर्ण ऊँकार लिए।

असंख्य श्वेत कमल से
सहस्त्र दिव्य हंश में ,
सहस्त्र दल कमल खिला
मानसरोवर पूर्णता लिए।

श्वेत वर्ण दिव्य प्रभा
त्रिनेत्र पंचवक्त्र दस भुजा ,
छीर रूपी मानस में आ गई
ज्ञान का दिव्य हंस धारण किए ।
छटा बिखर चुकी थी
हर प्राण स्तब्ध थे ,
सांस वाणी छोड़कर
महा मुक्ति प्राण के लिए।।